जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
॥ श्री गणेशाय नमः ॥
श्री हनुमान
उपासना
लेखक
पंडित वाई० एन० झा० ''तूफान
मो0 : 9837019062
जुगल किशोर भीमसैन (बुकसेलर)
धार्मिक पुस्तकें, कर्म काण्ड पुस्तकें
धार्मिक फोटो, सीनरी आदि उपलब्ध है।
पल्टन बाजार, निकट कोतवाली, देहरादून।
प्रकाशक
© 212696
अमित पाकेट बुक्स
ज्ञान मार्किट, नज़दीक चौंक अड्डा टांडा,
जालन्धर-8
मूल्य 80 /-
जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम

लेखक :
पंडित वाई०एन० झा तूफान
टांडा रोड, टोदरी मुहल्ला,
एच०एन० 61, जालन्धर शहर
पिन-144 004

कम्प्यूटर टाईपसैटिंग :
सनशाईन कम्प्यूटर, जालन्धर

प्रकाशक
अमित पाकेट बुक्स
ज्ञान मार्किट, नज़दीक चौंक अड्डा टांडा
जालन्धर-8

विषय सूची

(प्रथम भाग)

(द्वितीय भाग) उपासना खण्ड

(तृतीय भाग) श्री हनुमान पूजन खण्ड

(वैदिक हवन विधि खण्ड)

(स्तोत्र खण्ड)

श्री हनुमान जी का रूप , परिधान, अलंकार, आभूषण व श्रृंगार खण्ड

श्री हनुमान यंत्र-मंत्र सिद्धि खण्ड

श्री हनुमान मंत्र सिद्धि खण्ड

साबर साधना खण्ड

(श्री हनुमान भक्ति गीत खण्ड)

भूमिका

पाठको!

आज की इस विषम परिस्थिति में मनुष्य मात्र के लिए, भगवान हनुमान की उपासना अत्यन्त आवश्यक है। रूद्रावतार भक्त शिरोमीण हनुमान जी बुद्धि-बल-वीर्य प्रदान करके भक्तों की रक्षा तो करते ही हैं-साथ ही साथ अपार धन जन-सुख-सम्पदा व प्रसन्नता भी प्रदान करते हैं। भूत प्रेत, पिशाच, यक्ष, राक्षश आदि उन के नामोच्चारण मात्र से ही भाग जाते हैं और उनके स्मरण मात्र से अनेक असाध्य रोगों का प्रशमन होता है। मानसिक दुर्बलताओं के संघर्ष में उनसे सहायता प्राप्त होती है। गोस्वामी तुलसीदास जी को श्रीराम के दर्शन में उन्हीं से सहायता प्राप्त हुई थी। आज भी जहाँ श्रीराम कथा होती है, वहाँ श्री हनुमान जी अवश्य पहुंचते हैं और मस्तक झुकाकर, रोमाञ्च कण्ठीकत होकर, नेत्रों में प्रेमाश्रु भरकर श्रीराम कथा सादर श्रवण करते हैं। इस प्रकार वे परम भक्तों में अव्यक्त रूप से उपस्थित होकर उनकी भक्ति-भावनाओं का पोषण करते हैं।

आज भी अधिकांश भक्तों को उनके अनुग्रह का प्रसाद मिलता है। अतः उनकी कृपा की उपलब्धि के लिए वेदों शास्त्रों में प्रतिपादित उपासना पद्धति के अनुसार -यह सरल हनुमान उपासना पद्धति आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। उपासन की सही विधि नहीं जानने के कारण अधिकांश उपासक उपासना का फल प्राप्त नहीं कर पातें, इसलिए यह वैदिक उपासना पद्धति का निर्माण किया है, जिससे उपासक हनुमान जी की उपासना से मनवांछित फल प्राप्त कर सकें।

इस परम दिव्य उपासना पद्धति में उपासना की अनेकानेक चमत्कारिक विधियों स्त्रोंतों का वर्णन है। जिसमें मुख्यतः नित्य पूजन विधि, वैदिक वृहद पूजन विधि, भगवान शंकर, महा देवर्षि नारद जी, गोस्वामी तुलसीदास, महाराज सुग्रीव आदि, स्त्रोत, कवच आदि अनेकों महान पुरूषों द्वारा रचित हनुमान उपासना, स्त्रोत, कवच आदि का वर्णन है। इसके साथ ही हनुमान यंत्र-मंत्रों का भी विवरण है, इनके से साबर मंत्रों का भी विवरण है, इनमें से साबर मंत्रों का समस्त उल्लेख अचूक है और स्वयं मेरे द्वारा अनुभव सिद्ध है। इनमें वर्णित सभी साबर मंत्र चम्तकारिक हैं, जिनसे अनेकानेक मानव लाभान्वित हो रहे हैं।

आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि हनूमान भक्तों के लिए यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

इस ग्रन्थ में वर्णित यंत्र-मंत्रों की सिद्धि में हमसे परामर्श प्राप्त करना चाहें या किसी भी समस्यावों से उबरने हेतु यंत्र प्राप्त करना चाहे तो पत्राचार करें। हम आपके सभी पत्रों का उत्तर देने हेतु कृत संकल्प है।

लेखक
पंडित, ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक
वाई. एन. झा "तूफान"
टांडा रोड़, टोबरी महुल्ला, मकान न० 61,
जालन्धर सिटी-144004 (पंजाब)

प्रथम भाग

रूद्रावतार श्री हनुमान जी का परिचय

रूद्रावतार श्री हनुमान जी का "परिचय" लिखना तो सूरज को दीप दिखाने तुल्य ही प्रतीत होगा क्योंकि श्री हनुमान जी साक्षात– "परमेश्वर रूद्र" हैं। उनका रूद्रा रूप में अभिव्य क्रि(परिचय) वेद, उपनिषद, रामायण, पुराण आदि शास्त्रों में यथाप्रसंग निरूपितं है।

गोस्वामी तुलसी दास जी ने भी श्री हनुमान जी की स्तुलि में उनके रूदावतार की और संकेत किया है।

"जयति मंगलावार संसार भारापहर बानराकार विग्रहु पुररि।"

श्री हनुमान के "परब्रह्म स्वरूप" का चिन्तन हमारे पुराणों में अधिकाधिक उपलब्ध होता है। "श्री रामप्रोक्त कवच में प्रसंग के" श्री सनत्कुमार जी (महर्षि) हनुमान जी के सम्बन्ध में वर्णन किए हैं। कि –"वे सब रूपों में अभिव्यक्त हैं, सर्वज्ञ हैं, सृष्टि करते तथा उसका पोषण करते हैं, एवं वे ब्रह्म, विष्णु एवं साक्षात महेश्वर हैं।"

स सर्वरूपः सर्वज्ञ सृष्टि स्थिति करोऽवतु।
स्वयं ब्रह्म स्वयं विष्णु साक्षा देवो महेश्वरः।।
(नारद पुराण, पूर्व, तृतीय पाद 78/24–25)

महाबलशाली असुर "त्रिपुर" नाश के पहले देवताओं ने भगवान शंकर की विभूतियों का वर्णन करते हुए उनके हनुमान रूप का स्मरण किया है–

"आदित्यानां वासुदेवो हनुमान वानरेषु च"
(शिवपुराण, रूद्र संहिता, युद्ध खण्ड–2/51)

श्री हनुमान के परब्रह्म स्वरूप का वर्णन–शुक्ल यजुर्वेदीय तारसारोपनिषद में भी मिलता है। मि ला के राजकीय उपवन राजीर्ष विदेह जनक जी को "परब्रह्म विद्या" का उपदेश देते समय महिर्ष याज्ञ वल्वचने ने कहे हैं–

"ॐ यो ह वै श्री परमात्मा नारायणः स भगवान मकार वाच्यः शिव स्वरूपो हनुमान भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमो नमः।।"

अर्थातः– परब्रह्म नारायण ही शिव स्वरूप हनुमान है, ॐ-परमात्मा नारायण ही रूद्रावतार श्री हनुमान है। (तारसारोपनिषद 3/3)

श्री जाम्बान ने श्रीराम को हनुमान की स्तुति करने की यों प्रेरणा दी–

"देव! रूद्रावतारोऽयं मारूतिः रूद्रस्तुति क्रियताम।"

(हनुमन्नाटक छठा अंक)

भगवान नन्दीश्वर ने महर्षि सनत्कुमार से श्री शंकर जी के हनुमान के रूप में आर्विर्भूत--(प्रकट) होकर लीला करने का वृत्तान्त वर्णन किया है। नन्दीश्वर ने कहा कि मुने! अब हनुमान जी का चरित्र सुनिए, उनके रूप में प्रकट होकर शिव जी ने सुन्दर लीलाएँ की है–

अतः परं श्रृणु प्रीत्या हनुमच्चरितं मुने।
यथा चकाराशु हरो लीलास्तुद्रूपतो वराः।।

(शिव पुराण, शत रूद्रसहिता 20/11)

परब्रह्म रूद्रावातार श्री हनुमान का वृत्तान्त वेद, पुराण, रामायण, तन्त्र, मन्त्र तथा कई अन्यान्य कृतियों में भी उपलब्ध है, अतः श्री हनुमान जी साक्षात रूद्र रूप हैं।

अतुल शक्ति और महान भक्ति के प्रतीक रूदावतार श्री हनुमान जी की पूजा सम्पूर्ण भारत वर्ष में अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक की जाती है। इस आर्य धरा पर ऐसा शायद ही कोई जन–पद महानगर, नगर या गाँव होगा, जहाँ महावीर श्री हनुमान का छोटा–बड़ा मंदिर या प्रतिमा न हो। यहाँ तक कि दुर्गम वन और पर्वतों पर भी पवन पुत्र की प्रतिमा स्थापित की गई है। श्री राम कथा के साथ–साथ श्री भक्त हनुमान की कथा भारत की सीमाओं को लांघकर महासागरों के उस पार सुदूर देशों में भी व्याप्त हो गई है। भगवान श्री राम सम्पूर्ण विश्व के एक महान आदर्श है और हिन्दुओं के तो वे सर्वस्व ही हैं। इसी कारण जहाँ–जहाँ श्री सीता राम का मंदिर है, वहाँ श्री हनुमान जी उनके रक्षक और सेवक के रूप में अवश्य उपस्थित मिलेंगे।

जो भी श्रद्धालु भक्तगण वैदिक पद्धति या अपनी–अपनी मातृ भाषा अथवा लोक शैली में रूद्रावतार श्री महावीर की पूजा उपासना करते है, वे समस्त संकटों से छुटकारा प्राप्त कर, सम्पूर्ण ऐश्वर्यों व सुख सम्पदावों के स्वामी हो जाते हैं और अन्तकाल में मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

माता अञ्जना की उत्पत्ति कथा

स्वर्ग के अधिपति इन्द्र देव की रूप गुण सम्पन्ना अप्सरावों में पुंजि कस्थला नाम की एक अप्सरा थी। पुंजिकस्थला अति सुन्दर होने के साथ–साथ अत्यन्त चंचला भी थी। एक बार वह महर्षि दुर्वासा का उपहास कर बैठी कि तभी महर्षि ने उन्हें अभिशाप दे दिया– सुन्दरी!तूने मुझे बानरी जैसी चंचलता से मेरा उपहास किया है मेरा अपमान किया है अतः मैं तूझे श्राप देता हूँ कि तू बानरी हो जा।

श्रापित पुंजिकस्थला अपने किए हुए घृणात्मक कार्यों की महर्षि से क्षमा याचना करने लगी, रोने गिड़गिड़ाने लगी तो महर्षि जी द्रवित हो गए और बोले–देवी!जितने भी आंसू बहा लो परन्तु अभिशाप से

तुम्हें मुक्ति नहीं मिल सकती है। हाँ इतनी दया मैं कर देता हूँ कि तुम पृथ्वी लोक में जब कुछ क्षण के बाद बानरी योनि में उत्पन्न होगी तो तुम्हें अपना रूप बदलने की अदभुत क्षमता होगी। तू जब चाहेगी सुन्दर नारी बन जाएगी और जब इच्छा होगी तो बानरी बन जायेगी।

महर्षि दुर्वासा से अभिशापित पुंजिकस्थाला कुछ ही क्षणों के बाद पृथ्वी पर वानरराज कुंजर की पुत्री बनकर जन्म लिया, जिनका नाम अंजना पड़ा। देवी अंजना के समान उस समय पृथ्वी पर और अन्य कोई भी नारी रूपवनती नहीं थी। उनका विवाह वानरराज केशरी से सम्पन्न हुआ। कपिराज केशरी कांचन गिरि पर्वत पे निवास करते थे। सभी सुख सुविधावों से प्रसन्न चित्र अंजना कपिराज केशरी के साथ जीवन बिताने लगी। बहुत सयम बीत जाने पर भी जब उन्हें पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ तो वे चिन्तित रहने लगी।

एक दिन पृथ्वी लोक का भ्रमण करते हुए मतंग ऋषि वहां आ पहुंचे, जिनसे माता अंजना ने अपनी चिन्ता बताई। इस पर मंतग ऋषि ने कहा–देवी!तुम बेंकटाचल पर्वत पर जाकर भगवान शंकर की अराधना करो। मुनि का आदेश पाकर देवी अंजना बेकटाचल पर्वत पर पहुंचकर भगवान बेंकटाचल की घोर अराधना व तपस्या में लीन हो गई। भगवान शंकर उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर अंजना के समक्ष प्रकट हुए और वरदान मांगने को कहा–अंजना बोली, हे भोलेनाथ आप अपने समान शक्तिशाली और वायुदेव के समान तीव्र गति से चलने वाला महान तेजस्वी पुत्र प्रदान करें। भगवान शंकर प्रसन्न होकर बोले–देवी!मैं ही तुम्हारा पुत्र–होकर तुम्हें संसार में विख्यात कर दंगा और यह कार्य वायुदेव द्वारा सम्पन्न कराऊंगा। वर प्राप्त करने पर अंजना देवी की प्रसन्नता की सीमा न रही। अपनी प्रियतमा की वर प्राप्ति का संदेश सुनकर कपिराज केशरी भी अति प्रसन्न हो गए।

महावीर हनुमान के शंकर सुपन, पवन-पुत्र और केशरी नंदन नामों का रहस्य

पुराणों और इतिहासों में श्री हनुमच्चरित्र का अनेक रूपों में वर्णन मिलता है श्री हनुमान जी कहीं ''शंकर सुवन''कहीं ''पंवन पुत्र''कहीं ''केशरी नंदन'' कहीं ''आंजनेय'' और कहीं साक्षात शंकर के रूप में वर्णित है। कल्प भेद एवं प्रसंग भेद से ये सभी नाम सत्य है। जिस प्रकार भगवान कृष्ण को प्रसंग भेद से वसुदेव नन्दन, नन्द नंदन, गिरिधारी, रास बिहारी आदि कहा जाता है। वैसे ही राम भक्त श्री हनुमान के विषय में भी समझना चाहिए। श्री हनुमान जी के इन नामों

का सार्थक्य समझाने के लिए कतिपय रहस्यपूर्ण प्रसंगों का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है।

रूद्रावतार श्री हनुमान

एक बार भगवान शंकर भगवती सती के साथ कैलाश पर्वत पर विराजमान थें. प्रसंग वश भगवान शंकर ने सती से कहा–प्रिये! जिनके नामों को रट–रटकर मैं गद्गद् होता रहता हूँ,वे ही मेरे प्रभु अवतार धारण करके संसार में आ रहें है। सभी देवता उनके साथ अवतार ग्रहण करके उनकी सेवा का सुयोग प्राप्त करना चाहते हैं, तब मैं ही उससे वंचित क्यों रहूँ ? मैं भी वही चलूं और उनकी सेवा करके अपनी युग–युग की लालसा पूर्ण करुं।

भगवान शंकर की यह बात सुनकर सती ने सोचकर कहा– प्रभो! भगवान का अवतार इस बार रावण को मारने के लिए हो रहा है। रावण आपका अनन्य भक्त है। यहाँ तक कि उसने अपने सिरों को काट कर आपको समर्पित किया है। ऐसी स्थिति में आप उसको मारने के काम में कैसे सहयोग दे सकते हैं ?

यह सुनकर भगवान शंकर हँसने लगे। उन्होंने कहा–देवी! जैसे रावण ने मेरी भक्ति की है, वैसे ही उसने मेरे एक अंश की अवहेलना भी तो की है। तुम जानती ही हो कि मैं ग्यारह स्वरूपों में रहता हूँ जब उसने अपने दस सिर अर्पित कर मेरी पूजा की थी, तब उसने मेरे एक अंश को बिना पूजा किए ही छोड़ दिया था। अब मैं उसी अंश से उसके विरूद्ध युद्ध करके अपने प्रभु रामावतार श्री विष्णु की सेवा कर सकता हूँ।

''मैंने वायु देवता के द्वारा अंजना के गर्भ से अवतार लेने का निश्चय किया है।''यह सुनकर भगवती सती प्रसन्न हो गई।

इस प्रकार भगवान शंकर ही श्री हनुमान के रूप में अवतरित हुए। इन तथ्यों की पुष्टि पुराणों की आख्यायिकावों से होती हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी दोहावली–(142) में लिखा है–

जेहि शरीर रति राम सों, सोई आदरहि सुजानी।
रूद्रदेह तजि नेहबस, बानर भे हनुमान।।

शंकर सुवन स्वरूप श्री हनुमान

शिव महापुराण में श्री हनुमान जी के अवतार का वृत्तान्त इस प्रकार है–एक समय भगवान शम्भु को भगवान विष्णु के मोहिनी रूप के दर्शन प्राप्त हुए। उस समय ईश्वर इच्छा से राम कार्य की सिद्धि हेतु

उनका वीर्य स्खलित हो गया। उस वीर्य को सप्त ऋषियों ने पत्र–पुट में सुरक्षित करके रख लिया। तत्पश्चात उन्होंने भगवान शिव की प्रेरणा से उस वीर्य को गौतम कन्या अंजना में कान के रास्ते स्थापित किया। समय आने पर उस गर्भ से वानर–शरीरधारी महापराक्रमी पुत्र का जन्म हुआ, जो शंकर सुवन श्री हनुमान के नाम से विश्व में प्रख्यात हुए।

कथान्तर भेद से इसका वर्णन इस प्रकार भी हैं। मोहिनी रूप दर्शन से स्खलित हुए शम्भु वीर्य के विषय में भगवान विष्णु विचार करने लगे कि इस शम्भु–सम्भूत शुक्र का क्या उपयोग किया जाए? कुछ सोच विचार कर विष्णु और शम्भु ने मुनियों का रूप धारण किया और उस वीर्य को पत्र द्रोण में लेकर वन ही वन आगे बढ़े। कुछ दूर जाने पर उन लोगों ने एक कन्या देखी, जो घोर तपस्या मैं निरत थी। वे उनके पास जाकर बोले–तपस्विनी कन्ये!यह क्या कर रही हों? बिना दीक्षा लिए तुम्हारी तपस्या सफल नहीं हो सकती, अतः शीघ्र ही किसी योग्य मुनि से दीक्षा ले लो।.''तपोनिष्ठ कन्या अंजना ने उन दोनों मुनियों की बात सुनकर मन में विचार किया–ये तो सर्वकाल द्रष्टा हैं। मेरे भूतकाल की बात को सत्य–सत्य कह रहे हैं, अतः क्यों न इन्हीं से मन्त्रदीक्षा ले ली जाय। यह सोचकर अंजना बोली–मुनिवर! आप योग्य एवं समर्थ हैं। मैं दीक्षित होने के लिए कहाँ भटकूंगी, आप लोग ही मुझे मन्त्र–दीक्षा दे दें।'' तब मुनि रूपधारी विष्णु ने अंजना को मंत्र दीक्षा दी। दीक्षा देते समय उन्होंने शम्भु वीर्य को मन्त्र से अभिमंत्रित कर वायु के सहारे अंजना के कानों द्वारा उसके गर्भ में स्थापित कर दिया। उस शम्भू शुक्र से उद्धत श्री हनुमान जी अंजना नंदन शंकर सुवन कहलाएं।

श्री हनुमान जी के पवन नाम का रहस्य

अप्सरावों में परम रूपवती पुंजिकस्थला नाम की एक इन्द्रलोक विख्यात अप्सरा थी। इसी ने दुर्वासा ऋषि के शाप से काम रूपिणी बानरी होकर पृथ्वी पर जन्म ग्रहण किया था। वही कपिश्रेष्ठ केशरी की भार्या होकर अंजना नाम से विख्यात हुई। पर्वत श्रेष्ठ सुमेरू पर केशरी राज्य शासन करते थे। अंजना उसकी एक प्रियतमा पत्नी थी। वानरपति केशरी और अंजना दोनों एक दिन मनुष्य का वेष धारण कर पर्वत शिखर पर विहार कर रहें थे। उसी समय पवनदेव ने उन्हें छाया रूप से आलिंगन वद्ध करके शम्भु वीर्य को उनके कानों में प्रवेश करा दिया। साधु चरित्रा अंजना ने आश्चर्य चकित होकर कहा– ''कौन दुरात्मा मेरा पातिव्रत्य–धर्म नष्ट करने को तैयार हुआ है? मैं अभी शाप देकर उसे भस्म कर दूंगी।'' सती साध्वी अंजना की यह

बात सुनकर पवन देव ने कहा देवी! मैंने तुम्हारा पतिव्रता धर्म नष्ट नहीं किया है, यदि तुम्हें कुछ भी संदेह हो तो उसे दूर कर दो। मैंने भगवान शिव की इच्छा से तुम्हारी तपस्या का फल तुम्हें प्रदान किया है। उससे तुम्हें एक पुत्र होगा जो शक्ति व पराक्रम में शिव के समान और मेरे समान तेजस्वी होगा, भगवान का सेवक होगा और बल–बुद्धि में अनुपमेय होगा। मैं उसकी रक्षा करूँगा। इस प्रकार भगवान शंकर ने अंशरूप से वायु का माध्यम लेकर अंजना के गर्भ से पुत्र उत्पन्न किया, जो भविष्य में शंकर सुवन, पवन पुत्र, केशरी नन्दन, अंजनेय आदि कहलाए।

केशरी नंदन महावीर श्री हनुमान ने भगवान सूर्य और देवर्षि नारद जी से दीक्षा ग्रहण किए राम–रावण युद्ध में भगवान श्रीराम का साथ निभाकर, उनकी सेवा करके, उनसे सृष्टि में सदैव अमरता का वरदान प्राप्त किया। शास्त्रों में वर्णित है कि जहाँ भी राम कथा होती है, वहाँ श्री हनुमान किसी न किसी रूप में अवश्य उपस्थित होते हैं और अपने भक्तों को मनोवांछित वर प्रदान करते हैं।

उपासना खण्ड (द्वितीय भाग)

उपासना का शाब्दिक अर्थ

उपासना का शाब्दिक अर्थ है–समीप बैठने का प्रयास। संधिविच्छेद के मुताबिक–उप+ आसना=उपासना। उप=समीपे, आसन=स्थिति–इति उपासना। अर्थात अपने भगवान से इष्ट देव से तल्लीनता का प्रयास।

''कुलार्णव तनत्र'' में उपासना की परिभाषा इस प्रकार दी गई है–

कर्मणा मनशा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा।
समीप सेवा विधिना उपास्तिरिति कथ्यते।।

हिन्दी अनुवादः– सब प्रकार से समीप रह कर सेवा करना ही ''उपासना'' हैं।

श्रीमद भागवत के अनुसारः–

''उपसितो यत्पुरूषः पुराणः–अर्थात–पूर्ण भक्ति से प्रसन्न कर लेना ही–''उपासना''है।

इसी प्रकार भागवत में अन्य स्थानों पर–

त्वतापावार विग्वं भर्वासन्धुषोत्तम।
उपासते कामलवाय तेषां।।

अर्थातः– उपासना शब्द को ''पूजा भक्ति में लीन रहना'' कहा गया है।

इसी प्रकार एक और उदाहरण देखें–

''उपासते योगरथेन धीराः''

इसमें भी उपासना का अर्थ ध्यान ही है।

अर्थातः– इष्ट देव का ध्यान, प्रणाम, नमस्कार, पूजा, जप, होम, भक्ति, दास्य,सुख्य, सामीप्य, सेवा, शुश्रषा परिचर्चा, अराधना, चिन्तन, मनन, आदि सभी क्रियावों को हम– ''उपासना'' कहते हैं।

अब श्री हनुमान उपासना का शाब्दिक अर्थ निकला–भक्त शिरोमणि अनिष्ट विनाशक समस्त कामनादायक श्री हनुमान जी के समीप बैठने का प्रयास करना।

इसे इस प्रकार भी समझ सकते हैं–

जिस अनुपम पवित्र पुस्तक में महावीर श्री हनुमान को प्रसन्न

करने हेतु पूजन, स्तुति, वन्दना की वैदिक व लौकिक विधि वर्णित की गई है। उसे हम–''हनुमान उपासना शास्त्र''कहते हैं।

उपासना क्यों करें?

संसार के सारे धर्म ग्रन्थ अध्यात्म का निष्कर्ष यह है कि उन्हें ढूंढने,पाने और मनन करने का उद्देश्य यह है कि –''मानव अपनी व्यवस्था के अतिरिक्त धन प्राप्त करने की ओर भटक रहा है, परन्तु सम्पूर्ण सुख–साधन प्राप्त होने के पश्चात भी जब उसे ''शान्ति'' नहीं मिलती है तो वह देवी–देवताओं से इसे प्राप्त करना चाहता है, किन्तु उन्हें प्राप्त करना तो आसान नहीं उन्हें प्रसन्न करना भी आसान नहीं। फिर उन्हें प्रसन्न करने हेतु मार्ग ढूंढता है, तब उसे उनकी उपासना–पूजा–अर्चना की आवश्यकता पड़ती है और वही ''उपासना रहस्य''इस छोटी सी अनुपम पुस्तक में छुपी हुई है। इसे जानकर, कार्य रूप देकर, हृदय से नमन–मनन कर आप संसार के उच्चतम शिखर पर पहुंच सकते हैं।

यही है उपासना का रहस्य और यही है उनकी मनोवृत्ति।

उपासना की आवश्यकता

''ईश्वर'' और जीव के बीच में जगत के आ जाने से जीवात्मा को बुद्धि से परमात्मा का सर्म्पक न्यून हो गया है। इस परिवर्तन के कारण जीवत्मा की ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति दोनों संकुचित हो गई है तथा जीवात्मा ईश्वर से दूर चला गया है।

यह जीवात्मा की अल्पज्ञता है। आवरण रूप जगत की विधि रमणीय वस्तुएँ जीवात्मा की इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षित करती है, ज़िसके कारण जीवात्मा को बुद्धि विषय प्रवण मन की अनुगामिनी हो जाती है और जीवात्मा क्लेशों का पात्र बन जांता है।

उपासना से ज्ञान का विकास होता है। जिस क्रिया से जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य में स्थित जगत तिरोहित हो जाता है तथा ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति विकसित होती है। उसी को उपासना कहते हैं। उपासना से भगवत् सानिन्ध्य की प्राप्ति होती है और उसी के फलस्वरूप जीव मुक्त हो जाता है।

जीवात्मा को उचित है कि वह सम्पूर्ण जगत के कारण रक्षक अन्तर्यामी तथा अंशीप्रमात्मा को प्राप्त करे। उपासना के द्वारा जीवात्मा में अन्तः करण की शुद्धि एवं परमात्मा के प्रति प्रेम, विश्वास एवं श्रद्धा की बुद्धि रक्षा का सम्पूर्ण भार परमात्मा पर डाल देता है, जिसके

कारण वह परमात्मा का कृपा पात्र बन जाता है। उपासना से उपासक के चित्र को स्थिरता, सांसारिक विषयों में विमुखता और उसके फलस्वरूप परमात्मा का सामीप्य एवं मुक्ति की प्राप्ति होती है। इसी लिए उपासना करना मानव प्राणी के लिए परम आवश्यक कहा गया है।

उपासना में भावना का महत्व

भक्त शिरोमणि श्री हनुमान की प्रतिमा अथवा तस्वीर के समक्ष विधिवत् पूजन सामग्री स्थूल रूप से अर्पित करते हुए अराधना की जाये अथवा केवल मन्त्रोच्चार कर हुए मानसिक उपासना, महत्व उपादानों(पूजन सामग्री) का नहीं, आपकी भावना की होती है।

श्री राम भक्त हनुमान जी को किसी वस्तु की कमी नहीं है, जो हम उन्हें दे सकते हैं। पूजा अर्चना और अराधना में जो वस्तुएँ देवतावों को अर्पित की जाती हैं। वे भी हमारी भावनाओं का ही दिग्दर्शक होती हैं,जबकि उपसाना में हम केवल भावों का ही पुण्य चढ़ाते हैं।

भक्तों के दुखहर्ता श्री हनुमान की उपासना की जाये अथवा प्रभु की अराधना, जप किया जाए अथवा मूर्ति पूजन, अपने अराध्य की सेवा पूजा और अर्चना अराधना का यह क्षेत्र है, जहाँ हमें अपनी भावना के अनुरूप ही फलों की प्राप्ति होती है। भक्त वत्सल महावीर हनुमान अत्यन्त दयालू हैं, परन्तु हम उन्हें विद्या के द्वारा प्राप्त की गई तर्क शक्ति, बुद्धि धन और बल से प्राप्त नहीं कर सकते। इनके लिए तो हमें अपने हृदय की सम्पूर्ण गहराई के साथ समर्पित भाव से पुकारना, याद करना और नमन करना ही होगा।

उपासना में भावना का प्रभाव और कामना

जो व्यक्ति निष्कपट भाव से प्रभु का स्मरण करते हुए हरि चरणों में मन लगाकर संसार के प्रति अनासक्त रहते हुए कर्म करते हैं, उनके तो सभी कार्य भगवान के प्रति समर्पित होने के कारण स्वयं ही उपासना बन जाती है।

परन्तु भक्ति के प्रथम चरण में ऐसा सम्भव नहीं।

श्री हनुमान जी की उपासना तो प्रायः अनिष्टों की शान्ति, मनोकामनाओं की प्राप्ति के लिए ही अधिक की जाती है, अतः हम ये तो नहीं कह सकते कि आप उनसे कुछ मांगे ही नहीं परन्तु पवनपुत्र की उपासना करते समय उन से यही मांगिए कि आप में सदगुणों का विकास हो, किसी की बुराई, हानि अथवा स्वयं के लिए लौकिक वस्तुओं की मांग करके अपनी उपासना को नष्ट न कीजिए। उपासना

का क्षेत्र तो पूरी तरह से भावना पर ही आधारित है, जबकि संसार में भी व्यक्ति को उसके कर्मों का फल उसकी भावनाओं के अनुरूप ही मिलता है। एक सीधे–सादे उदाहरण द्वारा यह समझने में हमें आसानी रहेगी।

आप्रेशन करने वाला एक शल्य चिकित्सक(डॉक्टर) भी शरीर पर छूरी चलाता है और एक क्रुर हत्यारा भी, परन्तु डाक्टर को धन, यश, सम्मान और पुण्य मिलता है तो हत्यारों को "प्राणदण्ड"। कार्य तो दोनों ने एक ही किया, दोनों के कार्य का माध्यम भी छूरा था और समान रूप से ही व्यक्ति रक्तरंजित भी हुआ।

फिर यह अन्तर क्यों ? एक को पुरस्कार दूसरे को दण्ड, एक को मान–सम्मान दूसरे को अपमान, एक का गुणगान दूसरे से घृणा क्यों ?

क्योंकि दोनों की भावना में अन्तर था। शल्प चिकित्सक की भावना रोग का निदान कर रोगी को रोग मुक्त कर सुखी और संतुष्ट करना था तो हत्यारे की भावना व्यक्ति को असमय काल के गाल में पहुंचाना। यही भावना का फर्क था उन्हें मिलने वाला प्रतिफलों का अन्तर।

ठीक यही अवस्था श्री हनुमान जी की उपासना में है। यदि हमारे भाव दुषित होंगे तो भक्तवत्सल भगवान श्री हनुमान हम पर अनुकम्पा तो क्या करेगे, अधिक संभावना यही है कि हमारी उपासना का हमें कोई फल ही न मिले। यही कारण है कि हृदय की निर्मलता उपासना की प्रथम शर्त है और उसका सबसे आसान उपाय है लोभ और मोह जैसी बुराईयों को छोड़ते हुए अधिक से अधिक धार्मिक साहित्य का सतत् अध्ययन मनन।

हम सांसारिक जीव हैं जो अनेक वस्तुओं के आकांक्षी हैं और प्रायः किसी कामना के वशीभूत होकर ही हम करते हैं। प्रभु की अराधना अथवा उपासना। जो व्यक्ति लोभ, मोह और सांसारिक वस्तुओं की कामनावों पर विजय प्राप्त कर चुके हैं उनका तो प्रत्येक कर्म ही उपासना है। परन्तु हम तो उस मंजिल के राही हैं जहाँ उपासना–अराधना प्रारम्भ होती है, अतः हम कामना रहित हो गए हों, ऐसा तो हो ही नहीं सकता, परन्तु इतना तो कर ही सकते हैं कि दयानिधि भगवान महावीर से कोई सांसारिक वस्तु न मांग कर उनके चरणो में भक्ति की भावना की वृद्धि का ही वरदान बारबार मांगते रहें।

किसी भी सांसारिक कामना चाहे वह साहित्य, संगीत अथवा कला में विशेष योग्यता की प्राप्ति की हो अथवा मान–सम्मान और पुरस्कारों की प्राप्ति की, धन दौलत की आकांक्षा हो या पदोन्नति की कामना मन में रखकर भजन, जप,पूजा–पाठ या अराधना उपासना करना वास्तव में भक्ति नहीं भगवान से की जाने वाली सौदेबाजी हैं।

प्रभु से मांगिए, अवश्य मांगिए, उनसे निरन्तर सद्भावों, ज्ञान

और भक्ति भावना का वरदान। उनसे कहिए–हे प्रभु मैं कभी आपको भूलूं नहीं, आपकी भक्ति मिले और मिले आपका प्रेम। यह मांगना आपका अधिकार ही नहीं कर्तव्य भी है। यही मांगते रहने से भी सांसारिक समस्त सुखों की प्राप्ति स्वतः हो। जाती है, क्योंकि परमात्मा स्वयं जानते हैं कि आपको किसी वस्तुओं की आवश्यता है, वे स्वत पूर्ण कर देते हैं।

उपसाना में दृढ़ निश्चय और श्रद्धा का महत्व

उपासना की शक्ति ही मानव को सर्वस्व विजय प्रदान करती है, किन्तु बहुत कम लोग यह मानते हैं कि–उपासना की नींव केवल, श्रद्धा है और जहां पर श्रद्धा है वहीं पर सिद्धि है।

हर प्राणी के लिए आवश्यक है कि जिस साधन से सिद्धि को प्राप्त करने का आरम्भ करने जा रहा है, उस पर पूर्ण विश्वास रखें, उस पर पूरी आस्था होनी चाहिए जो उपासना का मेरूदण्ड है।

जिसे उपासना में विश्वास नहीं, श्रद्धा नहीं उसे मात्र परीक्षार्थ करना अपना समय नष्ट करना है। इसका कारण मात्र यही है कि ऐसे कार्यों में लाभ की आशा करना मात्र मूर्खता है।

साधना मार्ग का प्रथम सोपान, प्रथम पग की साधना में सम्मिलित नहीं तो फिर कैसी सफलता–कैसी सिद्धि, कैसी विजय। पराज्य, असफलता व असिद्धि मात्र की ही अवश्यमभावी है.

वास्तव में ही आप अपने कार्यों में सफल होना चाहते हैं तो उसके लिए बहुत बड़ी लगन से काम लेना होगा। लगन, तपस्या साधना और उपासना का दूसरा नाम ही सफलता है।

यदि आप सफल होना चाहते हैं, यदि आप भगवान श्री हनुमान जी का कृपा पात्र बनना चाहते हैं तो –''तप''करना होगा, त्याग करना होगा, दृढ़ संकल्प करना होगा, तपस्या करनी होगी। इस कार्य के लिए आपको बार–बार अपने दृढ़ निश्चय को दुहराना होगा, उनको श्रर्द्धा भाव से हृदय में बिठाना होगा, तभी आप भक्त वत्सल प्रभु श्री हनुमान की कृपा प्राप्त कर सकेंगे।

उपासना में सहायक

उपासना के प्रारम्भिक चरण–ज्ञान और इसमें सहायक गुरू स्वाध्याय के अतिरिक्त कुछ यम–नियम आदि भी इस मार्ग में सहायक होते हैं।

संक्षिप्त में शरीर की भीतरी–बाहरी स्वच्छता और सात्विक भोजन,

वाणी द्वारा मधुर हितकारी और सत्य वचन बोलना, मन और इन्द्रियों द्वारा सांसरिक सुख–भोग में संयम उपासक को–आत्मिक आनंद की प्राप्ति में सर्वदा सहायक होते हैं।

इसके अतिरिक्त आत्मिक स्तर पर सहयोगी तत्व है – विश्वास, संकल्प, लग्न और अभ्यास। अर्थात सर्व प्रथम सृष्टि की संचालक शक्ति और उसके स्वरूप (अपने इष्ट देव) पर दृढ़ विश्वास, फिर उपासना मार्ग पर चलने हेतु दृढ़ निश्चय जरूरी है।

दृढ़ निश्चय या संकल्प से प्रेरित होती है–''लगन,''अर्थात् अथक प्रयास और अन्ततः अभ्यास से प्राप्त होती है सिद्धि जो मनुष्य और समाज के चरमआनन्द से ओत–प्रोत हो जाने की अवस्था है।

वैदिक साहित्य और इस्मामी, यहूदी, पारसी, ईसाई आदि सम्प्रदायों में उपलब्ध स्वर्ग की परिकल्पना अथवा उपनिषदों और उनसे प्रेरित जैन, बौद्ध आदि संप्रदायों में प्रतिपादित मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण आदि सभी का लक्ष्य एक है। वही चरम शास्तव निर्विकल्प, आत्मिक आनन्द जो सृष्टि के प्रारम्भ से, मनुष्य की आदिम खोज है और जिसका सहज मार्ग है–''उपासना''।

''उपासना'' जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य की कड़ी

आनंद की लालसा और सम्पत्ति अर्जण की अन्धी दौड़ ने आज मानव को पशुवत बनाकर रख दिया है। मानसिक शान्ति, परस्पर मधुर सम्बन्ध और भाईचारा आज बीते युग की बात बनकर रह गयी है और इसका एकमात्र कारण है–''भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति की अन्धी असीम आकांक्षा''।

तन मन में सभी क्लेशों और संतापों, समाज में हिंसा एवं अनाचार तथा व्यक्तिगत विदेश एवं असंतोष का मूल कारण धन के प्रति–यह अन्धी दौड़ ही है। मानव जितना भी दौड़ लगा रहा है, विनाश की ओर जा रहा है, बुद्धिहीन हो गया है।

अतः इससे बचने के लिये इन सभी समस्यावों का समाधान है पर ब्रह्म परमेश्वर के किसी भी रूप–स्वरूप, अवतार अथवा देवि–देवता की–''उपासना''।

''उपासना से''– ज्ञान का विकास होता है। उपासना से जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य में स्थित जगत की माया तिरोहित हो जाती है। तथा ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति विकसित होती है। उपासना से भगवत् सानिन्ध्य की प्राप्ति होती है और इस कलिकाल में उपासना के ही सर्वदुख भंजक एवं अराधना का सर्वश्रेष्ठ और आसान माध्यम

कहा गया है, क्योंकि उपासना के द्वारा जीवात्मा के अन्तः करण की शुद्धि एवं उपाव्यदेव के प्रति प्रेम, विश्वास एवं श्रद्धा की वृद्धि होती है।

उपासना के द्वारा उपासक अपनी रक्षा का सम्पूर्ण भार अपने अराध्यदेव और उसके माध्यम से ''परमात्मा''पर डाल देता है, जिससे यह प्रमात्मा का कृपा पात्र तो बन ही जाता है, जीवन के अधिकांश तनावों और चिन्ताओं से भी छुटकारा मिल जाता है और इस प्रकार एक अलौकिक शान्ति और मानसिक संतुष्टि की प्राप्ति होती है– उपासक को।

जहाँ तक श्री हनुमान जी की उपसाना का प्रश्न है, वे तो हैं दया के सागर, राम नाम रटने पर तुरन्त प्रसन्न होकर सर्वस्वभौतिक और अलौकिक वस्तुएँ प्रदान करने वाले, जिसे पाकर मानव प्राणी सर्वस्व प्राप्त कर लेता है और अन्त समय में मोक्ष को प्राप्त करता है। जरूरत है नित्य स्तुति, बन्दना, पूजना, और उपासना द्वारा भक्तवत्सल श्री हनुमान को रिझाने की।

एकाग्र मन का उपासना पर प्रभाव

खेल–तमाशों सांसारिक कर्मों में मानव का मन तुरन्त लग जाता है परन्तु उपासना, भजन, पूजन, कीर्तन आदि में प्रारम्भ में कुछ दिनों तक मन नहीं जमता, चित्र चंचल बना रहता है। कई बार तो उकताहट और घबराहट जैसी होती है, परन्तु यह स्थिति चन्द दिन ही रहती है।

शुरू–शुरू में तो बालक को स्कूल में तथा नववधु को ससुराल में घबराहट होती है, परन्तु कुछ समय बाद ही बालक का स्कूल में और वधू का पतिगृह में न केवल मन लगने लगता है। बल्कि उन्हें वहाँ पूर्ण आनंद भी आने लगता है।

ठीक यही स्थिति अराधना, उपासना और भगवत् भक्ति की है। प्रारम्भ में कुछ दिनों तक ही अराधना उपासना में मन नहीं लगता, परन्तु कुछ समय बाद ही उपासना में भी समान ही सच्चा आनन्द आने लगता है।

यदि प्रारम्भ में मन नहीं लगता तो–भक्त और भगवान के रक्षक, परमात्मा श्री राम के भक्त शिरोमणि सेवक महावीर श्री हनुमान जी की आकृति के समक्ष सच्चे हृदय से रोईये–गिड़गिड़ाइये और प्रार्थना कीजिए हे प्रभु!मैं तुम्हारी मूर्ख सन्तान हूँ, निपट अनाडी हूँ, परन्तु मैं क्या करूँ ? हे दयालू महावीर हनुमान, हम पर कृपा करे, अपने चरणों में मेरा मन लगावें, हमें अपनी भक्ति दें।

दयालू श्री हनुमान को भक्त की इस पुकार को सुनना हो पड़ेगा, क्योंकि हमारे ही नहीं सम्पूर्ण जीवों के पिता तुल्य हैं। हम उनसे विमुख

हो सकते हैं परन्तु वे हमसे विमुख नहीं हो सकते। पिता के समक्ष पुत्र कुछ भी मांग सकता है। फिर हम तो पिता श्री से उनके प्रेम की भिक्षा ही मांग रहें हैं, अतः शर्म या झिझक कैसी ? जितना अधिक मांग सकते हैं, मांगिए प्रभु से प्रेम, दया और भक्तिभाव की भिक्षा।

उपासना का प्रदर्शन सफलता में बाधक

भक्तों पर सब कुछ लुटाने वाले, समस्त कामना प्रदान करने वाले कृपालु श्री हनुमान जी की कृपा प्राप्ति के लिए आप एकान्त स्थान में, शान्त मन से प्रभु की अराधना उपासना करें।

अराधना–उपासना, पूजा,पाठ, जप, तप अथवा भक्ति का कोई भी मार्ग अपनाया जाए, यदि उसका प्रदर्शन हो जाता है तो पुण्य फलों में न केवल न्युनता आ जाती है। बल्कि बड़ी सीमा तक उसका लोप भी हो जाता है।

अराधना–उपासना न तो बिक्री की वस्तु है और न ही प्रदर्शन की। उपासना का थोथा प्रदर्शन आपको समाज में सम्मान और आत्म प्रदर्शन का थोथा सुख और स्वयं को विशिष्ठ समझने का झूठे गर्व तो दिला सकता है, परन्तु दयालू हनुमान या परम पिता परमेश्वर का सच्चा प्यार और कृपाएँ नहीं।

प्रभु हमारे हैं और हम उनके पुत्र, फिर पिता–पुत्र के बीच में अन्यों का क्या काम ? इस लिए जहाँ तक हो सके एकान्त में ही श्री हनुमान जी की पूजा, ध्यान, भजन और उपासना कीजिए।

भक्ति का प्रदर्शन किस प्रकार भक्तों को कष्ट में डाल देता है, इसके हजारों जीवांन्त उदाहरण हमारे धार्मिक ग्रन्थों में मिलते हैं। भक्तराज प्रहलाद और भक्त ध्रुव को बचपन से ही वर्षों तक कठोर तपस्याएं करनी पड़ी, तब जाकर उन्हें कहीं भगवान के दर्शन हुए, क्योंकि उनकी भक्ति का सम्पूर्ण समाज को ही पता लग गया था। इसके विपरीत महाराज रावण का भाई विभीषण प्रातः काल उठते समय ही चन्दक्षणों के लिए ईश्वर का सुमिरन करता था, परन्तु रावण तो क्या उसकी पत्नी तक से छुपी हुई थी उसकी–''भक्ति''। यह विभीषण की छिपी हुई भक्ति का ही कमाल था कि ध्रुव और प्रहलाद की अपेक्षा सौवें अंश से भी कम समय तक अराधना करने पर ही न केवल उसे भगवान राम का सानिन्धय प्राप्त हुआ बल्कि इस लोक में लंका का राज्य और परलोक में विष्णु के लोक में वास भी मिला।

इसलिए भगवान हनुमान जी की दया पाने के लिए, कामनावों की

प्राप्ति के लिए, अनिष्ट ग्रहों से निवारण के लिए, धन,जनसुख सम्पदा प्राप्ति के लिए उपासना नियमित रूप से अवश्य कीजिए परन्तु उपासना का प्रदर्शन मत किजिए, तो आप जो भी चाहेंगे प्राप्त कर लेंगें।

उपासक की योग्यता

उपासकों के लिए लक्षण निर्देश करते हुए शास्त्रों में कहा है कि उपासक को शीलवान, विनम्र, निश्छल, श्रद्धालु, धैर्यवान, शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, कार्य सक्षम, सच्चरित्र, इन्द्रिय संयमी और कुल प्रतीष्ठा का पोषक होना चाहिए.

यह तो स्वयं सिद्ध है कि यदि कोई उपासक गुणों से रहित है तो वह श्रद्धा विधान पूर्वक स्थिर चित्त होकर न तो उपासना कर सकता है और न ही उसे कोई लाभ ही मिल सकता। उपासना में सफलता का पात्र वही होता है, जो विधि विधान और पूर्ण मनोयोगि के साथ उपासना पूरी कर सके।

उपासना का स्थान

अनिष्ट विनाशक सुख दाता श्री हनुमान की उपासना के पूर्व उपासना का स्थान कैसा है, उसे भली भांति समझ लेना चाहिए। जहाँ भी पायें, बैठकर उपासना करने लगें, ऐसा ठीक नहीं क्योंकि उपासना करते समय उपासक बाह्य रूप से कोई कर्म नहीं कर रहा होता, वह निश्चय बैठा रहता है, इसलिए कि उपासना पूर्णरूपेण मानसिक क्रिया है कोई भी मानसिक क्रिया–ऐसा कार्य जिससे आप हृदय की सम्पूर्ण गहराई से जुड़कर अपने तन–मन–सुध तक भूल जाए–भीड़–भाड़ में हो ही नहीं सकती चाहे वह गम्भीर विषयों का अध्ययन हो या आध्यात्मिक चिन्तन–मनन। अतः उपासना विशिष्ठ स्थान पर ही किया जाए तभी लाभप्रद होता है।

प्राचीन शास्त्रों में उपासना ग्रन्थ का निर्देश है कि –काशी, प्रयाग जैसे तीर्थों अथवा गंगा तट पर, या कोई वाटिका, पार्क और खेत एव खलिहानों में बताया गया है। अतंतः इसके लिए अपने निवास का शुद्ध साफ कमरा को भी माना गया है, जहां मानव एकान्त बैठकर उपासना कर सकता है।

उपासना के दस कर्म

भगवान विष्णु के अंशावतार महर्षि वेद्व्यास जी ने उपासना के अन्तर्गत दस कर्म बतलाए हैं, इनमें से किसी भी एक कर्म द्वारा आप उपासना कर सकते हैं, इन दस कर्मों में से समस्त कर्म करने की कोई आवश्यकता नहीं, एक कर्म करने से भी आप अपनी उपासना सफल बना सकते हैं। ये कर्म हैं–मूर्ति पूजा, इष्टदेवन नाम का जप, स्त्रोतों का पाठ, शतनाम पाठ, सहस्त्र नाम पाठ, स्त्रोतों एवं भजनों का गायन इष्टदेव के विधि चरित्रों व कार्य कलापों का पठन–पाठन और श्रवण–मनन, अराध्य देव से सम्बन्धित यन्त्रों–मन्त्रों का विधि–विधान से पूजन, अराध्य देवी या देवता के प्रति आत्म सर्म्पण, अराध्य को प्रणाम एवं वन्दना, प्रदक्षिण अर्थात परिक्रमा करना तथा विशेष अवसरों पर उत्सवभिषेक करना।

नित्य नियम उपासना का फल

कोई भी कर्म हो, नियम पूर्वक निरन्तर करने से ही उसमें सफलता प्राप्त होती है। वर्ष भर नियमपूर्वक बिना क्रम तोड़े पढ़ने वाला विद्यार्थी ही प्रथम श्रेणी प्राप्त करता है।

ठीक यही दशा पूजा, अराधना और उपासना की है। निश्चित समय पर नित्य उपासना करने से ही वांछित फलों की प्राप्ति होती है। जबकि प्रमाद और आलस्य पुण्य फलों में तो कमी कर ही देता है, बार–बार का यह प्रमाद उपासना को खंडित भी कर देता है, और फिर हमारा ध्यान उपासना तो क्या सामान्य पूजा–पाठ में भी नहीं लगता है।

जहाँ तक उपासना में लगाएं जाने वाले समय का प्रन है, जितना नियम है उतनी अराधना उपासना तो प्रतिदिन कम से कम निश्चित समय पर अवश्य कीजिए ही, जितना अधिक ही जाये उतना हो अच्छा है नियम कम से कम के लिए होता है। अधिक कतम की कोई सीमा नही।

क्या धन से किसी का मन भरा है ? पांच वाला पचास के लिए, लाख वाला करोड़ के लिए सतत् चेष्टा करता रहता है, कभी उसे संतोष नहीं होता। जब संसार के इस नाशवान धन से हम नहीं उकताते, सदैव अधिक की कामना करते रहते हैं। तब प्रभु के उस असीम धन को ही सीमा में कैसे बांध सकते हैं।

जितने अधिक समय तक प्रमात्मा का चिन्नत–मनन, ध्यान, अराधना और उपासना हो जाये, उतना ही कम है। परन्तु इसमें एक दिन का भी व्यवधान नहीं पड़ना चाहिए।

यह सत्य है कि परम कृपालु परमात्मा हमारे दोषों को क्षमा कर देते हैं, वे उपासना में की गई लापर वाही और प्रमाद के लिए हमें दंडित नहीं करते, परन्तु उससे भी बड़ा सत्य यह है कि परमेश्वर कभी भी अपने भक्तों का बुरा सोचते ही नहीं।

श्री हनुमान जी की उपासना विधि

1. पुराणों से ज्ञात होता है कि हनुमान जी पवन देव के पुत्र और रूद्र के अवतार हैं। दैवी दानवी और मानवी सृष्टि में इनका मान और महत्व सर्वोच्य है। जिस समय इन्होंने जन्म लिया, उसी समय ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यम–कुवेर–वरूण–अग्नि, वायु इन्द्रादि ने इन्हें अजर–अमर बना दिया था और अनेक प्रकार से वर भी दिये थे।

2. जिस प्रकार ध्यान, धारणा और समाधि के प्रभाव से रूद्रादिका सर्वाधिक सम्मान है, उसी प्रकार हनुमान जी अखण्ड ब्रह्मचर्य के पालन से अधिक पूजित एवं प्रसिद्ध हुए हैं, और इसी कारण इनकी उपासना सर्वत्र होती है।

3. पुराणों और रामायणों में अनेक स्थानों पर इनके अद्भुत चरित्रों का वर्णन आया है। धर्मशास्त्रों में इनकी सेवा–पूजा और स्त्रोत पाठादिका महान फल बतलाया गया है तथा अराधना के ग्रन्थों में इनकी सेवा–पूजा और स्त्रोत पाठादिका महान फल बतलाया गया है तथा अराधना के ग्रन्थों में इन की उपासना के लोकोत्तर फल देने वाले विधान हैं।

4. उपासक लोग अपनी भावना के अनुसार हनुमान जी को वीर और दास– दोनों रूपों में मानते हैं और विपत्तियों के विनाशार्थ वीर रूप की तथा सुख लाभार्थ दास रूप की अराधना करते हैं। शास्त्रों में दोनों के ध्यान और विधान है तथा वीर के लिए राजस और दास के लिए सात्विक उपचारों का उल्लेख है।

5. वास्तव में हनुमान जी के समुद्र के लाँघने, सुरसा, लंकिनी और अक्षदि का क्षय करने, लंका जलाने, रावणादिक तिरस्कार करने और आपहृत हुए श्री राम लक्ष्मण को पाताल से लाने आदि में स्र्वोत्कृष्ट वीरत्व और स्वामी की सेवा तथा भक्तों की अभिष्ट सिद्धि आदि में सर्वादिक दासत्व दरसाया है, इस लिए ऐसे सर्वोत्त्म देव की उपासना अवश्य ही हित कारिणी होती है।

6. पूजा–पञ्चोपचार, दशोपचार आदि उपचारों का उपयोग

कामना के अनुसार किया जाता है। विशेषता यह है कि जो उपचार आरम्भ हो , उसी को समाप्ति तक रखना चहिए। अधिकांश उपासक शीघ्रता मे पञ्चोपचार, अवकाश में षोड़शोपचार, अनुपलब्धि में मानषोपचार और स्वार्थ सिद्धि में राज़ोपचार से पूजा करते हैं, परन्तु ऐसा करने में क्रम में व्यत्तकर–विलोम होना सम्भव है।

7. अराधना के सभी ग्रन्थों में ''षोड़षोपचार पूजा का उल्लेख है– इससे'' 1. आवाहन 2. आसन 3. पाद्य 4. अर्ध्य 5. आचमन 6. स्नान 7. वस्त्र(यज्ञोपवीत) 8. चन्दन (गन्ध) 9. अक्षत (चावल) 10 पुष्प 11. सिन्दूर 12. धूप, दीप 13. नैवेद्य 14. पुनाराचमन 15. ताम्बूल (पान) 16. दक्षिणा–प्रदक्षिणा या नीराजन किया जाता है। पूजा पद्दति में इन सबके विधान हैं, उन्हीं के अनुसार पूजन करना चाहिए।

8. पूजन में और हनुमान जी को स्नान कराने हेतु कूप का जल या गंगाजल का प्रयोग करना चाहिए। उत्सव आदि में दूध, दही, घी, मधु और चीनी के पंचामृति मे स्नान कराकर फिर गंगाजल से स्नान कराना चाहिए। उबटन की जगह तिल के तेल में मिले हुए सिन्दूर का हनुमान जी की प्रतिमा को लोप किया जाना चाहिए। इससे हनुमान जी अति प्रसन्न होते हैं।

9. गन्ध में शुद्ध केशर के साथ घिसा हुआ मलयागिरी चन्दन का उपयोग करे या लाल चन्दन का पुष्प लाल और पीले रंग का उपयोग करें।

10. नैवेद्यः– प्रातःपूजन में गुड़, नारियल की गोल, मिठाईयाँ। मध्याहं काल(दोपहर) में गुड़, घी और गेहू की रोटी का चूरमा या मीठा रोट और रात्रि में आम, अमरूद या केला आदि अर्पण करना चाहिए। चूरमा प्रति दिन न हो सके तो मंगलवार को अवश्य बनाएँ और उसी प्रसाद का भोजन करके एक भुक्त ''मौम व्रत'' करे, अर्थात मंगलवार को एक समय शाम के वक्त चूरमा प्रसाद ही केवल भोजन करें। यदि मौन रहकर बाँए हाथ से यह प्रसाद भोजन किया जाए तो साधक ''ऋृणमुक्त'' हो जाता है।

11. निराजनः– देसी घी में भीगी हुई एक या पांच बत्तियां जलाकर आरती करनी चाहिए। पर्वोत्सव या महापूजा में 5.11.50. या 108 बत्तियाँ जगाकर आरती करनी चाहिए। उस अवसर पर शंख, घंटे, रणसिंगा, विजय, घंटे और नगारा आदि की ध्वनि हो तो और भी अच्छा है। प्रायः सभी देव मंदिरों में चरणामृत वितरण किया जाता है। सम्भवतः रूद्रावतार होने से हनुमान जी के चरणामृत का

प्रचार कम है, परन्तु उपासक के लिए, उपास्य का चरणोदक त्याज्य नहीं माना जाता।

12. पूजन के पश्चात उपास्यदेव का जप किया जाता है। उसके तीन प्रकार है। वाचित, उपांशु और मानसिक। इनमें जिसका उच्चारण दूसरों को सुनाई दें, वह वाचिक, जिसमें जीभ और होंट हिलता रहें किन्तु उच्चारण सुनाई न दें, यह उपांस और होंठ बंद रहे–जीभ चिपका रहे और जप मन से होता रहे उसे''मानस'' जप कहते है। इनमें ''मानस जप'' के साथ आराध्य देव का ध्यान करना आवश्यक है।

13. हनुमान जी की जिस मूर्ति के रखने से चित्त आकर्षित हो, उसे अनेक बार देखकर ऐसा अभ्यास कर लेना चाहिए कि नेत्र बंद करने पर भी वह स्वरूप यथावत् दिखता रहे। इस प्रकार वहाय मूर्तियों को हृदयंगम करके जप करते समय अन्तर्दशन करते रहना चाहिए और जप मणियों की माला, रूद्राक्ष माला से करना चाहिए।

14. इस प्रकार जप, पूजन ध्यान की त्रिवेणी में उपस्थित होकर उपासना करने से तामस, राजस और सात्विक सभी उपासनाएँ शीघ्र सफल होती हैं और फिर अकेले हनुमान जी ही नहीं, अपितु वे और उनके स्वामी–दोनों प्रत्यक्ष होकर उपासक के समीप बैठकर भक्तों के भक्ति का आनंद प्राप्त करते हैं।

तृतीय भाग
श्री हनुमान पूजन खण्ड

शनि का अनिष्ट निवारण हेतु नित्य पूजन विधि

निष्काम भाव से नित्य ही हनुमान उपासना करने वाले उपासक को चाहिए कि वे ब्रह्म मुहुर्त्त में निद्रा को त्यागे। शौचादि से निवृत हो स्नान करके पवित्र हो जाएं, फिर पूरब की तरफ मुख करके हनुमान जी की प्रतिमा के सामने या तस्वीर के समक्ष समस्त पूजन सामग्री एकत्रित कर लें। लाल कम्बल के आसन पर बैठ जाएं। धूप दीप जगावें, फिर एकाग्रचित्त मन से पूजन आरम्भ करें। हनुमान जी की प्रतिमा या तस्वीर आम लकड़ी से बने या लाल चन्दन की लकड़ी से बने सिंहासन पर स्थापित करें। सिंहासन सिन्दूरी रंग से रंगा होना चाहिए। पूजन के समय लाल वस्त्र धारण करें या लाल रंग का तौलिया अथवा रूमाल सिर पे अवश्य रख लें।

नित्य पूजन सामग्री

श्री हनुमान जी की प्रतिमा या तस्वीर, आम लकड़ी या लाल चन्दन लकड़ी से बना सिन्दूरी रंग का सिंहासन, सिंहासन पर बिछाने हेतु लाल वस्त्र, चौमुखी दीपक, रूई, देसी घी, सिन्दूर, धूप, अगरबत्ती, लाल चन्दन, गंगाजल, पान सुपारी, नैवेद्य, विल्वपत्र, यज्ञोपवीत, लाल पुष्प, या पीले पुष्प की माला, कपूर, माचिस, पहनने हेतु लाल वस्त्र या तौलिया अथवा रूमाल इत्यादि।

नित्य श्री हनुमान पूजन आरम्भ

आइये, अब हम नित्य हनुमान जी की पूजा प्रारम्भ करें:– लाल कम्बल के आसन पर बैठ जाएं, पूरब मुख होकर बैठें और सामने सिंहासन पर लाल वस्त्र बिछाकर हनुमान जी की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करें। धूप जगावें। तत् पश्चात् दाहिने हाथ की अंजुली में गंगा

जल लेकर नीचे लिखित मंत्र को पढ़े। मंत्र समाप्त होते ही अंजुली का जल शरीर पे छिड़क लें:–

पवित्र होने का मंत्र

हे गंगाजल अमृत बन, मेरे तन–मन करो पवित्र।
शंकर सुवन–केशरी नंदन, बन जाएं मेरे मित्र।।
मन दे ऐसी भावना, हे गंगा के नीर।
हो रोम–रोम हनुमानमय, कंचन होवे शरीर।।

नोटः–मंत्रोच्चारण समाप्त होते ही अंजुली का जल अपने शरीर पर छिड़क लें, तत्पश्चात् कर जोड़ कर गण नायक श्री गणेश की वन्दना करें। क्योंकि किसी भी पूजन के प्रारम्भ में सर्व प्रथम श्री गणेश पूजन न करें तो उपासना सफल नहीं होती। अतः आत्मशुद्धि के बाद गणेश जी की स्तुति करें:–

श्री गणेश अराधना मंत्र

कृपा करें गणनाथ प्रभु, शुभता करदें साथ।
ऋद्धि–सिद्धि शुभ लाभ जी, सब है तेरो हाथ ।।
सर्व सिद्धि मेरे साथ करें, हे गणपति भगवान।
पूर्ण करें जी कामना, हैं बारंबार प्रणाम।।

नोटः–इसके बाद दाहिनी हथेली पर गंगाजल, अक्षत, पुष्प, चन्दन, सिन्दूर, नैवेद्य आदि वस्तुएँ लेकर नीचे लिखित मंत्र का उच्चारण करें और मंत्र समाप्ति के बाद हाथ की वस्तुएँ हनुमान जी के सिंहासन पर समर्पित कर दें।

श्री गणेश सामग्री समर्पण मंत्र

जल–अक्षत–चन्दन पुष्प से, तुझको प्रभु रिझाता हूँ।
नैवेद्य दुर्बादल सिन्दूर से, अपना विनय सुनाता हूँ।।
कैसे पूजन मैं करूँ? न पूजन का सामान।
हृदय समर्पित करता हूँ, पूर्ण करो अरमान।।

नोटः– अब पुनः गंगाजल दाहिनी अंजुली में लेकर नीचे लिखित मंत्र पढ़े तथा मंत्र समाप्ति के पश्चात् अंजुली जल श्री हनुमान जी के सिंहासन पर सिक्त (छिड़क) कर दें।

आसन शुद्धि मंत्र

हे अंजुली जल बन त्रिवेणी, प्रभु आसन करो पवित्र।
होंगे विराजित महावीर जी, संग में सारे इष्ट।।

आसन प्रभु पवित्र करूं, होवें विराजमान।
पास मेरी एक भावना, पूजन का सामान।।
दीन हीन पर दया करो, अञ्जनी सुत महावीर।
सर्वसुखों का साधन दो , मन न रहे अधीर।।

नोट :—इसके पश्चात् करबद्ध होकर प्रार्थना करें।

प्रार्थना मंत्र

नित्य करूँ मैं उपासना, हे पवन पुत्र हनुमान।
धन जन भक्ति दें मुझे, सफल करें सब काम।।
करवद्ध करूँ मैं प्रार्थना, दे जग में सम्मान।
पार करूँ भवसागर को, दीजौ शक्ति महान।।

नोटः—इसके पश्चात् गंगाजल से श्री हनुमान जी को स्नान करावें। इस क्रम में अंजुली में गंगाजल लेकर निम्न मंत्र पढ़े फिर मंत्र समाप्ति के बाद अंजुली का जल हनुमान जी के मस्तक पर समर्पित करें—

स्नान मंत्र

गंगा की यो पावन जल, अमृत रूप समान।।
उस जल से मैं हे कपिवर, करा रहे स्नान।।
अपना तन वो मन मेरा, प्रभु जी करो पवित्र।
भक्ति हमको दान दें, तुम्हीं हो मेरे इष्ट।।

नोटः—इसके बाद हनुमान जी के चरणों में अक्षत(चावल) समर्पित करें:—

अक्षत समर्पण मंत्र

शक्ति और सामर्थ्य नहीं, तण्डुल अर्पित करता हूँ।
महावीर जी तेरे चरण में, स्नेह समर्पित करता हूँ।।
श्रीराम—सिया के संग लिए, सदा विराजें द्वार।
निर्वल की सुन याचना, हे कपिराज कुमार।।

नोटः—अब श्री हनुमान जी प्रतिमा के मस्तक पर लाल चन्दन लेप करें चन्दन लेप करते समय नीचे लिखित मंत्र का उच्चारण करें:—

चन्दन लेपन मंत्र

मेरे हृदय में सदा विराजें, चन्दन तुझे चढाऊँ मैं।
नेह लगाकर तेरे चरणों में, पुलकित हो लिपटाऊँ मैं।।
कराइये प्रभु अधम से, मस्तक चन्दन लेप।

क्यों बालक से रूष्ट है, नैन खोलकर देख।।
भवसागर में डूब रहा, हनुमत सुनो पुकार।
जीवन नैया पार करो, बनके–खेवन हार।।
नोटः– अब हनुमान जी के मस्तक पे विल्वपत्र चढ़ावें:–

विल्वपत्र समर्पण मंत्र

शम्भु प्यारा विल्व पत्र, करें प्रभु स्वीकार।
भक्ति भर दें रोम–रोम में, मांग रहा हूँ प्यार।।
ग्रह अनिष्ट को नाश करें, हे अंजनी कुमार।
धन–जन सुख सम्पत्ति से, भरे प्रभु भंडार।।
नोटः–अब पुष्प समर्पित करें।

पुष्प समर्पण मंत्र

पुष्पों की पंखुड़ियों से, अपना स्नेह जताता हूँ।
सफल करो सब कामना, नित्य ही विनय सुनाता हूँ।।
मेरा मस्तक कमल समझके, अपने चरण विराजो जी।
रौशन कर दो सारे जग में, विद्या बुद्धि पाऊँ जी।।
नोटः– इसके बाद हनुमान जी को सिंदूर चढ़ावें।

सिन्दूर समर्पण मंत्र

सिन्दूर से प्रभु आपका, करता हूँ सम्मान।
भक्ति की शक्ति मिले, मांग रहा वरदान ।।
धन–जन दें प्रभु कामना, हे जग के करतार।
मैं बालक अज्ञान हूँ, चमका दें संसार।।

पुष्पमाला समर्पण मंत्र

नोटः–अब नीचे लिखित मंत्र से हनुमान जी को पुष्पमाला समर्पित करें।

इन पुष्पों की पंखड़ियों में, छिपा है हृदय पराग मेरा।
श्रद्धा सुमन समर्पित करते, जगादें कपिवर भाग्य मेरा।।
भक्ति ऐसी दें हमें, युग–युग नहीं भुलाऊँ मैं।
जब भी देखूँ जहाँ भी देखूँ, एक तुम्हीं को पाऊँ मैं।।
हर कष्टों को दूर करें, हे पवन पुत्र हनुमान।
धन–जन से परिपूर्ण करें, है बारंबार प्रणाम।।

सुगन्धित धूप समर्पण मंत्र

मन को प्रभु हर्षित करने, धूप करे स्वीकार।
सबको तूने तारे प्रभु जी, हमको भी अब तार।।
शक्ति सकल मनोरथ दें, पूरण कर सब का।
तुझे महावीर जी मेरा, बारंबार प्रणाम।।

नोटः—इसके पश्चात दीप दिखावें (प्रज्जवलित दीप) और नीचेलिखित मंत्र को पढ़ेः—

प्रज्जवलित दीप समर्पण मंत्र

दीपक की लौ से प्रभु जी, भेज रहा संदेश।
विनय सुनो कपिश्रेष्ठ मेरा,पूरा करो उदेश।।
तुम बिनु मेरा जीवन है, कीट पतंग समान।
हर्षित होके बालक का, पूर्ण करें अरमान।।

नोटः—अब श्री हनुमान जी को गुड़ या मिठाइयों का प्रसाद समर्पित करें।

नैवेद्य समर्पण मंत्र

भक्ष्य पदारथ मधुर भोज्य, करो प्रभु स्वीकार।
और नहीं कुछ पास में, करें प्रभु उद्धार।।
कृपा करो अनाथ पे, करदो हमें सनाषथ।
हृदय विराजो हे कपिवर, संग रहें रघुनाथ।।

नोटः—अब दोनों हाथों की अंजुली में पुष्प भरकर ठेहने के बल बैठ कर या खड़े होकर नीचे लिखित प्रार्थना करें। प्रार्थना समाप्त होने के बाद अंजुली का पुष्प हनुमान जी के चरणों में समर्पित कर दें।

पुष्पांजलि प्रार्थना

विनय करूँ बजरंगी बाबा,
जीवन मेरा संवार।
बाबा तार–तार–तार,
बाबा तार–तार–तार।।3।।

बाह्या से कहदो बजरंगी,
सीने न लिपटाए।
कहो निराशा से वो हमसे।।
दिल से कहदो दरिद्रता से,

करे न हमसे प्यार।
बाबा तार–तार–तार,
बाबा तार–तार–तार ।।2 ।।

दारूण दुख ने केशरी नंदन,
जियरा मेरा जलाए।
डूबा गम के सागर दिल की,
ज्योति बुझती जाए।।
चिन्ता ने नित ही लटकाएं,
गर्दन पे तलबार।
बाबा तार–तार–तार,
बाबा तार–तार–तार ।।3 ।।

लक्ष्मी और सरस्वती माता,
मेरे घर बस जाएं।
चरणों में ये दास पड़ा है,
इतनी दया दिखाएं।।
उल्झन से कहदो बजरंगी,
करे नहीं लाचार।
बाबा तार–तार–तार,
बाबा तार–तार–तार ।।4 ।।

तुम बिनु जग में वायु नंदन,
और नहीं कोई मेरा।
अंधकार में जीवन मेरा,
मांगू नया सवेरा।।
अपने इस नादां बालक को,
करदो जी उद्धार।
बाबा तार–तार–तार,
बाब तार–तार–तार ।।5 ।।

नोटः–पुष्पांजिल प्रार्थना समाप्त होते ही हाथों का पुष्प सिंहासन चढ़ावें, इसके पश्चात हनुमान चलीसा और ''बजरंग वाण'' का पाठ करे। दोनों पाठ समाप्त होने के बाद हनुमान जी की आरती करें। आरती करते समय पुस्तक के वैदिक पूजन में लिखित आरती गावें। आरती करने के बाद हनुमान जी को पुनः प्रणाम करें, फिर चाय नाश्ता आदि ग्रहण कर अपने नित्य कार्यों में संलग्न हो जाएं।

श्री हनुमान चालीसा

।। दोहा ।।

श्री गुरू चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनऊँ रघुवर विमल जसु, जो दायक फल चारि।।
बुद्धि हीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन–कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु क्लेश विकार।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।।
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन विराज सुवेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र अरू ध्वजा बिराजै। काँधे मूंज जनेऊ साजे।।
शंकर सुवन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जग वन्दन।।
विद्यावान गुणी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे।।
लाय संजीवन लखन जियाये। श्री रघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्हा बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरत सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो यश गावे। अस कहि श्रीपति कंठ लगावें।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
यम कुबेर दिग्पाल जहाँ ते। कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांघि गए अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैटारे।।
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महावीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधू सन्त के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अन्तकाल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गोसाँई। कृपा करहु गुरूदेव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहिं बंदि महासुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजे नाथ हृदय महँ डेरा।।

।। दोहा ।।

पवनतनय संकट हरण, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

बजरंग बाण

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीत ते, विनय करें सनमान।
जन के कारण सकल शुभ, सिद्ध करे हनुमान।।

चौपाई

जय हनुमन्त सन्त हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी।।
जन के काज विलम्ब न कीजे। आतुर दौर महा सुख दीजै।।
जैसे कूदि सिन्धु वही पारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा।।
आगे जाय लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुर लोका।।
जाय विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखि परम पद लीन्हा।।
बाग उजारि सिंधु मँह बोरा। अति आतुर यम कातर तोरा।।
अक्षय कुमार को मारि संहारा। लूम लपेट लंक को जारा।।
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुरपुर महँ भई।।
अब बिलम्ब केहि कारण स्वामी। कृपा करहु उर अन्तर्यामी।।
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता। आतुर होय दुःख करहु निपाता।।
जय गिरधर जय–जय सुख सागर। सुर समूह समरथ भट नागर।।
ॐ हनु हनु हनुमंत हटीले। बैरिहि मारु बज्र के कीले।।
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो। महाराज प्रभु दास उबारो।।
ऊँकार हुँकार महावीर धावो। बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो।।
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीसा। ॐ हुँ हुँ हुँ हनु अरि सीसा।।
सत्य होउ हरि शपथ पाय के। राम दूत धरु मारु जाय के।।
जय जय जय हनुमत अगाधा। दुःख पावत जन केहि अपराधा।।
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत हौं दास तुम्हारा।।
वन उपवन मग, गिरी गृह माँही। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं।।
पाँय परौ कर जोरि मनावौं। यहि अवसर अब केहि गौहरावौं।।
जय अन्जनि कुमार बलवन्ता। शंकर सुवन वीर हनुमन्ता।।
बदन कराल काल कुल घालक। राम सहाय सदा प्रति पालक।।
भूत प्रेत पिशाच निशाचर। अग्नि बैताल काल मारीमर।।

इन्हें मारु तोहि शपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की।।
जनक सुता हरि दास कहावो। ताको शपथ विलम्ब न लावो।।
जय जय जय धुनि होत अकाशा। सुमिरन होत दुसह दुःख नाशा।।
शरण शरण कर जोरि मनावौं। यहि अवसर अब केहि गोहरावौं।।
उठु उठु उठु तोहिं राम दुहाई। पाँय परौं कर जोरि मनाई।।
ॐ चँ चँ चँ चँ चपल चलंता। ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता।।
ॐ हँ हाँकि देत कपि चंचल। ॐ सं सहीम पराने खल दल।।
अपने जन को तुरत उबारो। सुमिरत होय आनन्द हमारो।।
यह बजरङ्ग बाण जेहि मारे। ताहि कहो फिर कौन उबारे।।
पाठ करे बजरङ्ग बाण की। हनुमत रक्षा करैं प्राण की।।
यह बजरङ्ग बाण जो जापै। ताते भूत प्रेत सब कांपै।।
धूप देय अरु जपै हमेशा। ताके तन नहिं रहै कलेशा।।

।। दोहा ।।

प्रेम प्रतीति धरि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।।
तेहि के कारण सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान।।

नोटः—भक्तो!उपरोक्त विधि से नित्य पूजन कर अब आरती करें और पूजन का विसर्जन करें। इस प्रकार नित्य ही पूजने करने से शनि ग्रह का अनिष्टों का नाश होता है, मनुष्य विकट संकटों से छुटकारा पा लेता है। जहाँ नित्य हनुमान जी का पूजन होता है, उनके गृह में भूत–पिशाच की बाधा कभी नहीं आती और साधक सुखी जीवन व्यतीत करता है। (नित्य पूजन कर्म समाप्त)

श्री हनुमान जी का त्रिकाल स्मरण पूजन
(मानसिक पीड़ा शान्ति हेतु)

श्री हनुमान जी के अत्यन्त श्रद्धालु उपासक को चाहिए कि वे तीनों काल(प्रातः दोपहर, शाम) श्री हनुमान जी का स्मरण ध्यान करे। किन्तु यदि ऐसा सम्भव न हो तो प्रातः या सायंकाल ही त्रैकालिक ध्यान पूजन एक साथ भी कर सकते हैं।

प्रातः काल के पूजन में नैवेधः—प्रातः कालीन उपासना में गुड़

और नारियल का गोला प्रसाद चढ़ावें और केवल धूप अगरबत्ती व देशी घी का दीपक जगाकर ही पूजा ध्यान कर लें तो समस्त सुखों की प्राप्ति हो जाती है। इस पूजन में वृहद सामग्री की आवश्यकता नहीं होती है।

प्रातःकालीन ध्यान मंत्र

प्रातः स्मरामि हनुमन्तमन्नत वीर्य
श्री रामचन्द्र चरणाम्बुज चञ्चरीकम्।
लंकापुरी दहन नन्दित देव वृन्दं
स्र्वार्थ सिद्धि सदनं, प्रथित प्रभावम्।।

हिन्दी अनुवादः—जो श्री रामचन्द्र जी के चरण कमलों के भ्रमर हैं, जिन्होंने लंकापुरी को दग्ध करके देवगण को आनन्द प्रदान किया है, जो सम्पूर्ण सिद्धियों के आगार और लोकविश्रुत प्रभाव शाली हूँ, उन अनन्त पराक्रमशाली हनुमान जी को मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

मध्याह्न कालीन ध्यान मंत्र

नैवेद्यः— दोपहर की पूजा में देशी घी और गेहूँ आटे का बना मीठा चूरमा या मीठा रोट प्रसाद चढ़ावें, एक अगरबत्ती और दीपक जगावें, तत्पश्चात् ध्यान करें।

माध्यं नमामि वृजिनार्ण वतार नैका—
धारं शरण्यमुदिता नुपमप्रभावम।
सीताऽऽधिसिन्धु परिषोषण कर्म दक्षं
वन्दारूकम्पतरूमव्ययभाञ्जनेयम।।

हिन्दी अनुवादः— जो भवसागर सौ उद्धार करने के एकमात्र साधन और शरणागत के पालक हैं, जिनका अनुपम प्रभाव लोक विख्यात है, जो सीता जी की मानसिक पीड़ा रूपी सिन्धु के शोषण कार्य में परम प्रवीण और वन्दना करने वालों के लिए कल्पवृक्ष हैं, उन अविनाशी अञ्जना नन्दन हनुमान जी को मध्याह्न काल में प्रणाम करता हूँ।

शायंकालीन ध्यान मंत्र

नैवेद्यः— शायंकाल हनुमान जी को आम, अमरूद या केले का प्रसाद चढ़ावें, धूप—दीप जगावें, फिर निम्नलिखित मंत्र से उनका ध्यान करें।

शांयभजामि शरणोपसृताखिलार्ति—
पुञ्ज प्रनाशनीवधो प्रथितप्रतापम्।
अक्षान्तकं सकल राक्षससंवश धूम—
केतुं प्रमोदित विदेह सुतं दयालुम।।

हिन्दी अनुवादः—शरणागतों के सम्पूर्ण दुःख समूह का विनाश करने में जिनका प्रताप लोक प्रसिद्ध है, जो अक्षय कुमार का वध करने वाले और समस्त राक्षसवंश के लिए धूमकेतु (अग्नि अथवा केतु ग्रह के समान संहारक) हैं, जिन्होंने विदेह नन्दिनी सीता जी को आनन्द प्रदान किया है, उन दयालू हनुमान जी को मैं शायं काल ध्यान करता हूँ।

नोटः—इस पूजन श्रृंखला में यदि आप संस्कृत में लिखे श्लोकों को नहीं पढ़ सकते हैं तो केवल हिन्दी अनुवाद पढकर ही ध्यान पूजा सम्पन्न करें। अगर समय का अभाव हो तो तीनों श्लोकों का ध्यान प्रातः या शायंकालीन समय में ही किया करें।

लंकापति महाराज विभीषण द्वारा की गई हनुमान स्तुति का चमत्कार

दैविक तथा भौतिक भय, व्याधि, स्थावर जंगम सम्बन्धी विष, राजा का भयंकर शास्त्र, भय, ग्रहों का भय, जल, सर्प, महावृष्टि, दुर्भिक्ष तथा प्राण संकट भय निवारण हेतु।

भगवान हनुमान के श्रद्धालु भक्तों! नीचे लिखित श्लोक वन्दना ''श्री सुदर्शन संहिता'' में वर्णित है। ''विभीषण—गरूड़ संवाद में''श्री विभीषण जी ने कहे हैं कि हे गरूड़ जी! मैं श्रीराम जी की वन्दना करने के साथ—साथ श्री हनुमान जी की वन्दना भी करता हूँ। क्योंकि—

वादे विवादे संग्रामे भये घोरे महावने।
सिंह व्याध्रादि चौरेभ्यः स्तोत्रपाठाद् भयंनहि।।

हिन्दी अनुवादः—इस स्त्रोत का पाठ करने से वाद—विवाद, संग्राम, घोर भय एवं महावन में सिंह व्याघ्र आदि हिंसक जन्तुओं तथा चोरों से भय नहीं प्राप्त होता।

दिब्ये भूतभये व्याधौ विषे स्थावरजंगमे।
राजशस्त्र भये चोग्रे तथा ग्रह भयेषु च।।
जले सर्वे महावृष्टौ दुर्भिक्षे प्राणसम्भवे।
पठेत् स्तोत्रं प्रमुच्चेत भयेभ्यः सर्वतो नरः।।
तस्य क्कापि भयं नास्ति हनुमत्स्तवपाठतः।।

हिन्दी अनुवादः—यदि मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करें तो वह दैविक तथा भौतिक भया, व्याधि स्थावर जंगम सम्बन्धी विष, राजा का भयंकर शास्त्र भय, ग्रहों का भय, जल, सर्प, महावृष्टि, दुर्भिक्ष तथा

प्राण संकट आदि सभी प्रकार के भयों से मुक्त हो जाता है। इस हनुमत्स्तोत्र के पाठ से उसे कहीं भी भय की प्राप्ति नहीं होती।

श्री विभीषण जी द्वारा रचित महावीर श्री हनुमान स्तोत्र

भगवान श्री हनुमान के श्रद्धालु भक्त गणों नीचे लिखित स्त्रोत का पाठ सुनाते हुए विभीषण जी ने गरूड़ जी से कहे हैं कि–हे गरूड़ जी मानव प्राणी नित्य प्रातः काल स्नानादि से पवित्र होकर, श्री हनुमान जी प्रतिमा या तस्वीर के समक्ष धूप–दीप जगाकर, उन्हें गुड़ या देसी घी और गेहूँ आटे में गुड़ मिलाकर चूरमा बना कर, उसका प्रसाद चढ़ावें,तत्पश्चात् स्त्रोत का पाठ आरम्भ करें, तो उपरोक्त फलों की अवश्य प्राप्ति होती हैं, इसमें विचार करने की आवश्यकता नहीं है। स्त्रोत इस प्रकार हैः–

नमो हनुमते तुम्यं नमो मारूतसुतवे।
नमो श्रीराम भक्ता श्यामाश्याय चते नमः।।१ ।।

हिन्दी अनुवादः–हे हनुमान जी!आपको बारंबार नमस्कार है। हे मारूति नंदन आपको मेरा प्रणाम है। हे प्रभु राम के भक्त! आपको मेरा स स्नेह अभिवादन है। हे प्रभु! आपका मुख श्याम वर्ण का है, आपको इस विभीषण का बारंबार नमस्कार समर्पित है।

कौपीन वाससे तुम्यं रामभक्तिताय च।
दक्षिणा शाभास्कराय शत चन्द्रो दयात्मने।।२ ।।
कृत्याक्षतव्यथाध्नाय सर्वक्लेश हराय च।
स्वाभ्याज्ञापार्थ संग्रामसंख्ये संजय धारिणे।।३ ।।
भकृान्तदिब्यवादेषु संग्रामे जयदायिने।
किलकिलाबुबुकोच्चार घोरशब्द कराय च।।४ ।।
सर्पाग्नव्याधिसंस्तभ कारिणे वनचारिणे।
सदा वनफलाहारसंतृप्ताय विशेषतः।।
महार्णवशिलावद्धसेतुबन्ध्याय ते नमः।।५ ।।

हिन्दी अनुवादः–हे भक्तशिरोमणि हनुमान जी ! कौपीन ही आपका वस्त्र है। आप हर समय श्री रामचन्द्र जी की भक्ति में संलग्न रहते हैं। दक्षिण दिशा को प्रकाशित करने हेतु आप सूर्य के समान हैं। सैकड़ों चन्द्र की भांति आपकी शरीर दिब्य कान्तिवान है। आप भक्तों के आघात व्यथा के नाशक, समस्त कष्टों के निवारक, भगवान श्री राम

की आज्ञा से महाभारत के समय में अर्जुन मैत्री भाव के संस्थापक, विजयवान, भक्तगणों के विजयप्रदाता, किलकिला और बुबुक के उच्चारण द्वारा भयंकर शब्द करने वाले, सांप अग्नि एवं व्याधि के स्तम्भक, वन में विचरने वाले, जंगुली फलों के आहार से अधिक संतुष्ट होने वाले और महासागर पर शिलाखण्डों द्वारा सेतु के निर्माता हैं। अतः हे प्रभु! आपको मेरा हार्दिक नमस्कार है।

अक्षस्य वधकर्त्ते च ब्रह्मपाश न्निवारिणे।
लक्ष्मणांङ्ग, महाशक्ति घातकक्षत विनाशिने।।
रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय भूतघ्नाय च ते नमः।
ऋक्ष वानरवीरौघप्राणादाय नमो नमः।।६।।
महाभयरिपुघ्नाय भक्तत्राणौंककारिणे।
पर प्रेरित मंत्रानां चन्त्राणां स्तम्भकारिणे।
पयः पाषानतरण कारणाय नमो नमः।।७।।
पर सैन्यबलघ्नाय शास्त्रास्त्रघ्नाय ते नमः ।
विषघ्नाय द्विषघ्नाय ज्वरघ्नाय च ते नमः।।८।।

हिन्दी अनुवादः—हे दयालु हनुमान जी!आप अक्षय कुमार के प्राण हर्त्ता, ब्रह्मपाश के निवारक, श्री लक्षमण जी के वदन में महाशक्ति के आघात को उत्पन्न हुए कष्टों के विनाशक, दावन, दुश्मन एवं भूत-प्रेतों के संहारक एवं रीछ और वानर वीरों के समुदायों के जीवन रक्षक हैं, अतः हे पवन पुत्र श्री हनुमान। आपको बारंबार नमस्कार है। आप अतिबलवान शत्रुओं के विनाशक, अपने भक्तों के महान, रक्षक, दूसरों द्वारा की गई मंत्र-यंत्र शक्तियों के स्तम्भक और सागर जल पर शिलाखण्डों के तैराहक है, अतः हे परमेश्वर आपको पुनः पुनः बहुत-बहुत नमस्कार है। हे अंञ्जनानंदन । आप शास्त्राशस्त्र के निवारक तथा शत्रुवों की सैनिक शक्तियों के मर्दन कर्त्ता हैं, आपको प्रणाम है। विष, शत्रु एवं ज्वर के विनाशक आपको करोड़ों प्रणाम है।

सीताशोकविनाशाय रामसुद्राधराय च ।
रावणांतकुलच्छेद कारिणे ते नमो नमः।।९।।
बालार्कमण्डुलग्रासकारिणे भवतारिणे।
नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च।।१०।।
रिपुभायाविनाशाय रामाज्ञालोक रक्षिणे।
प्रतिग्रामस्थितायाथ रक्षोभूतवधार्थिणे।।
करालशैलशस्त्राय दुमशस्त्राय ते नमः ।।११।।
नमो वानरवीराय सुग्रीवसख्यकारिणे।
लंकाविदाहनार्थाय हेलासागरतारिणे।।१२।।

हिन्दी अनुवादः—हे केशरी नंदन, पूज्य हनुमान जी!आप महारानी देवि माता सीता जी के शोकों के निवारक, भगवान श्री राम की मुद्रिका लेकर लंका जाने वाले रावण के वंश के विनाशक हैं आपको हमारा प्रणाम है। आप वाल्काल में सूर्य के ग्रास कर्त्ता और भक्तों को भवसागर से तारने वाले हैं। दुष्टों के लिए आपका स्वरूप अति भयानक है, क्योकि आप नख और दाँतों को ही आयुघ रूप में धारण करते हैं, एवं शत्रुवों की माया के नाशक हैं, तथा भगवान राम की आज्ञानुसार प्राणियों के पालक है। दानवों, दुष्टों और भूत—प्रेतों का वध करना ही आपका प्रयोजन है। सभी नगरों व ग्रामों में आप मूर्तरूप में वर्तमान हैं, विशाल पर्वत, वृक्ष ही आपके युद्धास्त्र हैं। अतः हे प्रभु! आपका अभिवादन करता हूँ। आप सुग्रीव जी को श्रीराम जी से मैत्री कराने वाले, लंका को भस्मित करने हेतु खेल—खेल मे ही विशाल महासागर को लाँघने वाले हैं। हे नाथ! आपको बारंबार हृदय से नमस्कार करता हूँ।

वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने।
वनपालशिरश्छेदलंकाप्रासाद भञ्जिजणे।।१३।।
ज्वलत्कनकवर्णाय दीर्घलाङ्गलधारिणे।
सौमित्रिजयदात्रे च राम दूताय ते नमः।।१४।।
मेघनादमखध्वंशकारिणे ते नमो नमः।
अशोकवनविद्धंशकारिणे भयहारिणे नमो नमः।।१५।।

हिन्दी अनुवादः—हे भक्तशिरोमीण हनुमान जी! आप पवन(वायु) के पुत्र, सर्वश्रेष्ठ वीर, गगन (आकाश) के मध्य विचरने वाले और अशोक वाटिका के रक्षकों का सिर धड़ से अलग करके लंका की अट्टालिकाओं को चूर्ण करने वाले हैं। आपकी शरीर की कान्ति तप्त स्वर्ण के समान है। आपकी लूम(पूंछ) लम्बी है और आप सुमित्रानंदन लक्ष्मण को मूर्च्छा दूर करने वाले हैं। ऐसे श्री राम भक्त हनुमान को मेरा पुनः—पुनः अभिवादन है। आप अशोक वाटिका को उज़ाड़ने वाले और मेघ नाद के यज्ञ का विद्धंशंक है, आप भय को हरने वाले हैं, सर्वकामना देने वाले हैं। अतः हे दयानिधे रूद्रावतार हनुमान जी आपको नमस्कार, नमस्कार, बारंबार नमस्कार है।

श्री हनुमान जी का "वैदिक" वृहद "षोड़षोपचार पूजन"

सर्वकामना-प्राप्ति हेतु – सोलह उपचारों द्वारा पूजन

भक्तों! वेदों व शास्त्रों मे देवी—देवताओं को प्रसन्न करने हेतु

उपासना विधि में सर्वोत्तम उपासना विधि–"षोड़षोपचार पूजन" को माना गया है। षोड़षोपचार पूजन का अर्थ होता है। सोलह उपचारों द्वारा पूजन विधि सम्पन्न करना। यह विधि अत्यन्त सरल विधि है, जिसे गरीब, अमीर और भिखारी भी कम व्यय द्वारा समपन्न कर सकते हैं। यह पूजन 41 मंगलवार लगातार करने से मानव प्राणी कुछ भी प्राप्त कर सकता है, यहाँ तक कि हनुमान जी का दर्शन भी प्राप्त करने में समक्ष हो सकता है, परन्तु पूजन विधि पूर्वक हृदय की गहराई, पवित्रता, सच्ची निष्टा, पवन पुत्र के पति समर्पित भावना, सच्ची लगन और सत्यनिष्ठ होने जरूरी हैं।

षोड़षोपचार पूजन का अर्थ

षोड़षोपचार पूजन में जिन 16 उपचारों की आवश्यकता होती है. वह निम्नलिखित है।

1.आवाहन (स्तुति) 2. आसन 3.पाद्य 4. अर्ध्य 5. आचमन 6. स्नान 7. वस्त्र 8. यज्ञोपवीत 9. चन्दन 10. अक्षत 11. पुष्प 12. सिन्दूर 13. पान–सुपारी 14. धूप–दीप 15. नैवेद्य 16. दक्षिणा।

पाठको! षोड़षोपचार पूजन में निम्नलिखित सामग्रियों की आवश्यकता होती है।

पूजन सामग्री

आम लकड़ी से बना लाल रंग का सिंहासन, सिंहासन पर बिछाने हेतु लाल वस्त्र, श्री हनुमान जी को अर्पित करने हेतु लाल लंगोट, लाल चादर, लाल रंग में रंगी धोती, जनेऊ–5(यज्ञोपवीत) लाल अबीर, गेहूँ का आटा, पानं, सूपारी, काले तिल, सिन्दूर, लाल चन्दन, गाय का घी, धूप, अगरबत्ती, रूई, कपूर, पंचरत्न सर्वोसीध, मिट्टी का घड़ा,(कलश के लिए) पानी वाला नारियल–1, सूखा नारियल हवन के लिए–1, हवन सामग्री, गुड़, लड्डु, गाय घी और गेहूँ आटे, चीनी से बना चूरमा, केला (चावल) फूल (लाल) फूलमाला (लाल), गंगाजल, विल्वपत्र, अरघी, पंचपात्र, आशन हेतु लाल कम्बल, चौमुखी दीपक, हनुमान जी का ध्वज(पताका), हवन हेतु आम की लकड़ी, माचिस, आम का पल्लव, केले का पत्ता, दूर्वादल,(दूभरी) गाय का गोबर, शहद, गाय का दहीं, गाय का दूध, पांच तरह के फल इंत्यादि हनुमान जी की प्रतिमा या तस्वीर, आरती स्टेण्ड, कुशा का आसन, अभिषेक पात्र, भगोने, गिलास, जौ, पूजन की पुस्तकें, विग्रह को पोछने हेतु वस्त्र, चन्द्रोटा, थाली, कटोरी, शंख केशर, लोंग, इलाईची, पंचमेवा, मोली, रोली पंचपल्लव, सात रंगों में रंगाया चावल, पुरोहित का नवीन वस्त्र, भेंट में देने के लिए द्रव्य आदि।

पूजन के पात्र

श्री हनुमान जी की पूजन में चार प्रकार के पात्रों (कांशे की कटोरियां) की आवश्यकता होती है–

1. पाद्यपात्रः– इस पात्र में जल, दर्बादल और कमल पुष्प की पंखुड़ियाँ रखी जाती है।

2. अर्ध्य पात्रः - इस पात्र में जल के अलावा दहीं,दुर्वादल, कुशा, पुष्प, अक्षत, कुंकुम (गुलाल) पीली सरसों और सुपारी होती है।

3. आचमन पात्रः– जल के आलावा जायफल, लौंग और शहद, डालना चाहिए।

पूजन प्रारम्भ से पूर्व

श्री हनुमान जी के श्राद्धालु भक्तों! श्री हनुमान जी का "षोड़षोपचार पूजन" मंगलवार को विशेष फल प्राप्ति हेतु लगातार 41 दिन मंगलवार, चैत्र शुक्ल पक्ष की अमास्या, चैत्र शुक्लपक्ष राम नवमी को विशेष रूप से की जाती है। चैत्र शुक्ल पक्ष रामनवमी दिन का पूजन इन समस्त समय में सर्वोपीर महत्व रखता है।

उपरोक्त समय (दिन) में प्रातः काल स्नानादि से पवित्र हो जायें। फिर पूजा स्थल पर आम लकड़ी से बना सिंहासन स्थापित करें, समस्त पूजन सामग्री अपने पास इक्ठे कर लें, सिंहासन पर लाल वस्त्र बिछावें और उस पर हनुमान जी की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करे, तत्पश्चात् पूजन स्थल पर गंगा जल छिड़के, धूप जगावें, फिर पवित्र तन मन से गाय घी–रूई घी बाती का चौमुखी दीप प्रज्जवलित करें, दीपक जलाकर हनुमान जी सिंहासन के सामने–पास में दाहिनी और अक्षत पुंज पर (चावल छिड़कर) प्रज्जवलित दीपक रखें। तत्पश्चात् कम्बल (लाल) के योग्य पुरोहित से ही सम्पन्न करावें तो अति लाभकारी सिद्ध होगा, क्योंकि योग्य पंडित के रहते पूजन में अशुद्धि नहीं आती। सम्भव न हो तो स्वयं ही शुद्ध विधि से पूजन प्रारम्भ करें, स्वयं भी रक्त रंग का नवीन वस्त्र धारण करके ही पूजन आरम्भ करें। पूजन के समय पूरब मुख होकर बैठे और सामने सिंहासन स्थापित करें।

पूजन प्रारम्भ

पूजन आरम्भ करने से पूर्व सिर पे लाल रूमाल या लाल तौलिया अवश्य रख लें। इसके पश्चात दाहिने हाथ की अंजुली में गंगाजल, अभाव में संमान जल लेकर ही यह मंत्र पढ़े और मंत्र समाप्ति के बाद उस अंजुली जल को शरीर के ऊपर छिड़क लें।

शरीर पवित्र करने का मंत्र

ॐ. अपित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।

यः स्मरेत पुण्डरी काक्षं स वाह्याभ्यंतरः शुचिः।।
ॐ पुण्डरी काक्ष पुनातु।।

हिन्दी अनुवादः—कोई पवित्र हो, अपवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में क्यों न हो, जो''पुण्डरी काक्ष'' का सम्रण करता है, वह बाहर और भीतर से भी परम पवित्र हो जातां है, अतः हे ''ॐ रूप पुण्डरी काक्ष'' हमें पवित्र करें।

नोटः—अंजुली का जल शरीर पर छिड़क लें। भक्तों!यह ''वेद मंत्र'' जो भी पूजन हेतु लिख रहा हूँ, यदि संस्कृत भाषा पढ़ने में कठिनाई हो तो''हिन्दी अनुवाद'' मंत्र द्वारा ही उपासना पूर्ण कर सकते हैं।

अब दीपक की पूजा करेः—

दीप पूजन मंत्र

''ॐ दीप ज्योतिषे नमः'' यह मंत्र मुख से बोलकर—जल, अक्षत, पुष्प, चन्दन, विल्वपत्र, दीपक के पास चढ़ावे। फिर उस दीप में श्री हनुमान जी ज्योतिर्मयू रूप की भावना करते हुए यह श्लोक को बोले—

भो दीप देवरूपस्तवं कर्म साक्षी ह्यविघ्न कृत। यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

हिन्दी अनुवादः—हे दीप!आप देवता के रूप है, कर्म के साक्षी तथा विघ्न के निवारक हैं, जब तक पूजन कर्म पूरा न हो जाय, तब तक आप सुस्थिर भाव से सन्निकट रहें।

इसके पश्चात् निम्न मंत्रों को पढ़कर आचमन करेंः—

आचमन मंत्र

ॐ केशवाय नमः ।।
ॐ नारायण नमः ।।
ॐ माघवाय नमः ।।

तत्पश्चात्—

ॐ हृषिकेशावाय नमः— मंत्र पढ़कर हाथ धो ले। फिर दाहिने हाथ के अंगूठे से चौथे न० की उंगली में कुशा से बना पवित्री(अंगूठी) या ताबें की अंगूठी धारण करें। पवित्री धारण के समय निम्न मंत्र पढ़ेः—

पवित्री धारण मंत्र

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णब्यौ सवितुर्वः प्रसव—उत्पुनाम्याच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पूतस्य यत्कामः पुणे तच्छकेचम।।

नोटः—पवित्री धारण करने के बाद—तीन बार ''प्राणायाम'' करेंः—

प्राणायाम की विधि एवं मंत्र

मन की चंचलता का शमन करने(समाप्त करने) उसे एकाग्र करने और अपने उपास्य देव के कमल रूपी चरणों में मन रूपी भ्रमर को अवस्थित करने में "प्राणायाम" एक महत्वपूर्ण कार्य करता है।

प्राणायाम की प्रक्रिया के विविध चरणों में–श्री हनुमान जी के प्रिय मंत्र–"**ॐ श्री राम ईश्वराय**"– का निश्चित समय में मन ही मन जप किया जाता है।

सर्व प्रथम दक्षिण नासिका अर्थात् नाक के दाएँ नथूने को दाहिने हाथ के अंगूठे से बन्द करके बाएं नथूने से धीरे–धीरे श्वास अन्दर क्री ओर खींचीए। इस क्रिया के मध्य मन ही मन उपरोक्ता मंत्र का एक–दो या चार बार जप भी करते रहिए। श्वास भर जाने के पश्चात् सीधे हाथ की मध्यमा व अनामिका ऊंगलियों से दाहिने नथूना भी बंद कर लीजिए। सांस को रोके रखिये और चार आठ अथवा सोलह बार उपरोक्त मंत्र का जप कीजिए। अब अंगूठे को नथूने से हटाकर अत्यन्त मन्द गति से वायु को बाहर निकल जाने दे। इस मध्य भी दो चार या आठ बार उपरोक्त मंत्र का जप करें।

यह उपरोक्त सभी क्रियाएँ तीन बार करें।

प्रथम बार उपरोक्त विधि से दाहिने नथूने अर्थात दक्षिण नासिका को अंगूठे से दबाकर प्रारम्भ करते हैं। दूसरी बार बायें नथूने (वाम नासिक) को अंगूठे से दबाकर प्रारम्भ करते हैं यह प्रक्रिया। तीसरी बार फिर पहले के समान ही दक्षिण नासिका को बन्द करके की जाती है। यह प्रक्रिया।

यहाँ विशेष ध्यान रखने की यह बात है कि श्वास खींचने में जितना समय लगता है उससे चार गुणा समय इसे रोक कर रखते हैं और दूने समय में बाहर निकालते हैं। यही कारण है कि क्रमशः एक, चार और दो के अनुपात में मंत्र पढ़ने का विधान शास्त्रों में दिया गया है।

प्रारम्भ में कुछ दिनों तक तो श्वास रोकने में थोड़ी असुविधा भी अनुभव हो सकती है, परन्तु चन्द दिनों में ही न केवल ये सभी कार्य आसानी से होने लग जाते हैं बल्कि बढ़ती ही जाती है आपकी श्वास रोकने की क्षमता।

नोटः–प्राणायाम विधि सम्पन्न कर विनियोग करें। विनियोग करते समय दाहिने हाथ की अंजुली में भरलें और विनियोग मंत्र समाप्त होने के बाद जल पृथ्वी पर छिड़क दें।

विनियोग मंत्र

ॐ अस्य श्री हनुमत्पूजन श्री रामचन्द्र क्रृषिः
अनुष्टुपछन्दः श्री हनुमान महारूद्रो देवता,

ह्वी श्री ह्वी ह्वा बीजम श्रीम—इति शक्तिः किलिकिलि बुबुकारेणेति कीलकंम, लंकविध्वंश नायेति कवचम्, मम सर्वोपद्रवशान्त यर्थे सर्वकाम सिद्धयर्थे च जपे विनियोगः।

हिन्दी अनुवादः—इस विनियोग मंत्र के ऋषि श्री राम चन्द्र जी हैं, इसका छन्द अनुष्टुप है, महारूद्र श्री हनुमान जी इन के देवता है, ह्वी श्री ह्वी हां बीज है, श्री शक्ति है, किलिकिलि बुबकारेण कीलक है, लंकाविध्वंसनाय कवच है. मेरे सारे उपद्रवों की शान्ति के लिए तथा सारी कामनाओं की सिद्धि के लिए पूजन में इनका विनियोग है ।

नोटः—अंजुली का जल पृथ्वी पर गिरा दे। तत्पश्चात्—''न्यास'' करें। न्यास में मंत्र पढ़कर अंग स्पर्श करने का विधान है।

न्यास मंत्र

नीचे लिखित मंत्र पढ़कर सिर का स्पर्श करें—

ॐ श्री रामचन्द्र ऋषये नमः।।

निम्नलिखित मंत्र पढ़कर मुख का स्पर्श करेंः—

ॐ अनुष्टुप छन्दसे नमः।।

नीचे लिखित मंत्र उच्चारण कर गुप्तांग का स्पर्श करेंः—

ॐ ह्वी बीजाय नमः।।

निम्नलिखित मंत्र पढ़कर नाभि का स्पर्श करें—

ॐ श्री हनुमते कीलकाय नमः।।

निम्नलिखित मंत्र पढ़कर अंजुली स्पर्श करेंः—

ॐ इष्टार्थे विनियोगाय नमः।।

नोटः—न्यास मंत्र समाप्त होने के पश्चात ''करादि न्यास'' करें। ''करादि न्यास'' दोनों हथेलियों के मध्य सम्पन्न किया जाता है।

करादि न्यास मंत्र व विधि

ॐ ऐं ह्वी हनुमते रामदूताय अंगुष्टाभ्यां नमः।

नोटः— ऊपर के मंत्र को पढ़कर दोनों अंगूठों के बीच तर्जनी को लगावें।

ॐ लंकाविध्वंसनाय तर्जनीभ्यां नमः।।

नोटः—उपरोक्त मंत्रोच्चारण करके दोनों तर्जनी से अंगूठे को लगावें।

ॐ अंजनी गर्भ सम्भूताय मध्यमाभ्यां नमः।।

नोटः—ऊपर लिखित मंत्रोच्चारण करके दोनों मध्यमा अँगुलियों को अंगूठे से लगायें।

ॐ शाकिनी डाकिनी विध्वंसनाय अनामिकाभ्यां नमः।।

नोटः—ऊपर के मंत्र को पढ़कर अनामिका ऊँगलियों को अंगूठे से स्पर्श करें।

ॐ किलिकिलि बुबकारेण विभीषनाय हनुमहेदवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।।

नोटः—ऊपर के मंत्र को पढ़कर दोनों कनिवटका अंगुलियों को अंगूठे से स्पर्श करें

ॐ ह्वी श्रीं ह्वां फट स्वाहा करतलकरपृष्टाभ्यां नमः।।

नोटः— ऊपर के मंत्र पढ़कर दोनों हथेलियों और हाथों के पृष्ट भागों को परस्पर स्पर्श करें।

हृदयादि न्यास मंत्र व विधि

नोटः—निम्नलिखित मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ के पांचों उँगलियों से हृदय का स्पर्श करेंः—

मंत्र :—ॐ ऐं ह्वी श्री हनुमते रामदूताय हृदयाय नमः।।

नोटः—नीचे लिखित मंत्र उच्चारण कर सिर का स्पर्श करेंः—

मंत्र :—ॐ लंकाविध्वंसनाय सिरसे स्वाहा।।

नोटः—निम्नलिखित मंत्र को पढ़कर चोटी अर्थात् शिखा का स्पर्श करेंः—

मंत्रः— ॐ अंजनी गर्भ सम्भूताय शिखायैवषट।।

नोटः—निम्नलिखित मंत्र को पढ़कर दोनों नेत्र एवं ललाट का स्पर्श करेंः—

मंत्रः— किलिकिलि बुबकारेण विभीषनाय हनुमद्देवाय नेत्रयाय वौषट।।

नोटः—नीचे लिखित मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ को आगे से लेकर बाँये कन्धे से पीठ पर घुमाकर ताली बजाएँः—

मंत्रः— ॐ श्री ह्वी ह्वौं ह्वां अस्त्राय फट् स्वाहा करतल करपृष्टाभ्यां नमः।।

नोटः—हृदयादि न्यास करने के पश्चात् मस्तक पर चन्दन लगावें।

चंदन लेपन मंत्र

ॐ चन्दनस्य महत्वपुण्यं पवित्र पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी स्तिस्थि सर्वदा।।

नोटः— अब निम्न मंत्र को पढ़कर शिखा बाँधे।

शिखा बन्धन मंत्र

ॐ मानस्तो के तनये मानङ्ग आयुषि मानौ गोषु मानोऊ अश्वेषु रीरिषः।
मानो वीरान भामिनो वधीर्ह है विष्मन्तः सदामित्वा हवामेह।।

नोटः— इसके पश्चात् भगवान गणेश का ध्यान करें। किसी भी पूजन में सर्वप्रथम शुभता के दाता श्री गणेश जी की पूजा ध्यान की जाती है, तभी कोई भी उपासना में सफलता मिलती है।

श्री गणेश अराधना मंत्र

विश्वेश माधवं दुष्ढि दण्डपाणि।
बंदे काशी गुहा गंगा भवानी मणिक कीर्णकाम्।।
वक्रतुण्डं महाकाब्य कोटि सूर्य सम प्रभ।
विर्घ्नि कुरू मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
सुमखश्यैकदन्तश्य कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्य विकटो विघ्नासो विनायकः।।
धुम्रकेतुर्गणाध्यक्षतो भालचन्द्रो गजाननः
द्वादशैतानि नमामि य पटेच्छणुयादपि।।
विधारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुकलांवरघरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजन ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्वदिध्नोपशान्त ये।।
अभीत्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो य सुरासुरैः।
सर्वध्निच्छेद तस्मै गणधिपते नमः।।

हिन्दी अनुवादः—हे विश्वनाथ, माध्व, दुण्ढिराज गणेश, दण्डपाणि, भैरव, काशी, गुहा, गंगा तथा भवानी कर्णिका का मैं वन्दना करता हूँ।

कोटि सूर्य के समान महातेजस्वी विशाल काच और टेढ़ी सूंड वाले गणपति देव। आप सर्वदा–सदैव समस्त कार्यों में मेरे विघ्नों का निवारण करें।

सुमुख, एकदन्त, कपिल गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, घूम्रकेतु, गणाध्यक्षत्त, भालचन्द्र और गजानन, ये गणपति जी के बारह नाम हैं। जो मनुष्य विधारम्भ, विवाह, गृहप्रवेश, यात्रा, संग्राम तथा संकट के अवसर पर इन बारह नामों का पाठ और श्रवण करता है। उसके कार्य में विघ्न उत्पन्न नहीं होता है।

शक्ल धारण करने वाले चन्द्रमा के समान और गौर, चार भुजाधारी और प्रसन्न मुख वाले गणपति देव मैं आपका ध्यान करता हूं। हमारे सम्पूर्ण विघ्नों को शान्त करे।

देवताओं और असुरों ने भी अभिष्ट मनोरथ सिद्धि के लिए जिनकी पूजा की है। जो सारी विघ्न बाधावों को हरने वाले हैं, उन गणपति जी को नमस्कार है।

नोटः— इसके पश्चात् पृथ्वी की पूजा करें। इस संदर्भ में सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़े मंत्र समाप्त होते ही जल पृथ्वी पर छोड़ दें।

पृथ्वी शुद्धि मंत्र

ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्ता रस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

नोटः– अब पूजन का ''संकल्प'' करें। इस संदर्भ में दाहिने हाथ की अंजुली पर पान–सुपारी, द्रब्य, गंगाजल, अक्षत, पुष्पतिल लेकर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें।

पूजन संकल्प मंत्र

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु श्रीमद भगवतो महा पुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तभानस्य अद्य श्री ब्रम्हणोडर्हि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्री श्वेत वारहाह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टांविंशातितमे चुगे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोक जम्बूद्विपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतैक देशे अमुक नगरे' अमुक ग्रामे, अमुक स्थाने वा वौद्धावतारे अमुक नामसंवत्सरे श्री सूर्ये अमुकायने अमुकतौमहाभांगल्य प्रद भाषोत्तमे मासे, अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक नक्षेत्रे अमुक वासरे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशि स्थिते देव गुरौ शेषेसु ग्रहेषु च यथा अमुक शर्मा महात्मनः मनोकामना पूर्ति हेतु, धन–जन–सुख सम्पदा शान्ति, सफलता प्राप्ति हेतु श्री हनुमान पूजन अहम् करिष्येत्।

नोटः–हथेली की वस्तुएँ श्री हनुमान जी के सिंहासन पर समर्पित कर दें।

पाठको! संकल्प मंत्र के मध्य जहाँ–जहाँ भी ''अमुक शब्द'' का उच्चारण किया गया है वहाँ क्रमशः मास, तिथी, नक्षत्र, करण, राशि, नाम, निवस इत्यादि उच्चारण करें, जिस मास नक्षत्र दिवस आदि में आप पूजन कर रहे हैं।

श्री हनुमान जी के भक्तों !अब आप स्वस्ति बाचन मंत्र पढ़ें। इस मंत्र का उच्चारण करते समय उपासक हाथ में चावल लेकर दो–चार दाने कर पूजा स्थल के सिंहासन पर छिड़कते जाएं, यह चावल तब तक छिड़कते रहें, जब तक सम्पूर्ण मंत्र पढ़ कर पूर्ण न करलें।

स्वस्तिवाचनम के ग्यारह मंत्र

पहला मंत्र

ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो 'पद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्वषेदाः स्वस्तिनस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दघातु।।१।।

हिन्दी अनुवादः– अत्यन्त यशस्वी इन्द्र हमारा कल्याण करने वाले हों। जिनके संकट नाशक चक्र को कोई रोक नहीं सकता वह परमात्मा गरूड़ और वृहस्पति हमारा कल्याण करें।

(य.वे. 25/19/ से प्राप्त)

दूसरा मंत्र

पचः पृथिब्यां पचः ओषधीषु पयो दिव्यन्त रिक्षे पयोधाः पयश्वती प्रदिशाः सन्तु महयम।।२ ।।

हिन्दी अनुवादः—हे अग्ने! तुम पृथ्वी में रस को धारण करो, औषधि में रस की स्थापना करें, स्वर्ग में और अन्तरिक्ष में भी रस को स्थापित करें। मेरे लिए दिशा प्रदिशा आदि सभी रस देने वाले हों।
(च.बे. 18/39/)

तीसरा मंत्र

विष्णो रराट मसि विष्णों श्नत्पेस्थौ विष्णोः स्यूरसि विष्णो ध्रुवोसि बैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।३ ।।

हिन्दी अनुवादः—हे दर्भ मालाकार वंश! तुम विष्णु के ललाट रूप हो। हे रराट तुम दोनो भगवान विष्णु के कोष्ट सन्धि हो। हे बृहत सूची। तुम यज्ञमण्डल की सूचि हो, मनुष्य में सोने वाली हो। हे ग्रन्थ! तुम विष्णु के लिए होने के कारण विष्णु रूप ही हो। अतः भगवान विष्णु एवं राम भक्त हनुमान की प्रीति के लिए मैं तुम्हारा स्पर्श करता हूं। यजमान सिंहासन स्पर्श कर प्रणाम करे। (च.बे.5/2/)

चौथा मंत्र

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रूद्रा देवतादित्या देवता मरूतो देवता विश्वेदेवा देवता वृहस्पति र्देवतैन्द्रो देवता वरूणो देवता।।४ ।।

हिन्दी अनुवादः—अग्नि देवता के मनन से इष्ट को स्थापित करता हूँ, वायु देवता के मनन से इष्ट को स्थापित करता हूँ। सूर्य देवता के मनन से इष्ट को स्थपित करता हूँ। चन्द्रमा देवता को मनन कर इष्ट को स्थापित करता हूँ, बसुगण देवता का मनन कर इष्ट की स्थापना करता हूं, रूद्रगण देवता को मनन कर इष्ट की सादित करता हूँ। आदित्यगण देवता के मनन सहित इष्ट को सादित करता हूँ। विश्वदेवा, बृहस्पति, इन्द्र देवता, वरूण देव के मनन से इष्ट को स्थापित करता हूँ। (च.बे. 14/20/)

पाँचवा मंत्र

ॐ धौः शान्ति रन्तरिक्षग्वं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति र्वनस्पतयः शान्ति विश्वदेवः शान्ति ब्रह्म शान्तिः सर्वग्वं शान्तिः शान्ति रेव शान्ति : सामा शान्तिरेधि।। सुशान्तिर्भवतु।।५ ।।

हिन्दी अनुवादः—स्वर्ग, अन्तरिक्ष और पृथ्वी शान्त रूप हो, जल, औषधि, बनस्पति, विश्वदेवता, ब्रह्मरूप ईश्वर, सब संसार शांति रूप हो, जो साक्षात शान्ति है वह भी मेरे लिये शान्ति करने वाली हो।
(च.बे. 36/17/)

छठा मंत्र

ॐ विश्वाणि देवसिवतिर्दुरितानि परासुव यद भंद्रतन्न आसुव।।६।।

हिन्दी अनुवादः—सर्व प्रेरक सविता देव के तेज को हम ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को सत्य कर्मो के निमित्त प्रेरित करें।

(च.वे.30/3/)

सातवां मंत्र

इमा रूद्राय तवसे कपिर्दने क्षयद्विराय प्रभरांमहे मतीः। यथा शमसदिद्विपदे चतुष्पद्दे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।।७।।

हिन्दी अनुवादः—पुत्रादि मनुष्यों और गादि मनुष्यों में जैसे कल्याण की प्राप्ति हो और इस ग्राम के मनुष्य उपद्रव से रहित हों, उसी प्रकार हम अपनी श्रेष्ठ मतियों को जटाधारी रूद्र के निमित्त अर्पित करता हूँ।

(च.वे. 16/48/) से प्राप्त।

आठवां मंत्र

एंत ते देव सवित र्यज्ञ प्राहुर्बुहपतेये।
व्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपति तेन मामव।।८।।

हिन्दी अनुवादः—हे दानादि गुण-सम्पन्न सविता देव! इस यज्ञानुष्ठान को यजमान तुम्हारे निमित्त करते हैं और तुम्हारी प्रेरणा से इस के लिए बृहस्पति को देवताओं की ब्रह्मा मानते हैं, अतः इस यजमान की और मेरी रक्षा करो। (अ.वे. 2/12/ से प्राप्त)

नौवां मंत्र

मनोजूतिर्जु षतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिवं तनोत्वरिष्टं यंज्ञ समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह माद यन्ता मो प्रतिष्ट। एष वै प्रतिष्टानामयज्ञो यत्रेतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिविटंत भवति।।९।।

हिन्दी अनुवादः—यज्ञ सम्बन्धी आज्य घृत सर्वव्यापी सविता देव की सेवा करें। बृहस्पति इस यज्ञ का विस्तार करें, वे इस यज्ञ को निर्विघ्न सम्पन्न करें। सभी देवता हमारे इस यज्ञ में तृप्त हों, इस प्रकार पार्थिव सविता देव यजमान के प्रति अनुकूल हो।

(अ.वे. 2/16/से प्राप्त)

दशवां मंत्र

ॐ गणानात्वा गणपतिग्वं हवामहे त्वाप्रियपतिग्व हवामेह निधिनां तवा निधिपतिग्वं हवामहे वसो मम। आहमजानिगर्भध मात्वभजासि गर्भधम्।।१०।।

हिन्दी अनुवादः—हे गणपति! तुम सब गणों के स्वामी हो, हम तुम्हें आहुत करते हैं। प्रियों को मध्य निवास करने वाले प्रियों के स्वामी हम तुम्हें आहुत करते हैं। हे निधियों के मध्य निवास करने वाले निधिपते! हम तुम्हें आहुत करते है। तुम श्रेष्ठ निवास करने वाले रक्षक होवो। मैं

गर्भधारण जल को सर्व प्रकार से आकर्षित करते हैं। तुम गर्भधारण करने वाले को अभिमुख करते हो। तुम सब पदार्थों के रचयिता होते हुए–सब प्रकार से अभिमुख होते हो।।10।।

(च. बे. 23/19/ से प्राप्त)

ग्यारहवां मंत्र

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्य वो नमो नमो ब्रातेभ्यो ब्रातपतिभ्यश्य वो नमो नमो गृत्से भ्यो गृतपतिभ्यश्य वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्य वो नमो नमो।।११।।

हिन्दी अनुवादः–देवताओं के अनुचर गणों के अधिपति को नमस्कार, विशिष्ठ रूप जाति समूहों को नमस्कार, समूहों के अधिपति को नमस्कार, विविध रूप वाले को नमस्कार और विश्वरूप को नमस्कार है।।11।। (य.वे. 16/25/ से प्राप्त)

नोटः–इसके पश्चात् भगवान् विष्णु का पूजन करें। किसी भी पूजन में गणपित पूजन के बाद भगवान विष्णु की पूजा एवं पंचदेवता की पूजा की जाती है। इस संदर्भ में केले के पत्ते पर सिंहासन के दाहिने तरफ पाँच पान के पत्ते, पाँच सूपारी और नैवेध रखें और उस पर भगवान विष्णु की पूजा करें।

श्री हनुमान पूजन से पूर्व भगवान विष्णु का पूजन

गंगाजाल सेः–

गंगाजल दाहिनी अंजुली में रखकर निम्न मंत्र पढ़े, मंत्र समाप्ति के बाद जल पान पत्ते रख दें। इसी प्रकार क्रमशः अक्षत, तिल चन्दन, विल्वपत्र पुष्प, नैवेध, तुलसीपत्र और पुर्नः जल से पूजन करें।

गंगाजल सेः–

ॐ गंगाजले स्नानियम् भगवते श्री विष्णुवें नमः ।

अक्षत सेः–

इदम अक्षतम समर्पयामि् भगवान विष्णु यहा गच्छ इह तिष्ट।

तिल सेः–

एते तिला समर्पयामि भगवते श्री विष्णुदेवे नमः।

चन्दन सेः–

इदम चन्दनम लेपनम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णुदेवो नगः।

विल्वपत्र सेः–

इदम् विल्पत्राणियम समर्पयामि भगवान विष्णु यहां गच्छ इह तिष्ट्।

पुष्प सेः–

इदम पुष्पम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णुदेवो नमः।

नैवेध सेः–

इदम नैवेध समर्पयामि भगवते श्री विष्णु देवो नमः।

तुलसी पत्र सेः–

इदम तुलसी पत्रम समर्पयामि भगवान विष्णु यहां गच्छ इह तिष्ट।

पुनः गंगाजल सेः–

एतानि गंध, पुष्प धूप दीप ताम्बूल यथा भाग नैवेधानि भगवते श्री विष्णु देवो नमः।

नोटः–उपरोक्त विधि व मंत्र से ही "पंचदेवता" का पूजन उसी स्थान की जगह "पंचदेवता" नाम स्मरण करें।

पंचदेवता पूजन समाप्त होने के पश्चात् श्री हनुमान जी का "कलश" की स्थापना करें।

श्री हनुमान कलश स्थापना विधि और कलश पूजन

सर्व प्रथम सतरंगे गुलाल से अष्टदल कमल पूजा स्थल पर श्री हनुमान जी सिंहासन के आगे बनावें। पश्चात् शुद्ध मिट्टी या जव (जौ) का थड़ा बनावें। उस थड़ा के मध्य सिन्दूर से पांच तिलक किया हुआ जल से भरा घड़ा रखें। तत्पश्चात् कलश के पेंदे के पास भूमि पर हाथ रखकर यह मंत्र पढ़े।

कलश भूमि स्पर्श मंत्र

ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वछाया विश्वस्य भुवनश्य धत्री पृथिवीं दुखर्हिं पृथिवीं मां हिसी।

नोटः–इसके पश्चात् कलश के पेंदे के पास निम्न मंत्र से धान्य छिड़के।

कलश पर धान्य चढ़ाने का मंत्र

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदाना यत्वा व्यानायत्वा।

दीर्घमानु प्रसितिभायुषेधां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृहनात्वा च्छिद्रेण पाणिना चक्षुसे त्वांमहिनाम्पयोसि।।

नोटः–कलश के मुख को दाहिने हथेली से बन्द करके निम्नलिखित मंत्र पढ़ेः–

मंत्रः–ॐ वरूणस्योत्तम्भ वरूणस्य स्कम्भसर्जनीस्थां वरूणस्य क्रृतसदन्यसि वरूणस्य क्रृतसदनभीस वरूणस्य क्रृतसदनमासीद्।

अब कलश में सर्वोसधि डालेंः–

सर्वोसधि समर्पण मंत्र

ॐ या औषधि पूर्वाजाता देवेभ्य स्वियुगम्पुरा। मनैनुवभ्रणामहग्वं शतन्धामणि सप्त च। कलश में दुर्वा डालें:–

कलश दुर्वादल समर्पण मंत्र

ॐ काण्डात काण्डातप्ररोहन्ति पुरूष: परूषस्परि।
एवानो दुर्वेप्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

अब कलश में पूंगीफल (सूपारी) डालें:–

कलश पूंगीफल समर्पण मंत्र

ॐ या फलिनीयां अफला अपुष्पा याश्य पुविषणी: बृहस्पति: प्रसूतास्तानो। मुञ्चनत्वग्वं हस:।

अब कलश में पंचरत्न डालें:–

कलश पंचरत्न समर्पण मंत्र

ॐ परिवाजपति: कविरग्निर्हव्यान्य क्रमीत दधद्रत्नानि दाशुषे।।
कलश में सुवर्ण या द्रव्य डालें:–

कलश में द्रव्य समर्पण मंत्र

ॐ हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत। स दाधार पृथिवीद्यामुतेमाङ्ग कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।

कलश में सप्तमृत्तिका डालें:–

सप्तमृत्तिका समर्पण मंत्र

ॐ स्योना पृथिवीं नो भवानुक्षरा निवेशनि। यच्छान: सर्म्मसप्रया:।।
कलश पर आम का पल्लव रखें:–

आम्रपल्लव समर्पण मंत्र

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं षर्णवे व्यसतिष्कृता।
गो भाजऽइत्किला सथयत्स नवथ पुरूषम।।
ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमाननयंति कस्वद्।
किंचिदवासिनं कलशं दद्यात।।

नोट :– अब कलश में कुशा की पवित्री (अंगूठी) डालें:–

कलश कुशा पवित्री समर्पण मंत्र

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्व: प्रसवऽऊत्पुनाम्याच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि:। तस्य पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्काम: पुने–तच्छकेयम्।।

नोट:– कलश के ऊपर चावल युक्त (पूर्णपात्र) सकोरा रखें:–

पूर्णपात्र समर्पण मंत्र

ॐ पूर्णा: दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्येव विक्रिनावहाऽइष भूर्ज्जशत्कतो।।

नोटः— कलश पे पानी वाला नारियल रखें।

कलश श्रीफल समर्पण मंत्र

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्य पत्न्या बहोरात्रो पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमस्विनो व्याप्तम। इष्पान्निषानां मुम्म इषाण सर्वलोकम्प इषाण।।

नोट :— कलश पे लाल वस्त्र लपेटें।

कलश वस्त्र समर्पण मंत्र

ॐ वस्त्रो पवित्रभसि शतधारं वसो पवित्र मसि सहस्त्र धारम। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुत्वा काम धुक्षः।।

नोटः— कलश (घड़े) के साथ गाय का गोबर स्पर्श करावें:—

गाय का गोबर कलश में स्पर्श कराने का मंत्र

ॐ मानस्तोषे तनयेमान आयुष्मान व्यर्दिवृविषः सदमित्वा हवामहे इति गोमत्रेण कलश स्पर्शयेत्।

नोटः— अब हाथ जोड़कर भगवान वरूण का आवाहन करें।

श्री वरूणदेव आवाहन मंत्र

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्त यजमानो हविर्भिः।
अहेऊ मानो वरूणेह बोध्युषग्वं आयुः प्रमोषि।।
ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरूण भो देव हनुमान इह तिष्ट्। स्थापयामि पूजयामि।।
नोटः— इसके पश्चात् सम्पूर्ण तीर्थ एवं नदियों का आवाहन करें।

सम्पूर्ण नदियाँ व तीर्थो का आवाहन

ॐ सर्वेसमुद्रा सरितसंतर्थानी जलदाः नदाः आयान्तु देवपूजार्थ दुरितक्ष्कारकाः। कलस्य मुखे विष्णुः कण्टे रूद्रः समाश्रितः।।

नोटः— तत्पश्चात् अक्षत छिड़क कर कलश का प्राणतिष्ठा करें।

कलश प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ मनोजूतिर्जु षताभाज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञमिवंतनोत्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु। विश्वदेवास इह रूद्रावतार श्री हनुमान मादयन्तामे प्रतिष्ठा।।

नोटः— अब नेत्र बंद करके हृदय से कलश का ध्यान करें। इस संदर्भ में दोनों हाथ जोड़कर रखें।

श्री कलश ध्यान मंत्र

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्टे रूद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थिते ब्रह्म मध्ये मातृ गणाः स्मृताः।।

कुक्षो तु सागराः सर्वे सर्व वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुवेर्दः सामवेदो हयाथवर्णः।।
अंगैश्य सहिताः सर्वे कलशं तू समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शारदा शान्ति पुण्कारि तथा।।
आयान्तु मम शान्ति यार्थं दुरतिक्ष्यकारका:।।

नोटः— अब नीचे का मंत्र पढ़कर कलश पर अक्षत छोड़े।

ॐ वरूणाद्याः वाहित देवताभ्यो नमः।
ॐ विष्णुआद्या वाहित देवताभ्यो नमः।।

नोटः— इसके पश्चात् कलश पर वरूण वाहित सम्पूर्ण देवताओं का पूजन करें।

श्री वरूण देव पूजन

जल सेः—
ॐ पाद्यो पाद्यं समर्पयामि श्री वरूणाय नमः।
अक्षत सेः—
ॐ आसनार्थक्षताम् समर्पयामि श्री वरूणाय नमः।
गंगाजल से—
ॐ गंगाजले अर्घ्यं समर्पयामि श्री वरूणाय नमः।
पंचामृत से—
ॐ पंचामृतं स्नान समर्पयामि श्री वरूणदेवभ्यो नमः।
पुष्प सेः—
ॐ पुष्पम् समर्पयामि श्री वरूणदेवभ्यो नमः।।
चन्दन सेः—
ॐ गन्धं समर्पयामि श्री वरूणदेवताभ्यो नमः।
यज्ञोपवीत से :—
ॐ यज्ञोपवीत समर्पयामि श्री वरूणदेवताभ्यो नमः।
नैवेध सेः—
ॐ नैवेध समर्पयामि श्री वरूणदवेताभ्यो नमः।

क[illegible] [illegible]जा

अब दोनों हाथ जोड़कर [illegible] प्रार्थना करेंः—

देवदानवं संवादे [illegible]ध्यमाने महानद्यौः।
उत्पन्नो असि तथा कुम्भ विद्युतो विष्णुणा स्वयं।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वीय तिष्टन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्टाः।।
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रूद्रा विश्वदेवाः सपैतुकाः।।

त्र्वाय तिष्टन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादर्दिमं यज्ञ कर्तुमीहे जलोद भव॥
सान्निष्यं कुरू मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।
नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाव सुश्वेतहाराय सुमंगलाय।
सुपाहस्ताय इषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।

षोड़शमातृका पूजन

कलश स्थापना के पश्चात् ''षोड़शामातृका'' (सोलह मातावों) का पूजन करें। इसके संदर्भ में अग्नि कोण में एक चौंकी पर अक्षत की सोलह ढेरी बनावें। यह ढ़ेरियाँ निम्न चक्र के अनुसार बनावे अर्थात अक्षतों द्वारा ही चक्र के अन्दर सोलह मातावों के नामों की रचना करें।

कुल देवी १६	लोक माता १३	देव सेना ७	मेधा ५
तुष्टि १६	सरस्वती १२	जया ८	शीच ८
पुष्टि १५	स्वाहा ११	सावित्री ७	पद्मा ३
धृति १४	स्वधा १०	दुर्गा, काली २०	गौरी १

नोटः– इसके पश्चात् हाथ में अक्षत लेकर मन्त्रोच्चारण करते जायें और समस्त मातृका चक्रों पर धीरे–धीरे दो–चार दाने करके अक्षत छिड़कते जायें।

षोड़शमातृका आवाहन मंत्र

समीपे मातृवर्गस्य सर्वध्निं हरं सदा।
त्रैलोक्य वन्दितं देव गणेशं स्थाप याम्यहम्।।
ॐ श्री गणपतये नमः गणपति मावाह यामि स्थापयामि।
गौरी पद्मा शचि मेघा, सावित्री विजया जया।।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः।
धृति पुष्टि स्थिता तुष्टिरात्मनः कुल देवताः।।
गणेशे नाधिका होता वृद्धे पुज्यास्तु षोड़शा।

ॐ श्री गौर्ये नमः गौरीमावाह यामि स्थापयामि ।।
ॐ श्री पध्मायै नमः पद्मावाह यामि स्थापियामि।।
ॐ शचै नमः शचीमावाह यामि स्थापियामि।
ॐ मेधायै नमः मेधावाह यामि स्थापियामि।
ॐ श्री सावित्रयै नमः सावित्री माहावयामि स्थापयामि।।
ॐ श्री विजयायै नमः विजयामाह यामि स्थापयामि।
ॐ श्री जयायै नमः जयामा वाह यामि स्थापयामि।।
ॐ श्री देवसेनायै नमः देवसेनामाहयामि स्थापयामि।
ॐ श्री स्वधायै नमः स्वधामावाह यामि स्थापयामि।।
ॐ श्री स्वहायै नमः स्वाहामावाह यामि स्थापयामि।
ॐ श्री मातृभ्यो नमः मातुः आवाहयामि स्थापयामि।।
ॐ श्री लोकमातृभ्यो नमः लोकमातुः आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ श्री धृ नमः धृति आवाहयामि स्थापयामि।।
ॐ श्री पुष्टये नमः पुष्टि आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ श्री तुष्टयै नमः तुष्टिमावाह यामि स्थापयामि।।
ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुल देवतामावाह यामि स्थापयामि।।

मातृका प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

नोटः—मंत्रोच्चारण करते हुए मातृका चक्रों पर अक्षत छिड़कते जावें।

ॐ श्री गौर्याधा: कुलदेवतान्मातरो गणपतिः सहिताः सुप्रतिष्ठाः वरदाः भवन्तु।।

मातृका विनय मंत्र

नोटः— हाथ जोड़कर मातृकावों से प्रार्थना करें।

आयुरारोग्य मैश्वर्य ददध्वं मातरो मम।
निर्विध्नं सर्वकार्येषु कुरूध्वं समगणाधिणः।।

नोटः— अब जल, अक्षत, पंचामृत, चन्दन, पुष्प, विल्वपत्र, नैवेध, यज्ञोपवीत आदि से— जिस प्रकार वरूण देव का पूजन किए हैं, उसी मंत्र व विधि से मातृकावों का भी पूजन करें। मंत्रों के अन्तर्गत वरूण देव के स्थान पर ''षोड़समातृका'' नाम का उच्चारण करें।

नोटः— षोडसमातृका पूजन के पश्चात पाँच शान्ति पाठ करें।

पाँच शान्ति पाठ

प्रथम पाठ

ॐ स्वस्तिनो मिमिताभश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावा पृथिवीं सुचेतुना।।1।।

हिन्दी अनुवादः—हे अश्विनी कुमार हमारे लिए कभी कष्ट न होने वाले सुख प्रदान करें। पराक्रमी सत्यस्वरूप और शत्रुवों के हनन कर्त्ता पूषा हमारे लिए सुखकारी हों। (115/51/11 ॠ. व. से प्राप्त)

द्वितीय पाठ

ॐ स्वस्त्ये सोम स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
वृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्त्ये स्वस्तय आदित्यासोभवन्तुनः।।2।।

हिन्दी अनुवादः—हम अपने कल्याण के लिए वायु तथा सोम की स्तुति करते हैं। सोम सम्पूर्ण जगत के लिए पालन कर्त्ता हैं। हम अपने कल्याण के लिए सब देवताओं के साथ मंत्र पालक बृहस्पत्ति की स्तुति करते हैं । अदिति के पुत्र देवता और अरूणादि द्वादश देव हमारे लिए मंगलकारी हो।।2।। (5/51/12 ॠ. वे.)

तृतीय पाठ

विश्वेदेवा नो अद्या स्वस्तये वै श्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये देवा अवन्तवृभवः स्वस्तये स्वस्तिनो रूद्रः पात्व हसः।।3।।

हिन्दी अनुवादः— सब देवता इस यज्ञ में हमारा कल्याण करें तथा हमारा रक्षक हों। मनुष्यों में प्रमुख तथा गृह दाता अग्नि देव हमारा कल्याण करें और रक्षक बनें। तेजस्वी ॠभुगण हमारा मंगल करें। रूद्र हमको पाप से बचाते हुए मंगलकारी हों।।3।।

(5/51/13 ॠ. वे. से प्राप्त)

चतुर्थ पाठ

स्वस्ति मित्रा वरूण स्वस्ति पत्थये रेवति।
स्वस्तिनः इन्द्रश्यग्निश्य स्वस्तिनो अदितेकृधि।।4।।

हिन्दी अनुवादः—हे दिन रात्री के देवता मित्रा वरूण। आप दोनों हमारा कल्याण करें। हे धन की देवी हमारा मंगल करें। इन्द्र और अदिति हमारा कल्याण करें।।4।। (5/5/14 ॠ. वे.)

पांचवां मंत्र पाठ

स्वस्त्ययनं तार्क्ष्यभरिष्टनेमि महद् भूतं वायसंदेवतानाम।
असुरध्नमिन्द्र शंख समत्सु वृहद्यसो नावमिवा रूहेम्।।5।।

हिन्दी अनुवादः—सूर्य और चन्द्रमा बिना बाधा के जैसे भ्रमण करते हैं, वैसे ही हम भी मार्गों में सुख पूर्वक विचरण करें। प्रवास में दीर्घकाल तक रहने पर भी हमारे स्नेह करने वाले तथा हमारी याद करने वाले कुटुम्बियों और मित्रों से हम मिलें।।5।।

(5/51/14 ऋ. वे. से प्राप्त)

नोटः— पञ्च शान्ति पाठ के पश्चात् भक्त शिरोमणि श्री हनुमान जी का आवाहन करें। इस क्रम में दोनों जुड़े हुए खुला हथेली सिंहासन की ओर करें और नेत्र बंद कर हृदय की परम पवित्रता से निम्नलिखित मंत्रों का उच्चारण करें।

भक्त शिरोमणि श्री हनुमान आवाहन मंत्र

पीताखिलविषयेच्छं जाताजन्दाश्रुपुलकमत्यच्छम्।
सीतापतिदूताद्यं वातात्मजमद्य भावये हृद्यम।।1।।
तरूणारूणामुख कमलं करूणारसपूरपूरितापाङ्गम्।
संजीवनमाशासे मञ्जुलमहिमानमञ्जना भाग्यम्।।2।।
शम्बरवैरिशरातिगम्बुज दलविपुल लोचनोदारम्।
कम्बुगलमनिलादिष्टं बिन्वज्वलितोष्टमेकमललम्बे।।3।।
दूरीकृतसीतार्तिः प्रकटीकृतरामवैभव स्फूतिः।
दारितदशमुख कीर्तिः पुरतो मम भातु हनुमतो मूर्तिः।।4।।
वानरनिकराध्यक्षं दानवकुलकुमुद रविकरस दृक्षम।
दीनजनावनदीक्षं पवनतपः पाकपुञ्जम द्राक्षम्।।5।।
एतत पवन सुतस्य स्त्रोंत यः पठति पञ्जरत्नारव्यम्।
चिरमिह निखिलान भोगानभुक्त्वा श्रीराम भक्तिभाग् भवति।।6।।

हिन्दी अनुवादः—जिनके हृदय से समस्त विषयों की इच्छा दूर हो गई है। (श्रीराम के प्रेम में विभोर हो जाने के कारण) जिनके नेत्रों में आनन्द के आँसू और शरीर में रोमाञ्च हो रहे हैं, जो अत्यन्त निर्मल है, सीतापति श्रीराम चन्द्रजी के प्रधान दूत हैं, मेरे हृदय को प्रिय लगने वाले उन पवन कुमार हनुमान जी का ध्यान करता हूँ।।1।। बाल रवि के समान जिनका मुख कमल लाल है, करूणा रस के समूह से जिनके लोचन—कोर भरे हुए हैं, जिनकी महिमा मनोहारिणी है, जो अञ्जना के सौभाग्य हैं, जीवन दान देने वाले उन हनुमान जी से मुझे बड़ी आशा है।।2।। जो कामदेव के वाणों को जीत चुके हैं, जिनका कमलपत्र के समान विशाल एवं उदार लोचन हैं, जिनका शंख के समान कंठ और बिम्बफल के समान अरूण ओष्ठ हैं, जो पवनदेव के सौभाग्य हैं, एकमात्र उन हनुमान जी की मैं शरण लेता हूँ।।3।। जिन्होनें सीता जी का कष्ट दूर किया और श्री राम चन्द्र जी के ऐश्वर्य की स्फूर्ति को

प्रकट किया, दसाशीश रावण की कीर्ति को मिटाने वाली वह हनुमान जी की मूर्ति दयाकार मेरे सामने प्रकट हैं।।4।। जो वानर सेना के अध्यक्ष है, दानव कुल रूपी कुमुदों के लिए सूर्य की किरणों के समान हैं, जिन्होंने दीनजनों की रक्षा की दीक्षा ले रखी है। पवन देव की तपस्या के परिणामपुंञ्ज उन हनुमान जी का मैं दरस प्राप्त करना चाहता हूँ।।5।। पवन कुमार श्री हनुमान जी को जो इन मंत्रों द्वारा आवाहन करता है, वह इस लोक में चिरकाल तक समस्त भोगों को भोगकर मोक्ष को प्राप्त करता है।।6।।

नोटः—इसके पश्चात् सिंहासन पर श्री हनुमान जी की पूजा करें।

श्री हनुमान जी को आसन समर्पण मंत्र

नोटः— सिंहासन पर बिछे लाल वस्त्र का स्पर्श करते हुए यह मंत्रोंच्चारण करें।

ॐ विचित्र रत्न खचित दिव्यास्तरणसंयुक्रम्।
स्वर्ण सिंहासन चारू गृहीष्व हनुमात्पूजितः।।

भावार्थः—हे रूद्रावतार श्री हनुमान जी। यह सुन्दर स्वर्णमय सिंहासन ग्रहम कीजिए, इसमें विचित्र रत्न जड़े गये हैं। तथा इसपर दिब्य विछावन बिछा हुआं है।

नोटः— हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़े मंत्र समाप्त होते ही जल सिंहासन पर छोड़ दें।

पाद्य समर्पण मंत्र

ॐ सर्वतीर्थ समूदभूतं पाद्यं गन्धदिभिर्युतम।
अनिष्ट हर्त्ता गृहाणेंद भगवन भक्त—वत्सला।।

भार्वाथः—हे भक्तवत्सल भगवान श्री हनुमान जी। यह सारे तीर्थों के जल से तैयार किया गया तथा गंध (चंदन) आदि से मिश्रित पाद्य—जल आप ग्रहण कीजिए।

नोटः— पुनः अरधी से चन्दन युक्त जल सिंहासन पर निम्न मंत्र उच्धारण कर समर्पित करें।

श्री हनुमान जी को अर्ध्य समर्पण मंत्र

ॐ श्रीराम भक्तः नमस्तेस्तु गृहाण करूणाकारी।
अर्ध्यं च फलं संयुक्तं गंधमाल्याक्षतै युतम्।।

भावार्थः—हे श्रीराम भक्त हनुमान जी! आपको नमस्कार है। आप गन्ध, पुष्प, अक्षत और फल आदि रसों से युक्त यह अर्ध्य जल स्वीकार करें।

नोटः— अब निम्न मंत्र उच्चारण करते हुए अरघी (तांबे का चम्मच) से तीन बार सिंहासन पर जल छोड़ें।

श्री हनुमान जी को आचमन कराने का मंत्र

भक्त शिरोमणि हनुमतः नमस्तुभ्यं त्रिदशेरेभिवन्ति।
गंगोदकेन देवेशि कुरूष्वायमंन भगवतः।।

भावार्थः—हे भक्तशिरोमणि श्री हनुमान जी! आपको नमस्कार है। आप गंगाजल से आचमन करें।

नोटः—इसके पश्चात् अरघी में दूध भर कर हनुमान जी प्रतीमा को स्नान करावें।

श्री हनुमान जी को दूध से स्नान कराने का मंत्र

प्रभु कग्म धेनुसमुद् भूंत सर्वेषां जीवन परम्।
पावनं यज्ञाहेतुश्य पयः स्नानार्थ समर्पितम्।।

भावार्थः— हे प्रभों! कामधेनु के थन से निकला, सबके लिए पवित्र, जीवन दायी तथा यज्ञ के हेतु यह दुग्ध आपके स्नान के लिए अर्पित है।

नोटः— अब अरघी में दही लेकर श्री हनुमान जी मूर्ति पर समर्पण करें, अर्थात गंगाजल मिश्रित पतला दही से श्री हनुमान जी को स्नान कराऐं।

श्री हनुमान जी को दही से स्नान कराने का मंत्र

प्रिय पवनसुता पयसस्तु समुदभूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दघ्यानींत मया देव स्नार्नाथ प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थः— हे प्रिय पवन पुत्र हनुमान जी! यह दूध से निर्मित खट्टा, मीठा, चन्द्र के समान उजला दही ले आया हूँ। आप इससे स्नान कीजिए।

नोटः—इसके पश्चात् अरघी में गाय का घी लेकर हनुमान जी को स्नान कराइये।

श्री हनुमान जी को घृत (घी) से स्नान कराने का मंत्र

हे देवः नवनीत समुत्यन्नं सर्वसंतोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थ प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थः— हे श्री हनुमान देव जी! मक्खन से उत्पन्न तथा सबको संतुष्ट करने वाला यह गाय का घृत (घी) आपको अर्पित करता हूँ, इससे आप स्नान करें।

नोटः—अब अरघी में शहद भरकर श्री हनुमान जी को स्नान करावें।

श्री हनुमान जी को शहद से स्नान कराने का मंत्र

केशरिनंदन पुष्प रेणु समुद भूत सुस्वादु मधुंरमधु।
तेज पुष्टिकरं दिब्यं स्नार्नाथ प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थः—हे केशरीनंदन श्री हनुमान जी! पुष्प के पराग से उत्पन्न तेज की पुष्टि करने वाला दिव्य स्वादिष्ट मधु आपके समक्ष प्रस्तुत है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

नोटः— इसके पश्चात् शक्कर घोले रस से श्री हनुमान जी को स्नान करावें।

श्री हनुमान जी को शक्कर से स्नान कराने का मंत्र

रूद्रावतारं इक्षुसारसमुदभूतां शर्करा पुष्टिवा शुभा।
मलापहारिका दिब्य स्नार्नाथ प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थः—हे रूद्रावतार देव! ईख के सार तत्व से यह शर्करा रस निर्मित है, जो पुष्टि कारक, शुभ तथा मैल को दूर करने वाली है, यह दिव्य शर्करा आपकी सेवा में प्रस्तुत है।

नोटः— अब श्री हनुमान जी की प्रतिमा को पुनः गंगाजल से स्नान करावें।

श्री हनुमान शुद्धोदक स्नान मंत्र

गंगा य यमुना चैव गोदावरी, सरस्वती।
नर्वदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थ प्रतिगृहयन्ताम।।

भावार्थः—हे भक्तों के रक्षक! यह शुद्ध जल के रूप में गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्वदा, सिन्धु और कावेरी यहां विद्यमान है। शुद्धोदक स्नान के लिए यह जल ग्रहण करें।

नोटः— अब हनुमान जी प्रतिमा को सुगन्धित इत्र, तेल चढ़ावे।

सुवासित स्नान मंत्र

चम्पाकाशोकसकुल मालती मोगरादिर्भिः।
वासित स्निग्धताहेतु तैल चारू प्रतिद्दहयन्ताम्।।

भादार्थः— हे दयासिन्धु हनुमान जी! चम्पा, अशोक, मौलसरी, मालती और मोगरा आदि से वासित तथा चिकनाहट के हेतु यह तेल और इत्र आप ग्रहण करें।

श्री हनुमान जी को वस्त्र समर्पण मंत्र

अंजनासुतः शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देवलंकारणम वस्त्रभतः शांति प्रचन्छ मे।।

भावार्थः— हे अञ्जनी पुत्र प्रिय हनुमान जी! यह वस्त्र आपकी सेवा

में समर्पित है। यह सर्दी, गर्मी, हवा से बचाने वाला, लज्जा का उत्तम रक्षक तथा शरीर का अलंकार है, इसे ग्रहण कर मुझे शान्ति प्रदान करें।

नोटः—वस्त्र में-लाल नंगोटा, चादर, अंगोछा (सभी लाल रंग का) आदि सिहांसन पर समर्पित करें, इसके पश्चात् भी हनुमान जी प्रतिमा को यज्ञोपवीत चढ़ावे।

श्री हनुमान जी को यज्ञोपवीत समर्पण मंत्र

परमेश्वरः नवभिस्तन्तुभिर्यक्तं त्रिगुनं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहण परमेश्वरः।।

भावार्थः— हे दयालु हनुमान जी! नौं तंतुओं से बना, त्रिगुणा और देवता स्वरूप यह यज्ञोपवीत (जनोऊ) मैंने समर्पित किया है। हे परमेश्वर आप इन्हें ग्रहण करें।

नोटः— इसके पश्चात् श्री हनुमान जी को चन्दन चढ़ावे अर्थात प्रतिमा या तस्वीर में हनुमान जी के मस्तक में रक्त चन्दन (लाल चन्दन) लगावें।

चन्दन समर्पण मंत्र

श्री खंडरक्त चन्दनं दिब्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलपेन रामभक्तः चन्दनं प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थः—हे करूणावतार हनुमान जी! यह दिव्य श्रीखंड रक्त चन्दन (लाल चन्दन) सुगंध से पूर्ण तथा मनोहर है। विलेपन के लिए यह चन्दन स्वीकार करें।

नोटः— इसके पश्चात निम्न मंत्र पढ़ कर सिंहासन पर हनुमान जी का लाल अंक्षत चढ़ावें।

श्री हनुमान जी को अक्षत समर्पण मंत्र

अक्षताश्य भगवतः कंकुभाक्त सुभोभिताः।
मयानिवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरः।।

भावार्थः—हे परमेश्वर हनुमान जी! ये कुकुम (लाल अबीर–गुलाल) में रंगे हुए सुन्दर अक्षत हैं, आपकी सेवा में अर्पित करता हूँ, इन्हें ग्रहण कीजिए।

नोटः— इसके पश्चात् हनुमान जी को लाल फूल या लाल गुलाब, अड़हुल के फूलों की माला समर्पित करें।

श्री हनुमान जी को पुष्पमाला अर्पण मंत्र

देवः भाल्यादीनि सुगन्धीनि माल्यादीनि वै दैवः।
मयाहताणि पुष्पाणि गृहायन्ता पूजनाय भो।।

भावार्थः—हे हनुमान जी! लाल पुष्प–मालती इत्यादि पुष्पों की मालाएं और पुष्प आपके लिए लाया हूँ, आप इन्हें पूजा के लिए ग्रहण करें।

नोटः— इसके पश्चात् मन्दर पुष्प या लाल पुष्प श्री हनुमान जी के सिंहासन पर निम्न मंत्र का उच्चारण कर समर्पित करें।

श्री हनुमान जी को पुष्प अर्पण मंत्र

वन्दारूजनाम्बदार मन्दार प्रिये धीमहि।
मन्दारजानि रक्त पुष्पाणि स्वेताकार्दीन्मुपेहि भो।।

भावार्थः– वन्दना करने वाले भक्तों के लिए मन्दार कल्पवृक्ष के समान कामना पूरक, मंदार प्रिये राम भक्त हनुमान जी। मन्दार तथा लाल पुष्प आपकी सेवा में समर्पित करता हूँ।

नोटः– इसके पश्चात् सिंहासन पर दुर्वादल चढ़ावें।

दूर्वा अर्पण मंत्र

दुर्वाकुरान् सुहरितान्मृतान् मंगल प्रदान।
अनीतांस्तव पूजार्थ गृहाण परमेश्वरः।।

भावार्थः–हे परमेश्वर! आपकी पूजा के लिए मेरे द्वारा अत्यन्त हरे अमृतमय तथा मंगल प्रद दुर्वाकुर(दूभरी) लाए हैं। आप इन्हें ग्रहण करें।

नोटः– इसके पश्चात् सिंहासन पर श्री हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ावें, प्रतिमा पूजन कर रहें हो तो प्रतिमा में तिल से सना सिन्दूर का लेप करें। तस्वीर में श्री हनुमान जी मस्तक में सिन्दूर लगावें।

श्री हनुमान जी को सिन्दूर समर्पण मंत्र

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।
शुभदं कामंद चैव सिन्दूरं प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थः–हे देव! सुन्दर लाल सौभाग्य सूचक, सुखवर्द्धन माता जी के लिए शुभद तथा कामपूरक सिन्दूर आपकी सेवा में अर्पित है। इसे स्वीकार करें।

नोटः– इसके पश्चात् श्री हनुमान जी के सिंहासन पर लाल गुलाल समर्पित करें।

लाल गुलाल अर्पण मंत्र

नाना परिमले र्दब्यौनिर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
गुलाल नामकं चूर्णं गन्धाढ्ंय चारू प्रतिगृहयन्ताम।।

भावार्थः– हे रूद्रावतार देव! तरह–तरह के सुगिन्धत द्रव्यों से निर्मित यह गन्धयुक्त गुलाल नामक उत्तम चूर्ण ग्रहण कीजिए।

नोटः– अब हनुमान जी को सुगन्धित धूप दिखावें।

श्री हनुमान जी को सुगन्धित धूप अर्पण मंत्र

नस्पतिरसोद, भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोढ्यं प्रतिगृहयन्ताम।।

भावार्थः— हे भक्तवत्सल हनुमान जी! वनस्पतियों के रस से निर्मित सुगन्धित उत्तम गंध रूप और समस्त देवि– देवतावों के सूंघने योग्य यह धूप आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

श्री हनुमान जी को दीप दर्शन मंत्र

साज्यं य वर्तिसंयुक्तं वहिनां योजितं मया।
दीप गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
भक्तया दीपं प्रयच्छामि देव हनुमतः।
त्राहि देव निरयाद घोरा हो पञ्चोतिर्नभोस्तुते।।

भावार्थः— हे अञ्जनी सुत श्री हनुमान जी! घी में डूबोईरूई की बत्ती को अग्नि से प्रज्जवलित करके दी आपकी सेवा में अर्पित कर रहा हूँ। इसे ग्रहण कीजिए। यह दीप त्रिभुवन के अन्धकार को मिटाने वाला है। मैं अपने इष्टदेव श्री हनुमान जी को यह दीप अर्पित करता हूँ। हे देव! आप हमें घोर नरक से बचाईये।

नोटः— इसके पश्चात् गुड़ व चूरमा का नैवेद्य अर्पित करें। इस नैवेद्य में नाना प्रकार के फल भी समर्पित कर सकते हैं।

श्री हनुमान जी को नैवेध समर्पण करने का मंत्र

नैवेध गृहयन्ताम् देवः भक्ति में ह्यचलं कुरू।
ईप्सित में वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।
शर्करा खण्ड खाद्यानि दीद्यक्षीर घृताणि च।
आहारं भक्ष्य भोज्यं न नैवेध प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थः— हे भक्तों के रक्षक श्री हनुमान जी! आप यह नैवेध ग्रहण करें तथा मेरी भक्ति को अविचल करें। मुझे वांछित वर दीजिए और परलोक में परम गति प्रदान कीजिए। शक्कर व चीनी से तैयार किए गए खाद्य पदार्थ दहीं–दूध–घी एवं भक्ष्य भोज्य आहार नैवेद्य के रूप में अर्पित है, इसे स्वीकार कीजिए।

नोटः— अब सिंहासन पर पान का बीड़ा चढ़ावें।

श्री हनुमान जी को पान बीड़ा समर्पण मंत्र

ॐ पूंगीफल महदिब्यं नागवल्ली दलैयुर्तम्।
एला चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहयन्ताम्।।

भावार्थः— हे दयासागर हनुमान जी ! महान दिब्य पूंगीफल ईलाइची और चूना आदि से युक्त पान का बीड़ा आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

नोटः— इसके पश्चात् श्री हनुमान जी को नारियल फल सिंहासन — भेंट करें।

नारियल फल अर्पण मंत्र

इंद फलं मया देव स्थापित पुरतस्तव।
तेन में सफलावाति र्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

भावार्थ:– हे सर्वसुख दाता श्री हनुमान जी! यह नारियल फल मैंने आपके समक्ष समर्पित किया है, जिससे हमें जन्म–जन्मांतर तक आप हमें सफलता प्रदान करें.

नोट:– इसके बाद द्रब्य आदि दक्षिणा सिंहासन पर समर्पित करें।

श्री हनुमान जी को दक्षिणा अर्पण मंत्र

हिरण्यगर्भगगर्भस्यं हेम बीचं विभावसोः।
अनन्तं पुण्य फल दमतः शांति प्रयच्छमे।।

भावार्थ:–हे श्री राम सेवक दयानिधान हनुमान जी! सुवर्णहिरण्यगर्भ ब्रह्मा के गर्भ से स्थित अग्नि का बीज है। यह अनन्त पुण्य फलदायक है। परमेश्वर, यह आपकी सेवा में अर्पित है। इसे ग्रहण कर मुझे शांति प्रदान करें।

नोट:– इसके पश्चात् दोनों हथेलियों में पुष्प भरकर सिंहासन पर निम्न मंत्र पढ़कर श्री हनुमान जी को पुष्पांजलि समर्पित करें।

पुष्पांजलि समर्पण मंत्र

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकलोद् भवानि च।
पुष्पांजलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वरः।।

भावार्थ:– हे परमेश्वर! यथा समय पर उत्पन्न होने वाले तरह–तरह के सुगन्धित पुष्प मैंने पुष्पांजलि के रूप में अर्पित कर रहा हूँ, इन्हें स्वीकार कीजिए।

नोट:– अब हाथ जोड़कर–खड़े होकर श्री हनुमान जी सिंहासन के चारों ओर घूम–घूमकर पांच बार "प्रदक्षिणा" करें। प्रदक्षिणा करते समय निम्नलिखित मत्र का उच्चारण करते रहें।

प्रदक्षिणा मंत्र

यानि कानि य पापानि य ज्ञाताज्ञात कृताणि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे–पदे।।

भावार्थ:– हे परम कृपालु श्री हनुमान जी! मनुष्यों से जाने–अनजाने में जो पाप हो जाते हैं, वे पाप आपकी परिक्रमा करते समय पद–पद पर नष्ट हो जाते हैं।

नोट:– इसके पश्चात् गड़वीं में जल भरकर बूंद–बूंद सिंहासन के पास गिरावें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

श्री हनुमान जी को विशेष अर्घ्य अर्पण मंत्र

रक्ष–रक्ष भक्तवत्सल रक्ष त्रिलोक्य रक्षकः।
भक्तानाम भयं कर्त्ता त्राता भाव भवार्णवात्।।

भावार्थः– हे त्रिलोक की रक्षा करने वाले भक्तवत्सल हनुमान जी! रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए। आप भक्तों को अभय देने वाले और भव सागर से उनकी रक्षा करने वाले हैं.

नोटः– इसके पश्चात् निम्नलिखित पाँच श्लोकों का उच्चारण कर श्री हनुमान जी को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

पंचश्लोक नमस्कार मंत्र

श्लोक -1

ॐ नमो वायुपुत्राय श्रीभीमरूपाय धीमते।
नमस्ते रामदूताय कामरूपाय श्रीमते।।
बलिनामग्रगण्याय नमो नः पाहि मारूते।
लाभदोऽसि त्वमेवाशु हनुमन साक्षसान्तक्।।1 ।।

हिन्दी अनुवादः–ॐ भयंकर रूपधारी बुद्धिमान वायुपुत्र श्री हनुमान जी को नमस्कार है। जो स्वोच्छानुसार रूप धारण करने में समर्थ, मोह एवं शोक के विनाशक, सीता जी के शोक के निवारक, अशोक वाटिका के विध्वंशक, लंका को भस्म करने वाले और कुशल वक्ता हैं, उन श्रीमान् राम दूत हनुमान जी को मेरा नमस्कार है। राक्षसों के लिए काल स्वरूप हनुमान। आप शीघ्र ही लाभ प्रदान करने वाले हैं, अतः मुझे यश और विजय प्रदान कीजिए तथा मेरे शत्रुवों का सर्वथा नाश कर दीजिए।।1 ।।

श्लोक-2

गतिनिर्जित वाताय लक्ष्मणप्राणदाय च ।
वनौकशां वरिषाय वशिने बनवासिने।।
तत्त्वज्ञानसुधासिन्धुनिमग्नाय महीयसे।
आञ्जनेयाय शूराय सुग्रीवसचिवाय ते।।2 ।।

हिन्दी अनुवादः– जिन्होंने अपने वेग से वायु को भी जीत लिया है, जो लक्ष्मण के प्राण दाता, बन्दरों में श्रेष्ठ, जितेन्द्रिय, वन में निवास करने वाले, तत्व ज्ञानरूपी, सुधासिन्धु में निमग्न, महाऐश्बर्यशाली और सुग्रीव के सचिव हैं उन शूरवीर अञ्जनानंदन को मेरा नमस्कार है।

श्लोक-3

जन्मृत्युभयध्नाय सर्वक्लेशहराय च।
नेदिष्ठाय प्रेतभूतपिशाच भयहारिणे।।
यातनानाशना युस्तु नमो मर्कटरूपिणे।

यक्षराक्षसशार्दूल सर्पवृश्चिकभीहते।।3।।

हिन्दी अनुवादः— जो जन्म मृत्यु रूपी भय के विध्वंशक , सम्पूर्ण कष्टों के विनाशक, (भगवान श्री राम के) परम निकटवर्ती, भूत–प्रेत और पिशाच के भय के निवारक, पीड़ा के नाशक और यक्ष–राक्षस, सिंह, सर्प एवं बिच्छू के भय को मिटा देने वाले हैं, उन बंदररूप धारी दिव्य हनुमान जी को मेरा नमस्कार है।

श्लोक -4

महाबलाय वीराय चिरंजिवीन उद्दते।
हारिणे वज्र देहाय चोलंग्घितमहाव्यये।।4।।

हिन्दी अनुवादः— जो महासागर को लाँघ जाने वाले, अहंकारियों के गर्वहारी, चिंरजीवी और बलवानों में अग्रगण्य हैं, जिनका शरीर वज्र के समान कठोर है, उन महाबली वीरवर हनुमान जी को मेरा नमस्कार है। हे मारूतिनंदन हमारी रक्षा कीजिए।

श्लोक -5

यशो जयं च में देहि शत्रून् नाशय नाशय ।
स्वाश्रिता नामभयदं य एवं स्तौति मारूतिम्।।
हानिः कुतो भवेतस्य सर्वत्र विजयी भवेत।।5।।

हिन्दी अनुवादः— जो मनुष्य इस प्रकार अपने और अपने परिवार के लिए अभयदाता श्री हनुमान जी का स्तवन करता है, वह सर्वत्र विजयी होता है। भला, उसकी हानि हो ही कैसे सकती है ?

नोटः— हनुमान जी का पूजन सिंहासन लिखित देवी देवताओं का पूजन उस प्रकार करे, जिस पर पीछे पूजन खण्ड में ही ''श्री वरूण देव'' का पूजन किए है। वरूण पूजन में जहाँ पर ''मंत्रअन्तर्गत'' श्री वरूणाय नमः या वरूण देवताओं नमः ''उच्चारण किया गया है, वहाँ पर निम्नलिखित देवी–देवताओं के नामोच्चारण से पूजन करें। सभी देवी–देवताओं का पूजन अलग–अलग नामों से करेंः—''

ग्राम देवता, इष्ट देवता, सीता–राम, राधा–कृष्ण, लक्ष्मी, सरस्वती, नवदुर्गा, काली, शिव, गौरी, आदि पूरूष, अनादि पूरू, अग्नि, कुबेर, अन्नपूर्ण, योगिनी, नवग्रह, सर्व देवता, कुल देवता, कुल देवी।

इसके पश्चात हनुमान जी के द्वादश नामों की पूजा करेंः—

1. हनुमान 2. अञ्जनीसुत 3. वायुपुत्र 4. महाबली 5. रामेष्ट 6. लक्ष्मण प्राणदाता 7. पिंगाक्ष 8. अमित विक्रम 9. उदधिक्रमण 10. सीता शोक विनाशन 11. फाल्गुन सखा 12. दशग्री वदर्पहा

नोटः— इसके पश्चात् ''श्री हनुमान कवच'' का पाठ करें और फिर हवन करें। आरती करें, पश्चात् पूजन कर्म सम्पूर्ण समझे। श्री

हनुमान जी की आरती पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर अंकित है। उपरोक्त वैदिक पूजन विधि पूर्वक जो सम्पन्न करता है, उन्हें समस्त कामनावों की प्राप्ति हो जाती है।

श्री हनुमान अष्टक संकटमोचन कवच

बाल समय रवि भक्ष लियो, तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि से त्रास भये जग के, यह संकट काहुं सों जात ना टारो।
देवन आनि करे बिनती तब, छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहीं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।।१।।

बालि की त्रास कपीस बसै गिरी,
जात महाप्रभु पन्थ निहारो।
चौंकि महामुनि शाप दियो तब,
चाहिए कौन विचार विचारो।।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु को,
तुम दास के शोक निवारो।
को नहि जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो।।२।।

अंगद के संग लेन गये सिय,
खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौं हम सौं जु,
बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो।।
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब,
लाय सिया सुधि प्राण उबारो।
को नहि जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो।।३।।

रावण त्रास दई को सब,
राक्षसि सों कहि शोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु,
जाय महा रचनीचर मारो।।
चाहत सीय अशोक सौं आगि,
सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहि जानत है जग में कपि,
सकंट मोचन नाम तिहारो।।४।।

बान लग्यो उर लछिमन के तब,
प्राण तजो सुत रावन मारो।

लै गृह वैद्य सुषेन समेत तबै,
गिरि द्रोण सुबीर उपारो।।
आनि संजीवनि हाथ दई तब,
लक्ष्मण के तुम प्राण उबारो।
को नहि जानत है जग में कीप,
संकट मोचन नाम तिहारो।।५।।
रावण युद्ध अजान कियो तब,
नाग की फाँस सबै सिर डारो।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल,
मोह भयो यह संकट भारो।।
आनि खगेश तबै हनुमान जू,
बन्धन काटि सुत्रास निबारो।
को नहि जानत है जग में प्रभु,
संकट मोचन नाम तिहारो।।६।।
बन्धु समेत जबै उहिरावण,
लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देवहि पूजि भी विधि सों बलि,
देऊ सबै मिलि मन्त्र बिचारो।।
जाय सहाय भयो तबहि,
अहिरावन सैन्य समेत संहारो।
को नहि जानत हो जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो।।७।।
काज किए बड़ देवन के तुम,
वीर महाप्रभु देख बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को,
जौ तुम सो नहि जात है टारो।।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु,
जो कछु संकट होय हमारो।
को नहि जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो।।८।।

दोहा

लाल देह लाली लसै, अरू धरू लाल लंगूर।
वज्र देह दानव दलन, जै–जै–जै कपि सूर।।

नोटः–श्री हनुमान अष्टम कवच के पश्चात् अब ''हवन'' आरम्भ करें।

षोड़शोपचार पूजन समाप्त

वैदिक हवन विधि खण्ड

हवन का वैदिक महत्व

किसी भी पूजन या अनुष्ठान के बाद हवन करने का विद्यान वेदों में मिलता है, क्योंकि पूजन–जप–यक्ष या अनुष्ठान की सिद्धि के लिए यह आवश्यक अंग है। हवन के बिना कोई भी अनुष्ठान पूर्ण हो ही नहीं सकता। हवन केवल मात्र करने वाले को ही नहीं आपितु हवन की धुँआ सम्पूर्ण प्राणी मात्र को अपना कल्याणकारी प्रभाव देता है।

इस क्रिया में पवित्र समिधा के द्वारा अग्नि विशिष्ट पदार्थों का मिश्रण मन्त्रोच्चारण करते हुए अर्पित किया जाता है।

प्रत्येक बार मंत्र के अंत में–''स्वाहा'' शब्द भी बोला जाता है। यह स्वाहा शब्द का तात्पर्च भस्म होना नहीं, बल्कि हवन वस्तु स्वाहा नाम की देवी को अग्नि के द्वारा पूजन शान्ति के लिए समर्पित की जाती है।

हवन की लकड़ी

हवन कार्य के लिए काष्ठ (लकड़ी) प्रयोग के कुछ विशेष नियम हैं।

हवन में ''आम की लकड़ी'' किसी भी हवन में प्रयोग कर सकते हैं, पूर्ण फल मिलेगा, परन्तु नवग्रह के हवन और विधि अनुष्ठान के हवन में सिर्फ आम की लकड़ी से ही काम नहीं चलेगा, क्योकि उसमें नौ प्रकार की लकड़ियों की आवश्यकता होती है, जिसका नाम है– आम,शनै, खैर, चिरचिरी, आक, गुल्लर, बेल, पलास और कुशा।

हवन हेतु सामग्री

हवन सामग्री में कुछ विशिष्ट वस्तुओं का मिश्रण किया जाता है। जैसे–गाय का घी, जौ, तिल, सरहड़, गुग्गल, अक्षत, शक्कर, मेवा, चन्दन(जावित्री लोंग, दालचीनी, अगरतगर, जायफल, ईलाइची, आंवला, कपूर, इन्द्र जौ, गिलोय, नांग केशर, वालछड़ पटीलपन पवार बीज, मुलहटी, लाल चन्दन, अष्टगंध, केशर, मोचरस, ब्राम्ही, शंखपुष्पी, पुष्कर मूल, मजीठ, धाम पुष्प, खस, गोकरू, शतावर, छरीला और

देवदारू इन वस्तुओं में जो वस्तुएँ ''कोष्टक'' के अन्दर लिखी गई है उन वस्तुओं का मिश्रण पैकेट बाजार में उपलब्ध है। साधक पृथक–पृथक सामग्री न खरीद कर सुविधा हेतु''हवन सामग्री पैकेट '' खरीद कर भी काम चला सकते हैं। परन्तु वह हवन सामग्री का पैकेट शुद्ध और कीड़ों से रहित होना चाहिए।

हवन के प्रकार और पूर्णाहुति का अर्थ

हवन कई प्रकार का होता है। कुछ लोग नित्य ही पूजा के समय हवन करते हैं। विशेष पर्वों, उत्सवों और धार्मिक क्रिया कलापों में भी हवन का प्रचलन है।

मंत्र साधना में धूप–दीप, नैवेध अर्पण करने का नियम है। मंत्र समाप्ति पर (अभीष्ट मंत्र जप संख्या पूर्ण हो जाने पर) उपयुर्क्त वस्तुओं द्वारा हवन क्रिया सम्पन्न की जाती है।

हवन कुंड का निर्माण यथा सम्भव पूजन स्थल के पास ही करना चाहिए। हवन में निर्देशित मंत्र का उच्चारण करते हुए ''स्वाहा'' शब्द ध्वनि के साथ अग्नि में आहुति डाली जाती है।

अन्तिम आहुति को ''पुर्णाहुति'' कहते हैं। पुर्णाहुति के पश्चात् साधक को इस आशय की प्रार्थना करनी चाहिए कि हे देवता, समस्त क्रिया में, मंत्र जप में, पूजन में, मेरी भावना व्यवहार, और आचरण में कहीं कोई त्रुटि हो गई हों तो उसे कृपाकर क्षमा करें।

क्षमा याचना के बाद परम श्रर्दा पूर्वक हवन कुंड से थोड़ी सी भस्म लेकर मस्तक पर धारण करनी चाहिए। भस्म लेपन के गुणों को चिकित्सा विज्ञान ने भी मुक्त कंठ से स्वीकार किया है।

हवन के बाद आरती तत्पश्चात् पुनः–प्रदक्षिणा और विसर्जन का विधानं है। विर्सजन पूजा–पाठ या मंत्र साधना का अन्तिम चरण है। इसके बाद साधक अपनी दैनिक चर्चा के लिए स्वतंत्र हो जाता है। पर इसका अर्थ यह नहीं कि वह अपनी नैतिकता, सद्वृत्ति, आस्तिकता और संयम का परित्याग करके उच्छृंखल जीवन बिताये। नहीं, इन गुणों को तो उसे सदैव ही सुरक्षित रखना चाहिए, क्योंकि उसके पूजन प्रभाव को स्थायी बनाने में अच्छे गुण ही सहायक होते हैं।

हवन की वेदी व कुशकण्डिका निर्माण

पूजन के पश्चात् हवन के लिए चार अंगुल ऊँची एक हाथ परिणाम चौरस वेदी बनावें। उस बेदी को कुशा से संचार करके उस कुशा को ईशान कोण में फेंक देवें।

यह वेदी वालुका (रेता) से हवन कुंड का निर्माण करें तो सर्वोत्तम है। पश्चात् गौं के गोबर से लीप कर खैर के स्त्रुव (चमच्च) से रेखा करके अनामिका और अंगूठे से मिट्टी निकालें, फिर जल को छिड़क कर, कांसे के पात्र में अग्नि लाकर वेदी पर स्थित आम की लकड़ी पर स्थापना करें।

फिर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल और वस्त्रादि लेकर ब्राह्मण को "वैरण दें" फिर वे आदेश करें सकेंत होने पर आप कहें– "करता हूँ"।

ऐसा आचार्य के (पुरोहित के) कहने पर अग्नि से दक्षिण दिशा में शुद्ध आसन देकर पूर्व दिशा में अपभाग कुशाओं को रखकर, उस पर अग्नि की प्रदक्षिणा करते हुए–ब्रह्म स्वरूप कुशा को स्थापित करें, जो हवन कर्म समय के ब्रह्मा होते हैं।

फिर प्रणीता पात्र को आगे करके जल से पूरित करते हुए कुशावों से ढककर, ब्रह्मा का मुख देखकर अग्नि की उत्तर दिशा में कुशावों पर प्रणीता पात्र को स्थापित करें।

इसके अनन्तर कुशावों का परिस्तरण करें– कुशाओं का चौथा हिस्सा अर्थात चार कुशाएँ लेकर अग्नि कोण से ईशान कोण तक, फिर चार कुशाएँ ब्रह्मा से अग्नि तक, फिर चार कुशाएँ नैश्रृत्य से वायब्य तक फिर चार कुशाएँ अग्नि से प्रणीता पात्र तक स्थापित करें। फिर पवित्र छेदन के लिए तीन कुशाएँ बीच में गर्भ भाग वाली दो कुशाएँ परिच्छेदन के लिए रखें।

इसके पश्चात् उपयवन के लिए वेणी रूप तीन कुशाएँ, तीन समिधा, स्त्रुव, धन पात्र, चारू पात्र, पूर्ण पात्र आदि सब वस्तुएं परिच्छेदन के पूर्व, पूरब दिशा में रखें।

इसके बाद पवित्रों को छेदन करने वाली कुशावों से पवित्रों को छेदन करके पवित्र सहित हाथ से प्रणीता पात्र के जल को तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डालकर दोनों अनामिका और अंगूठे से दो पवित्रों को उत्तराय ग्रहण करके जल को तीन बार ऊपर को उछाले, फिर प्रोक्षणी पात्र को बाँए हाथ में लेकर दाहिने हाथ की अनामिका और अंगूठे से दोनों पवित्रों को ग्रहण करके जल को तीन बार उछालें। इसके बाद प्रणीता पात्र के जल से प्रोक्षणी पात्र को जल से स्थापना की हुई वस्तुओं का सेचन करके उसके अनन्तर अग्नि से उत्तर दिशा में और प्रणीता पात्र से दक्षिण दिशा में प्रोक्षणी की स्थापना करें।

पश्चात् घृत पात्र में घृत डालकर अग्नि पर रखें, उसके अनन्तर जलता हुआ तृण आदि लेकर धृत और चरन के ऊपर घुमा कर अग्नि में डालें। तीन बार स्त्रुप को तपावें और सम्मार्जन कुशावों को अग्रभाग करके भीतर को स्त्रुव को तपाकर अपने दाहिने हाथ की ओर स्थापना करें। घृत को अग्नि से उतार कर तीन बार प्रोक्षणी पात्र के जल की

तरह उछाले। फिर देखकर कोई अपद्रव्य हो तो उसे निकाल दें। फिर स्त्रुव का पूजन करें। उपयवन कुशावों को हाथ में लेकर प्रजापति का ध्यान करते हुए तीन समिधावों को घृत में भिगोकर मौन धारण किए हुए अग्नि में डाल दें।

उसके बाद बैठकर दाहिने गोड़े दें दबाए हुए कुशा से ब्रह्मा से अन्वारम्भ कर आचार्य अत्यन्त प्रज्जवलित हुई अग्नि में स्त्रुव से केवल घृत का हवन करें। आहुति देने के बाद स्त्रुव से बचे घी को प्रोक्षणी पात्र में डाल देवें।

हवन मंत्र

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये।
ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदम इन्द्राय इत्याधारो।
ॐ मग्नये स्वाहा, इदमग्नये।
ओम, सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम् इत्याज्यभागौ।
ॐ भूः स्वाहा, इदं वायवे।
ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय।।

ॐ तन्नोऽअग्ने वरूणस्य विद्वान देवस्य हेड़ो अवयासिसीष्ठ यजिष्ठो वह्नितम शोशुचानो विश्वेद्वेशाग्वंसि प्रममुग्धवस्मत् स्वाहा, इदं अग्नि वरूणभ्यां न मम।।1।।

ॐ सत्वन्नोऽग्नेवमो भवेति नेदिष्ठो अस्या उषशो व्युष्टौ। अवयक्ष्वनो वरूणाग्वं ररागो ब्रीहि मुडीकग्वं सुहवो नएधि स्वाहा।।2।।

इद्मग्नी वरूणाभ्यां न मम। ॐ अयाश्याग्नेऽस्य नभिसस्तिपाश्य सत्वभित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्य यानोघेहि्भेषजग्वं स्वाहा।।3।।

इदमग्नये न मम। ॐ ये ते शतं वरूणये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशाः वितताः महान्त स्तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तुमरूतः स्वर्काः स्वाहा।।4।।

इदं वरूणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो मरूद्भ्यः स्वर्केभ्यश्य न मम। ॐ उदुत्तमंवरूण पाशभस्मद्धाधमं विमध्यमग्वं श्रथाय अथावयमा-दित्य व्रते तवानाग सो अदितयेस्याम स्वाहा।।5।।

ॐ गणामां त्वा गणपितग्वं हवामहे प्रियाणांत्वा प्रियपतिग्वं हवामहे निधिनांत्वा निधिपतिग्वं हवामहे व्योमम आहम जानि गर्भधमात्वम जासि गर्भधाम स्वाहा।।6।।

इदं महागणपतये। ॐ ब्रह्मयज्ञान प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरूयो वेन आवः। स वुध्या उपमा अस्य विष्टा सतश्य योनिमश्तश्चविवः स्वाहा।। इंद ब्रहमो।।7।।

ॐ इदं विष्णु विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्। समूदमस्य पांऽग्वं सुरे स्वाहा, इदं विष्णवे।।8।।

ॐ नमस्ते रूद्रमन्यव उतीत इषवे नमः बाहुभ्यामुतते नमः स्वाहा, इंद रूद्राय।।9।।

ॐ अग्नि दूत पुरोदधे हव्यवाह मुपबुवे। देवां आसादयादिह स्वाहा, इदमरमये।।10।।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानुभा निवेशिनी।
यच्छानः सर्म सप्रथा स्वाहा।। इंद पृथिब्यै।।11।।

ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्दं हवे हवे सुहवग्वंशूरमिन्द्रम। ह वयामि शक्रं पुरूहूतमिन्द्रंस्वस्तिनो मधवाधात्विन्द्रः स्वाहा, इदं इन्द्राय।।12।।

ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता वभूव। यत्कामास्ते जुहूभस्तन्नो अस्तुवयं स्याम पतयो रयीणाम स्वाहा।। इंद प्रजापतये।।13।।

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयतिकश्चन ससत्यशिवकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा, इंद दुर्गायै।।14।।

ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वा सप्त विसतिः। ते अग्रे अश्वम युञ्जस्ते अस्मिन्जषमादधुः–स्वाहा, इंद वाचवे।।5।।

ॐ उर्ध्वा अस्यसमिधोभवन्युर्ध्वा शुक्राः शोचीग्वंष्यग्ने द्युमत्तमा सुप्रतिकश्य सुनोः स्वाहा, इंद आकाशाय।।16।।

ॐ अश्विना भेषजं मधु भेषजं न सरस्वती। इन्द्र त्वष्टा यशः श्रियं रूपग्वं रूपमधुःसुते स्वाहा, इदं सरस्वत्यै।।17।।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मै मर्त्यञ्च। हिरण्येणसविता रथेनादेवोयाति भुवनानि षश्चन् स्वाहा, इदं सूर्याय।।18।।

ॐ इमं देवता असपत्नग्वं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते ज्यानाराज्यायेन्द्र स्योन्द्रिय। इममंभुष्य पुत्रभुस्वै विष एधवोमि राजा सोमोऽस्माकं ब्रह्मनाणांग्वें राजा स्वाहा, इंद चन्द्रमसे।।19।।

ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्यां अयम। आपाग्वं रेताग्वं सिजिन्वति स्वाहा, इंद भोमाय।।20।।

ॐ उदवुध्यस्वास्ते प्रतिजागृहित्वभिष्ठापूर्ते सग्वंसुचेथा मयञ्च अस्मिन सधस्थे अध्यु त्तरस्मिन् विश्वे देवाः यजमानश्यं सीदत स्वाहा, इदं बुधाय ।।21।।

ॐ वृहस्पते अति यदर्यो अहर्दिद्युभद्विभाति चक्रतुमज्जनेषु। यद्दीयच्छवस ऋतप्रजातत्तदस्मासु द्रविनं धेहि यित्रम स्वाहा, इदं बृहस्पतये।।22।।

ॐ अन्नातपीर स्त्रुतोरसम्ब्रहाणा व्यपिवतः क्षत्रम्मयः सोमं प्रजापितः ऋतेण सत्यमिनिन्द्रयं विषानग्वं शुक्रमन्धस इन्द्रस्योन्द्रियामिदम्पयोऽ–मृतम्मधु स्वाहा, इंद शुक्राय।।23।।

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तुपीतये। शंय्यो रभाधिस्त्र वन्तु न स्वाहा, इंद शनैश्चराय।।24।।

ॐ कयानिश्यत्र आभुव दूती सदा बुधः सखा। कयाशयिष्ठया वृता स्वाहा, इदं राहवे।।25।।

ॐ केतु कृण्वन्न केतवे पेशेर्भर्या अपेशते। समुसभिदभरजा यथा स्वाहा, इदं केतवे।।26।।

ओम अग्नये स्वाहा। इति स्विष्टकृद होमः।

नोटः– यदि हवन वृहद करने का विचार हो तो–

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम्. उर्वारनरकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात।। स्वाहा।।

गायत्री हवनः–

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।। स्वाहा।।

ॐ सर्वमंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थस्राधिके।
शरण्येत्रयम्बके गौरि नारायाणि नमोऽस्तुत।। स्वाहा।।

ॐ जयन्तीकाली मंगलाकाली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वद्या स्वाहा नमोस्तुते।। स्वाहा।।

ॐ मंगलम् भगवान बिष्णु मंगलम् गरूड़ध्वज मंगलम् पुण्डरीकाक्ष मंगलाय तनो हरिः स्वाहा।।

नोटः–उपरोक्त पांच मंत्रों से इच्छानुसार यथा संख्या में आहुतियां दी जा सकती हैं।

मूर्द्धाण मंत्र

नोटः– इस क्रम में पान, सूपारी, सूखे खड़कते नारियल, और बचा हुआ हवन सामग्री, गुड़ द्रव्य सहित दोनों हथेलियों पर रखकर , खड़े होकर निम्नमंत्र उच्चारण कर हवन कुंड में डालें।

मंत्रः– ॐ मूद्धानं दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानरमृत मजात मग्नि कविग्वं सम्भ्राजमतिथि जनानामसन्ना पात्रं जयन्तु देवाः स्वाहा।।

अग्नि प्रार्थना मंत्र

हाथ जोड़करः–

ॐ श्रद्धां मेंघां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिश्रियं वलम्। तेजः आयुष्यमारोग्यं देहि मेहव्यवाहन।। ततः उपविश्य श्रवेण भस्ममानीय दक्षिणानामिकया गृहीत भस्मना।

ॐ त्र्ययायुषं जमदग्ने इति ललाटे हवन का चन्दन मस्तक पे लगावें।

ॐ कश्यपश्य त्रयायुषं ग्रीवायाम् हवन का चन्दन कंठ में लगावें।

ॐ यदेवेषुत्रया युषं हृदिः– हवन का चन्दन हृदय में लगावें।

ॐ तत्ते अस्तु त्रयायुषं दक्षिण वाहमले–हवन का चन्दन दोनों वाहु में लगावें।

नोटः– अब खड़े होकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए–

हनुमान जी के सिंहासन–हवन कुंड सहित स्थानों में चारो तरफ़ तीन बार घूम–घूम कर प्रदक्षिणा करें। हाथ जोड़कर।

प्रदक्षिणा मंत्र

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि–तानि प्रणशयन्ति प्रदक्षिणो पदे–पदे।।

तत्पश्चात् आरती करें।
नोटः– अन्तिम पृष्ठ पर लिखी आरती प्रार्थना करें।

विसर्जन मंत्र

नोटः– दोनों हाथ में गंगाजल की गड़वी पकड़कर हनुमान जी को पूजन का अन्तिम अर्घ्य प्रदान करें। साथ में निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजाभादाय मामकीम।
यजमानहितार्थाय पनरागभनाय च्।।

इसके पश्चात् हनुमान जी को प्रणाम करें इस प्रकार वृहद हनुमान वैदिक, पूजन सम्पन्न कर फिर प्रसाद का वितरण करें। ब्राह्मण को भोजन करावें और दान दक्षिणा से पूर्ण संतुष्ट कर उन्हें विदा करें।

[(वृहद) हनुमान वैदिक पूजन सम्पन्न]

भगवान शंकर द्वारा रचित श्री हनुमान स्तोत्र

संग्राम में विजय, संकट-शोक विनाश हेतु, भूत प्रेत भय से मुक्ति एवं समस्त दुःखों की समाप्ति हेतु।

नोटः– भक्तो! निम्नलिखित श्री हनुमान कवच की रचना स्वयं भगवान शिवजी ने किए है। ''ब्रह्म पुराण में'' वर्णित है कि

एकदा शुखमासीनं शंकर लोकशंकरम्।
प्रपच्छ गिरिजाकान्तं कर्पूरधवलं शिवम।।1।।

हिन्दी अनुवादः–एक समय आनन्द मग्न बैठे हुए सृष्टि के कल्याण करने वाले कर्पूर गौर वर्णगिरिजाकान्त श्री शंकर जी से पार्वती जी ने पूछा।

भगवन देवदेवेश लोक नाथ ज दगुरो।
शोकाकुलानां लोकानां केन रक्षा भवेद्ध्रुवम्।।2।।

हिन्दी अनुवादः–हे त्रिलोकी नाथ, देवताओं के स्वामी! विश्वनाथ,

जगत के गुरू। शोक में व्याकुल मानवों की रक्षा के लिए कौन सा निश्चित और अति प्रभावशाली उपाय है ?।।2।।

संग्रामे संकटे घोरे, भूतप्रेतादिके भये।
दुःखदावाग्नि सन्तप्तचेतसां दुःख भोगि नाम्।।3।।

हिन्दी अनुवादः— हे प्रभु!संग्राम में, संकटों में एवं भूत प्रेत के भय निवारण में दुखरूपी दावानव से संतप्त मनुष्यों की रक्षा कैसे हो सकती है ? हे परमेश्वर! कृपाकर यह वृत्तान्त हमें सुनाईये।

शिव उवाचः—

श्रुणुदेवि प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया।
विभीषनाय रामेण, प्रेम्मणां दत्तं च यत्पुरा।।4।।

हिन्दी अनुवादः— भगवान शिव बोले—हे देवि! मैं आपसे समस्त लोकों, प्राणियों की रक्षा हेतु एक अद्भुत उपाय बताता हूँ। यह उपाय श्री रामचन्द्र ने सर्व प्रथम विभीषण को बताए थे।

कवच कपि नाथस्य वायुपुत्र स्यधीमतः।
तुहयंते सम्प्रवक्ष्यामि विशेषाच्छृणु सुन्दरि।।5।।

हिन्दी अनुवादः— हे सुन्दरि! अब मैं कपिनाथ हनुमान जी का जो वायु के पुत्र भी कहलाते हैं, बुद्धिमान व प्रकांड विद्वान हैं, ऐसे अञ्जनी सुत को प्रसन्न करने हेतु गुप्त कवच तुमसे कहता हूँ। सुनो।

कवच आरम्भ

श्लोक

ध्यायेद्‌वालदिवाकरधुतिनिभं देवारिदर्पापहम्।
देवेन्द्रप्रमुख प्रशस्त यशंस देदीप्यमानं रूचा।।
सुग्रीवादिसमस्तवानर युंत सुव्यकृतत्वप्रियम।
संरक्तारूणालोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम्।।
उद्यन्मतिण्डकोटि प्रकट रूचियुतं चारूवीरासनस्थम्।
मौञ्जीयज्ञोपवीतारूणरूचिर शिखाशोभितं कुण्डलीकम्।।
भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं वेदनाद प्रमोदम।
ध्यायेद देवं निर्जेय प्लवंगकुलपतिं गोष्पदीभूतवार्द्धिम।।

भावार्थः— प्रातः कालीन सूर्य के समान कान्ति वाले, दानवों के अभिमान को चूर्ण करने वाले, देव इन्द्रादि देवताओं द्वारा गान की हुई परम कीर्तिवान, कान्ति से देदीप्यमान, सुग्रीव आदि अनेकों वानरों से युक्त, सुव्यक्त, तत्व प्रेमी, लाल—लाल नेत्रों वाले पीले वस्त्रों से अलंकृत भगवान पवनकुमार को मैं नमस्कार करता हूँ। करोड़ों सूर्य के समान कान्ति वाले, सुन्दर वीरासन से स्थित, मूंज का मेखला, जनेऊ

(यज्ञोपवीत) तथा रक्त रंग के सुन्दर शिखा से सुशोभित, कुण्डल धारी, भक्तों की कामना पूरित करने वाले, मुनिजनों से पूज्य, वेद की स्तुति से प्रसन्न, लाँघने के समय महासागर भी गाय के खुर समान दूरी हो गया था, ऐसे वानरपति भगवान श्री हनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

(श्लोक)

वज्रांगं पिंगकेशाढ्यं स्र्वणकुण्डल मण्डितम्।
नियुद्धकर्मकुशलं पारावारपराक्रमम्।।
वामहस्ते महावृक्षं दशास्यकरखण्डनम्।
उत्तुंगद्दक्षिणहस्तं ध्यायेत् पवनात्मजम्।।
उद्यदार्णपकान्तिं द्विभुजं च कृताञ्जलिम्।
कुण्डल द्वयसंशोभिमुखाम्भोजं हरिं भजेत्।।

भावार्थः—वज्र के समान शरीर वाले, पीले रंग के केशो वाले, सोने के कुण्डलों से मणिडत, युद्ध विद्या में महा कुशल, समुद्र के समान अथाह पराक्रम वाले पवन पुत्र श्री हनुमान जी का मैं स्मरण करता हूं, रावण की सेना के विनाशक उठाए हुए दाहिने हाथ वाले परम पूज्य हनुमान जी का मैं चिन्तन करता हूं स्फटिक शिला के समान एवं स्वर्ण समान महाकान्तिवान, दो भुजाओं वाले, बाँधे हुए अंजली वाले कुण्डलों से सुशोभित, जिन का मुख कमल के समान लाल है, ऐसे श्री हनुमान जी का मैं अभिवादन करता हूँ।

श्लोक

श्री राम हृदयानन्दं भक्तकल्प महीरूहम।
अभय वरदं दोर्भ्यां कलये मरूतात्मजम्।।
अपराजित नमस्तेऽस्तु नमस्ते रामपूजितम्।
प्रस्थानं च करिष्यामि, सिद्धिर्भवत, सर्वदा।।
यो वाऱां निधिमल्पपल्वलमिवोल्लंघ्य प्रतापान्वितो।
वैदेहिधनशोकतापहरणो वैकुण्टतत्व प्रियः।।
अक्षाधुर्जितराक्षसेश्वरमहादर्पापहारी रणे।
सोऽयं वानरपुंगवोऽवतु सदा युष्मान समीरात्मज।।

भावार्थः— भगवान श्री राम के हृदय को आनंद प्रदान करने वाले, कल्प वृक्ष के समान भक्तों की मनोकामना पूरित करने वाले. दोनों भुजाओं से अभय वरदान देने वाले श्री पवन पुत्र हनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूँ। हे अपराजिते हे भक्तवत्सल हनुमान जी! आप को मेरा बारंबार नमस्कार है। हे प्रभु! जिस किसी भी कार्य हेतु मैं प्रस्थान करूं, उन कार्यों में सदैव हमें सिद्धि प्रदान करें। जो समुद्र को एक छोटे

से सरोवर के समान लांघ कर प्रताप युक्त हुए हैं और जो सीता जी के कठिन शोक रूप ताप के निवारक हैं और जो वैकुण्ठ प्रिय श्री रामचन्द्र जी के प्रिय हैं, रावण के महान अभिमान को नाश करने वाले हैं, ऐसे वायु पुत्र श्री हनुमान–सदैव हमारी व हमारे परिवार की रक्षा करें।

श्लोक

वज्रांग पिंगकेशं कनक मयलसत्कुण्डला क्रान्तगण्डम्।
नानाविद्या निधिनाथं करतलविजृतं पूर्ण कुम्भं दृढ़ं च।।
भक्ताभिष्टाधिकारं वतिरति च सदा सर्वदा सुप्रसन्नं।
त्रैलोक्यत्रांकारं सकलभुवनगं रामदूत नमामि।।
उद्यल्लांगूलकेशं प्रलयजलधरं भीममूर्ति कपीन्द्रं।
वन्दे रामाङ्घ्रिपदभ्रमरपरिवृतं तत्तसारं प्रसन्नं।।
वज्रांग वज्ररूपं कनकभयल सतकुण्डला क्रान्तगण्डम्।
दम्भोलिस्तम्भसारं प्रहरणविकंट भूतरक्षोऽधिनाथम्।।

भावार्थ:– वज्र के समान अंग वाले, पीत रंग के केशों वाले, स्वर्ण कुण्डलों को शोभित अनेका नेक विद्यावों के मालिक दृढ़ तथा पूर्ण कुंभ को करों में धारण करने वाले, भक्तों की कामना सिद्ध करने वाले सर्वदा अति प्रसन्न रहने वाले, समस्त लोकों के रक्षक, सकल भुवनों के स्वामी श्री रामचन्द्र जी के दूत श्री हनुमान जी को हार्दिक नमस्कार करता हूँ। जिनकी लूम (पूंछ) के केश ऊपर की ओर उठे हैं, गाढ़े बादलों की तरह भीमकाय मूर्ति, श्री राम के चरणों में सदैव परिवृत, समस्त तत्वों के ज्ञानी, अति प्रसन्न चित्त वाले, वज्रांग वज्रस्व रूप, चमकीले सोने के कुण्डलों से शोभित कपोल वाले, भूतों एवं राक्षसों के स्वामी कपीन्द्र श्री हनुमान जी की मैं प्रार्थना करता हूँ।

श्लोक

वामे करे वैरिभयं वहन्तं शौलञ्चदक्षे निजकण्ठलग्नम्।
दद्यानमासाद्य सुवर्णवर्ण भजेज्जवलत्कुण्डलरामदूतम।।
पद्मपरागणि कुण्डलत्विसा पाटली कृतकपोल माण्डलम्।
दिव्यदेवकदली वनान्तरे भावयामि पवनानन्दनम्।।
ईश्वरउवाच इति वदति विशेषाद्राधवो राक्षसेन्द्रं।
प्रमुदितवरीचित्तेरावणस्यानुजो – हि।।
रघुवखरदूतं पूजयाभास – भूयः।
स्तुतिभिरति कृतार्थ स्वयं पर मान्यमानः।।

भावार्थ:– बाँए भुजा में दुशमनों के लिए भय धारण कर्ता, निज

कंठ के पास संलग्न, पर्वत को दाहिनी भुजा में धारण करने वाले सोने के रंग के समान कान्तिवान, चमकीले कुण्डलों वाले पवनपुत्र श्री हनुमान जी को मैं हृदय से भजता हूँ। पद्मराग मणिमय कुण्डलों की कान्ति से लाल हो गया है। कपोल मण्डल जिनका, ऐसे देदिप्यमान देवताओं के एवं कदली वनों में स्थित श्री पवनसुत हनुमान जी का मैं स्मरण करता हूँ।

श्री भगवान शिव पार्वती जी से कहते हैं कि इस प्रकार श्री राम चन्द्र जी राक्षसेन्द्र विभीषण जी से विशेष प्रकार से हनुमान जी की महिमा सुना रहे थे और विभीषण जी प्रसन्नचित्त होकर अपने को धन्य मानते हुए स्तुतियों को सुन रहे थे।

हे भक्त शिरोमणि श्री हनुमान जी सदैव हमारे हर तरह से रक्षक बनें, मैं आपको बारंबार नमस्कार सकता हूँ।

भगवान श्री राम जी द्वारा रचित श्री हनुमान कवच की महानता

क्षय, मुर्गी, हिस्टीरिया, कुष्ट रोग निवारण हेतु, समस्त पापों से मुक्ति हेतु, संग्राम में विजय प्राप्त करने हेतु, भूत-प्रेत बाधाओं से मुक्ति हेतु, समस्त शारीरिक रोग निवारण हेतु धन प्राप्ति एवं राजदरबार में सफलता हेतु।

श्री रामचन्द्र उवाच

हनुमत्कवचं यस्तु पढेद्विद्वान विचक्षनः।
स एवं पुरूषश्रेष्ठो मुक्ति मुक्तिच्च विन्दति।।
त्रिकालमेककालं वा पटेन्मासत्रयं सदा।
सर्वान् रिपून, क्षणे जित्वा सा पुमान्धियमाप्नुयात्।।
अर्धरात्रो जले स्थित्वा, सप्तवारं पठेद् यदि।
क्षयापस्मारकुष्टादि तावत्र यनिवारणम।।
अर्क वारेऽश्वत्थमूले स्थित्वा पटति चः पुमान्।
अचलां श्रियमवाप्नोति संग्रामे विजयी भवते।।
यः करे धारयेन्नित्यं स सुमान् श्रियमाप्नुयात्।
विवाहद्यूतकाले च दिव्ये राजकुले रणे।।

हिन्दी अनुवादः– भगवान श्री रामचन्द्र जी कहते हैं कि जो भी मानव प्राणी हनुमत्कवच को पढ़ता है, वह मनुष्य श्रेष्ठ भोग और मोक्ष

को प्राप्त करता है। यह स्तोत्र का पाठ प्रातः काल या त्रिकाल अथवा तीन महीने तक जो भी करता है वह क्षण भर में समस्त शत्रुवों को युद्ध में जीत कर परम शोभायमान होता है। यदि आधी रात के समय जल में खड़ा होकर इस कवच का सात बार पाठ करता है, वह क्षय, मुर्गी, हिस्टीरिया, कुष्ट एवं तीनों–तापों से मुक्त हो जाता है।

शनिवार के दिन पीपल वृक्ष की छाया में यह पाठ करने वाले प्राणी संग्राम में तो विजयी होता ही, साथ ही साथ ''अचल लक्ष्मी'' को भी शीघ्र ही प्राप्त कर लेता है। विवाह में,जुआ खेलने में, उत्सव में, राजा के दरबार में, रणक्षेत्र में जो प्राणी यह कवच धारण करके जाता है, वह अवश्य विजयी होता।

(श्री राम उवाच) श्लोक

भूत प्रेतमहादुर्गे रणे सागर सम्पलवे।
दशावारं पटेद्रात्रौ मिताहारौ जितेन्द्रियः।।
विजयं लभते लोके मानवेषु नराधिपः।
सिहं व्याघ्रभये चोग्रे शरशस्त्रास्त्रपातने।।
श्रृंखलाबन्धने चैव काराग्रहण कारणे।
क्रोधस्तम्भे वह्निदाहे गात्ररोगे च दारूणे।।
शोके महरणे चैव ब्रह्मग्रह विनाशने।
सर्वदा तु पटेन्नित्यं जयमाप्नोत्वसंशयः।।

हिन्दी अनुवादः—भगवान श्री राम चन्द जी कहें हैं कि भूत–प्रेत बाधावों में, कठिन स्थानों में, युद्ध में, महासागर को पार करने में, अल्प भोजन करके ब्रह्मचर्य पालन करते हुए जो भी प्राणी रात्रि के समय 10 बार इस कवच का पाठ करेगा। वह प्राणी उपरोक्त कार्यों में अवश्य विजयी होगा। सिंह, सर्प भय एवं उग्र अस्त्र–शस्त्र की बाधा एवं दुर्घटनावों को भी बिना परिश्रम ही पार कर लेगा। कारगृह से मुक्ति पाने में, राजक्रोध की मुक्ति हेतु, शारीरिक असाध्य रोगों के निवारण हेतु, शोक में, महारण में, ब्रह्म जी द्वारा रचित नवग्रहों के अनिष्ट के निवारण हेतु प्राणियों को भी हनुमत्कवच का पाठ करने से अवश्य ही विजय की प्राप्ति होती है।

श्लोक

भूर्जेषु वसने रक्ते क्षौमे वा तालपत्रके।
त्रिगन्थेनाथवा मस्या लिखित्वा धारयेन्नरः।।
पञ्चसप्त त्रिलौहेवां गोपितं कवचं शुभम्।
गले वा बाहुमूले वा कंटे शिरसि धारितम्।।
सर्वान् कामानवाप्नोति सत्यं श्रीराम भाषितमं।।

हिन्दी अनुवादः— भगवान श्री राम चन्द्र जी कहते हैं कि – भोजपत्र

में, लाल कपड़े में, या लाल रेशमी वस्त्र में अथवा ताल के पत्ते पर नीचे लिखित श्री हनुमान कवच को त्रिगंध से या स्याही से लिखें। इसके बाद पंचधातु या सप्त धातु के ताबीज में भरकर कवच को गले या बाजू में जो भी मानव प्राणी धारण करेगा वह मानव समस्त कामनावों को प्राप्त कर लेगा। यह श्रीराम जी का कहा हुआ वचन सदैव सत्य है।

श्रीराम रचित हनुमान कवच

श्री राम उवाच

हनुमान पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः।
पातु प्रतीच्यां रक्षोघ्नः पातु सागरपारगः।।
उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केशरीप्रियनन्दनः।
अधस्तद्विष्णुभक्तस्तु पातु मध्ये च पावनिः।।
अवान्तरदिशाः पातु सीताशोक विनाशनः।
लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम्।।
सग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः।
भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम्।।
नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवंगेश्वरः।
कपौलो कर्णमूले तु पातु श्रीरामकिंकरः।।
नासाग्रमञ्जुनी सूनुर्वक्त्रं पातु हरीश्वरः।
वाचं रूद्रोपयः पातु जिह्वां पिंगललोचनः।।
पातु दन्तान्फाल्गुनेचटश्चिबुकं दैत्यप्राणहृतः।
पातु कण्टञ्च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः।।
भुजौ पातु महातेजाः करौच चरणायुधः।
नखान्नखायुधः पातु कुक्षिं पातु कपिश्वरः।।
वक्षौ मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः।
लंकाविभञ्जनः पातु पृष्टदेशं निरन्तरम्।।
नाभिञ्च रामदूतोऽसौ कटिं पात्वनिलात्मजः।
गुह्य पातु महाप्रज्ञः सक्थिनी च शिवप्रियः।।
ऊरू च जानुनी पातु लंका प्रासादभञ्जनः।
जंघे पातु महाबाहूर्गल्फौ पातु महाबली।।
अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः।

पदान्ते सर्व सत्त्वांग्यः पातु सर्वांगुलीस्तथा।।
सर्वांगानि महावीरः पातु रोमाणि चात्मवान्।।

हिन्दी अनुवादः—भगवान श्री राम चन्द्र जी कहे हैं कि मानव प्राणी निम्न प्रकार से ''हनुमान कवच'' का पाठ करें:—

हे हनुमान जी, पूर्व दिशा में आप मेरी रक्षा करें। पवन पुत्र दक्षिण दिशा में रक्षा करें। हे राक्षसों के विनाशक, सागर पार तक पश्चिम दिशा में मेरी रक्षा करें।

मेरी रक्षा करें। हे विष्णु भक्त पवन सुत मध्य में रक्षा करें। हे सीता शोक विनाशक अवान्तर दिशावों में आप मेरी रक्षा करें, लंका विदाहक कपीन्द्र सभी आपत्तियों से मेरी रक्षा करें। सुग्रीव सचिव मस्तक की, वायुनंदन माल की एवं दोनों भ्रुवों के मध्य भाग की श्री महावीर रक्षा करें। हे अञ्जनीसुत नासिका के अग्रभाग की आप मेरी रक्षा करें। रूद्रप्रिय वाणी की हरीश्वर मुख की रक्षा करें। हे पिंगलोचन जिह्वा की, फाल्गुनेष्ट दाँतों की रक्षा करें। दैत्यप्राण हृत ठोढ़ी की, सुरपूजित स्कन्धों की दैत्यारि प्रभु कंठ की रक्षा करें। महातेजस्वी भुजावों की, चरणायुक दोऊ हाथों की, नखायुध नखों की, कपिश्वर प्रभु कुक्षिकी रक्षा करें। मुद्रापहारी सीने की, भूजायुघ मेरे वदनों की, लंका विनाशक श्री हनुमान प्रभु मम पुष्ट भाग की रक्षा करें। श्रीराम दूत नाभि की, वायु सुत कटि की, बुद्धिशाली मेरे गुह्यांगों की, शक्तिवान महाप्रभुजंघावों की रक्षा करें। श्री शिव प्रिय मेरे प्राणों की रक्षा करें। लंका को नष्ट–भ्रष्ट क्षण में ही करने वाले महाबाहु गुल्फों एवं घुटनों की रक्षा करें। अचलोद्धारक चरणों की भास्करसन्निभ मेरी समस्त ऊँगलियों की रक्षा करें। हे महावीर हनुमान मेरे रोम–रोम व समस्त अंगों की रक्षा करें।

भगवान श्री राम रचित श्री हनुमान द्वादस नाम स्तोत्र और उसकी महिमा

(धन धान्य महालक्ष्मी प्राप्ति हेतु, रण में विजय प्राप्ति हेतु एवं समस्त दुःखों की समाप्ति हेतु)

(श्री राम उवाच)

ॐ हनुमानञ्जनी सृणुर्वायुपुत्रो महावलः।
श्री रामेष्टः फाल्गुन सखः पिंगाक्षोऽमितविक्रमः।।
उदाधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः।
लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा।।

द्वादशैतानि नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः।
स्वप्नकाले प्रबोधे च यात्रा काले च यः पटेत्।।
तस्य सर्व भयं नास्ति रणे च विजयी भवेत्।
धन धान्य भवेत तस्य दुःख नैव कदाचन्।।

हिन्दी अनुवादः— भगवान श्री रामचन्द्र जी बोले—हे विभीषण जी जो भी मानव प्राणी हनुमान, अञ्जनीसुत, वायु पुत्र, महाबली, रोमेष्ट, फाल्गुन सखा, पिंगाक्ष, अतिविक्रम, उदधिक्रमण, सीता शोक विनाशक, लक्ष्मण प्राणदाता एवं दशग्रीवदर्पहा, इन बारह नामों का सोते—उठते—यात्रा के समय स्मरण करता है, उसे कोई भय नहीं व्याप्त होता, हर स्थान पर विजय पताका लहराता है, उसके पास किसी प्रकार का दुःख टिक नहीं पाता और ऐसे मानव समस्त सुखों को भोगने वाला महालक्ष्मी वान होता है।

श्री हनुमान वन्दना

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित, चंचल मन को स्थिर कर श्री हनुमान भक्ति में डूब जाने हेतु।

सेवक धर्म अगम जोगिन ते, रामदूत बनि राख्यो।
कामिनि कनक दुहुँ दुरी करि, लेश न वित्त अभिलाखयो।।
कञ्चनलंक कलंकसमुझि, किल दे किलकारी दहायो।
किंकर निज परकीय कामिनी, भोगत नहि मन भायो।।
कपि कुञ्जरहि कवच सिध कीनो, जरा सहित तन जंगी।
अमर भयो कि पुरूष अग्रणी, वीर महा बजरंगी।।
पवन पिता से अधिक पराक्रम, अविचल द्रोण उठायो।
एक रजनि में राम लखन हित, उदधि लांघि तट आयो।।
राज्य विभीषण पाय राम ते, लंकेश्वर पद लीनौ।
हार अमोल्य रत्नमय हरि को, तबहि निवेदन कीनौ।।
सियानाथ वह हार समर्प्यों, मारूति के बिन मांगे।
देखत सबके निज दाढ़न ते, भले रत्न जिन भागे।।
वानर केवल जान विभीषण, असुंर करि उपहासी।
फोरि फोरि मणिगण किम फेको, विगत ज्ञान—बनवासी।।
उत्तर दीनो राम उपासक, जातुधान कहा जानो।
राम—नाम बिन अंकित राखस, मणि कंकर सम मानो।।

प्रति उत्तर पुनि देत पलाशन, क़ाया राखत कैसे।
महावीर तब चीर चर्म निज, अवलोकहु कहि ऐसे।।
साढ़ा तीन कोटि तन सब में, रोमावलि अविरेखी।
राम राम प्रतिरोम कूप में, दिव्य नाम ध्वनि देखी।।
अक्षय के क्षय कारक अद्भुत, अक्षय राम अराधै।
तैल सिंदूर लपेट लंगोटो, सकल सम्पदा साधै।।

दोहा

फारि निज वच्छस्थल, बीर हनुमान कहायो।
लीजै लखि मातु! खोलि हृदय बताऊँ मैं।।
लखन समेत सियाराम सुखधाम सदा।
आठौं ज़ाम मेरे उर धाम, धरि ध्याऊँ मैं।।
जौपे अजौं काहूं कैं प्रतिति नाहिं होई हियै।
रोम रोम फारि राम–नाम दिखलाऊँ मैं।।
बात ना बनाऊँ बात साँची करि पाऊँ जौ न।
बात का बढ़ाऊँ, बातजात ना कहाऊँ मैं।।

नोटः—भक्तों! रामस्त्रेही संत मत शस्त्र में वर्णित है कि–एक समय विभीषण जी अपने राजदरबार में,धार्मिक उत्सव के समय में प्रजा जनों को धर्मोपदेश देते समय कहा है–कि– हे प्रजागणों! भगवान की भक्ति में जिस दानव या मानव प्राणी का चित्त स्थिर न हो, मन न लगे तो, हनुमान जी की यह वन्दना नित्य प्रातः काल करने से वह भक्ति के सागर में डूब जाता है, जिससे भक्त और भगवान की दूरी दूर हो जाती है और साधक सम्पूर्ण सुख भोगों को भोगकर मोक्ष को प्राप्त करता है।

श्री भगवान शंकर द्वारा वर्णित श्री पंचमुखी हनुमान कवच

''त्रिलोकेश्वर भगवान शिव ने एक दिन पार्वती जी से बोले कि–हे महादेवि! हमारे एकादश अवतार हनुमान जी के पंचमुखी'' स्वरूप अनुपम–अद्भुत एवं सम्पूर्ण प्राणियों के लिए अति मंगलकारी हैं। ''पंचमुखी हनुमान का ध्यान–पूजन नित्य जितनी बार किया जाए उतना ही चमत्कारिक फल मिलता है''। इस सम्बन्ध में ''ऋगवेद'' में जो वर्णन मिलता है, वो इस प्रकार है।

शिव उवाच श्लोक

पंचमुखः हनुत्कवचं पठित्वा तु महाकवंच पठेन्नरः।
एक बारं पटेन्नित्यं सर्वशत्रु निवारणम्।।
द्विबारं तु पटेन्नित्यं सर्वशत्रु निवारणम्।
त्रिबारं तु पटेन्नित्यं सर्वसम्पत्करं परम्।।
चतुर्वारं पटेन्नित्यं सर्वलोक वशी करम्।
पञ्चवारं पटेन्नित्यं सर्वरोग निवारणम्।।
षड़बारं तु पटेन्नित्यं सर्वकामार्थसिद्धकम्।
सप्तबारं पटेन्नित्यं सर्वदेव वशीकरम्।।
अष्टबारं पटेन्नित्यं सर्वसौभाग्यदायकम्।
नवबारं पटेन्नित्यं सर्वेश्वर्य प्रदायकम्।।
दशबारं पटेन्नित्यं त्रैलोक्यज्ञानदर्शनम्।
एकादशं पटेन्नियं सर्वसिद्ध लभेन्नरः।।

हिन्दी अनुवादः— त्रिलोकेश्वर भगवान शिव जी बोले— हे पार्वती! जो साधक पंचमुखी हनुमान जी का ध्यान नित्य एक बार करता है। उसके सभी शत्रु नष्ट हो जातें हैं।

नित्य दो बार पाठ करने से समस्त महाशत्रुवों का विनाश, तीन बार पाठ करने से अपार सम्पत्तियों की प्राप्ति, चार बार पाठ करने से समस्त मनुष्यों को वश में करने की क्षमता और पांच बार पाठ करने से मानव समस्त जटिल से जटिल रोगों से भी मुक्ति पा लेता है।

जो मानव प्राणी छः बार नित्य ही यह पाठ करता है, वह सभी देवी--देवताओं को अपने वश में कर लेता है तथा जो सात बार पाठ करता है। उसे समस्त कामनावों की सिद्धि प्राप्त हो जाती है। जो नित्य प्रति आठ बार पाठ करता है उसे सभी सौभाग्य की प्राप्ति होती और जो नौ बार पाठ करता है, उसे समस्त ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती हैं।

जो नित्य ही दस बार पाठ करता है उसे तीनों लोकों का ज्ञान प्राप्त हो जाता और जो नित्य प्रति पंचमुखी हनुमान का पाठ ग्यारह बार करता है, उसकी मुट्ठी में समस्त सिद्धियां स्वयं ही आ जाती है।

नोटः—श्री पंचमुखी हनुमान जी का ध्यान निम्न श्लोकों द्वारा करने हेतु भगवान शंकर ने मानव प्राणी को बतलाएं हैं:—

पंचमुखी हनुमान कवच प्रारम्भ

शिव उवाच

पञ्चवक्त्रं महाभीमं कपियूथसमन्वितम्।
बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्वकमार्थ सिद्धिदम्।।

पञ्चास्यभय्युतमनेकवि चित्रवर्ण वक्त्रं।
सशंखविभृतं कविराजवर्यम्।
पीताम्बरादि मुकुटैरपि शोभमानं—
पिंगाक्षभञ्जनिसुतं हयनिशं स्मराभि।।
मर्कटस्य महोत्साहं सर्वशोक विनाशनम्।
शत्रु संहारक चैतत् कवचं ह्यापदं हरेत्।।

हिन्दी अनुवादः—भगवान शिव बोले— हे देवी! समस्त कामनावों के सिद्धि दाता श्री हनुमान जी का पंचमुखी, दशा भुजाओं से युक्त महादिव्य स्वरूप भीमकाय है।

पंचमुखी विचित्र वर्णों के मुख वाले सशंख अनेक वाद्य युक्त कप्रिराजों में महा श्रेष्ठ, पीताम्बर वस्त्र धारण करने वाले चमत्कृत मुकुटों से शोभित, पीले नेत्रों वाले अञ्जनी सुत को मैं हृदय से दिन-रात भजता हूँ। उत्साह को बढ़ाने वाले शत्रुनासक, समस्त शोकों के विनाशक यह पंचमुखी हनुमान कवच निश्चिय ही समस्त विपत्तियों का हरण कर लेता है।

शिव उवाच, श्रृणु देविः-(श्लोक)

पूर्वे वानरसद्वक्त्रं कोटि सूर्य सम्प्रभम्।
दष्ट्राकरालवदनं भृकुटी कुटि लेक्षणम।।
अस्येव दक्षिण वक्त्रं नारसिंहं महद्भुतम।
अत्युग्रतेजोवपूषं भीषणं भयनाशनम्।।
पश्चिमे गारूड़ं वक्त्रं वक्रतुण्ड महाबलम्।
सर्वनाग प्रशमनं सर्वभूतादिकृन्त नम्।।
उत्तरे शूकरं वक्त्रं कृष्ण दीप्तन भोमयम्।
पाताले सिद्धवैताल्ज्वर रोगादि कृन्तम्।।
उर्ध्वं ध्याननं घोरं दानवान्त करं परम्।
चेन वक्त्रेण हे देविः ताटकाया महाहवे।।

हिन्दी अनुवादः— भगवान भोलें नाथ ने कहा— हे देवि पार्वती! सुनिएः— करोड़ों उदीयमान सूर्य के समान प्रकाशित, बड़ी विकट दंष्ट्रावों (दाँतों) ये युक्त, विकराल भृकुटि से कुटिल दृष्टि वाले वानर मुख श्री हनुमान का प्राणी पूर्व दिशा में ध्यान करें। दक्षिण दिशा मुख वाले हनुमान जी का रूप नृसिंह के समान है अतः इनके रूप का ध्यान दक्षिण दिशा मुख करके करे। यह मुख श्री हनुमान जी का विकराल भीषण एवं उग्रते जवान शरीर समस्त दुष्टों का नाशक है।

श्री पवन पुत्र का पश्चिम से गरूड़ के समान मुख है जो कि महान

बलशाली एवं वक्र है तथा समस्त नागों और समस्त भूत-प्रेतादि के विनाशक हैं। उत्तर में बारह (शूकर) के समान श्यामल मुख है जो कि गगन तुल्य भासमान एवं पाताल में बेताल सिद्धि और समस्त रोगों महारोगों का विनाशक है।

हे देवि! उर्ध्व दिशा में श्री हनुमान जी का अश्व के समान मुख है, जो मुख का स्वरूप से हनुमान जी ने ताड़क दानव के युद्ध में उपस्थित होकर समस्त दानवों का विनाश किए थे।

श्लोक

दुर्गतेः शरणं तस्य सर्वशत्रुहरंपरम्।
ध्यात्वा पञ्चमुखं रूदरं हनुमान्तं दयानिधिम्।।
खंगं त्रिशूलं खट्वांगं पाशंमकुशपर्वतम्।
मुष्टौ तु मोदकौं वृक्षं धारयन्तं कमण्डलुम।।
भिन्दिपाल ज्ञानमुद्रां दशमं मुनिपुंगव।
एतान्यायुधजालानि घारयन्तं भयापहम्।।
दिव्यभालाम्बर धरं दिव्य गन्धानुलेपनम्।
सर्वैश्वर्यमयं देवं महाद्धिश्वतो मुखम्।।

हिन्दी अनुवादः— दुर्गति में शरण देने वाले समस्त शत्रुवों के विनाशक, पंचमुख रूद्र दाय के सागर श्री हनुमान जी का मैं ध्यान करता हूँ। खंग, त्रिशूल, खटवांग, पाश, अंकुश, पर्वत एवं मुट्ठियों में मोदक, वृक्ष, कमण्डुल अदि को धारण करने वाले पंचमुखी रूद्रावतार हनुमान जी का ध्यान करता हूँ। हे देवि! भिन्दिपाल, ज्ञान मुद्रा आदि दश आयुधों के धारणकर्त्ता एवं भयनाशक श्री हनुमान को मैं नमस्कार करता हूँ, इस प्रकार मानव प्राणी इनका ध्यान करें। दिव्य मोला, दिव्य वस्त्राधारी, दिव्य चन्दन लेपधारी समस्त ऐश्वर्यों को देने वाले श्री हनुमान जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

उपरोक्त पंचमुखी हनुमान कवच का इस प्रकार ध्यान करने से मानव समस्त ऐश्वर्यों का स्वामी हो जाता है।

दोहा

मंजुल मंगल मोदमय, मूरति मारूत पूत।
सकल सिद्धि कर कमलतल, सुमिरत रघुबर दूत।।

धीर–वीर रघुवीर प्रिय, सुमिरि समीर कुमार।
अगम–सुगम सब काज करू, करतल सिद्ध विचारू।।
वीर वखानौं पवन सुत, जानत सकल जहान।
धन्य धन्य अञ्जनी तन्य, संकट हर हनुमान।।

चौपाई

जय–जय–जय हनुमान अंड़गी। महावीर विक्रम बजरंगी।।
जय कपीश जय पवन कुमारा। जय जगवन्दनशील अगारा।।
जय उद्योत अमल अविकारी। अरि मर्दन जय–जय गिरिधारी।।
अञ्जनी उदर जन्म तुम लीन्हा। जय जैकार देवतन कीन्हा।।
बजी दुन्दुभी गगन गंभीरा। सुरमन हर्ष असुरमन पीरा।।
काँपे सिन्धु लंक शंकाने। छूटहिं बंदि देवतन जाने।।
ऋृषी समूह निकट चली आए। पवन तनय के पद सिर नाचे।।
बार–बार स्तुति कर नाना। निर्मल नाम धरा हनुमाना।।
सकल ऋृषिन मिलि असमत ठाना। दीन्ह बताय लाल फल खाना।।
सुनत बचन कपि अति हर्षाने। रविरथ ग्रसा लाल फल मानो।।
रथ समेद रवि कीन्ह अहारा। शोर भयो तहँ अति भयकारा।।
बिन तमारि सुर मुनि अकुलाने। तब कपीश की स्तुति ठाने।।
सकल लोक वृत्तान्त सुनावा। चतुरानन तब रवि उगिलावा।।
कहेऊ बहोरि सुनहु बलशीला। रामचन्द्र करिहैं बहु लीला।।
तब तुम बलकर करब सहाई। अबहिं बसौं कानन में जाई।।
अस कहि विधि निजलोक सिधारा। मिले सखन संग पवनकुमार।।
खेलहि खेल महातरू तोरहिं। केलि करहिं बहु पर्वत फोरहिं ।।
जेहि गिरिचरण देत कपि धाई। थलसौं घसकि रसातल जाई।
कपि सुग्रीव बालि की त्रासा। निरखत रहे राम मगु आसा।।
मिले राम लै पवनकुमारा। अति आनंद समीर दुलारा।।
पुनि मुँदरी रघुपति सों पाई। सीता खोज चले कपिराई।।
शतयोजन जलनिधि विस्तारा। अराम अगाध देवमन मारा।।
बिन श्रम गोखुर सरीश कपीशा। लाँधि गये कपि कहि जगदीशा।।
सीता चरण शीश तिन नावा। अजर अमर कर आशिष पावा।।
रहे दनुज उपवन रखवारी। इकते एक महभट भारी।।
तिनहिं मारि उपवन करि खीसा। दहेऊ लंक काँपेऊ दसशीशा।।
सिया सुधि लै पुनि फिर आए। रामचन्द्र के पद शिर नाये।।
मेरु विशाल आनि पलमाही। बाँधा सिन्धु निमिष इक माहीं।।
भे फणीश शक्तीवश जबहिं। राम बिलाप कीन्ह बहु तबहीं।।
भवन समेत सुषेणहिं लायें। पवन संजीवन को पुनि धाये।।
मगमँह कालनेमि कहँ मारा। सुमट अमित निशिचर संहारा।।

आनि संजीवन शैला समेता। धीर दीन्हों जहँ कृपा निकेता।।
फणिपति करे शोक हरि लीन्हा। बर्षि सुमुन सुर जै जै कीन्हा।।
अहिरावन हरि अनुज समेता। लइगो जहँ पाताल निकेता।।
तहाँ रहै देवी सुस्थाना। दीन्ह चहै बलि काढ़ि कृपाना।।
पवन तनय तहँ कीन्ह गुहारी। कटक समेत निशाचर मारी।।
रीछ कीशपति जहाँ बहोरी। राम लखन कीन्हेसि इक ठौरी।।
सब देवन की बन्दि छुड़ाई। सो कीरति नारद मुनि गाई।।
अक्ष कुमार दनुज बलवाना। ताहि निपात्यो श्री हनुमाना।।
कुम्भकरण रावण कर भाई। ताहि मुष्टिका दी कपिराई।।
मेघनाद पर शस्त्रहिं मारा। पवन तनय सम को बरिआरा।।
मुरहा तनय नरान्तक जाना। पलमँह ताहि हता हनुमाना।।
जहँ लगि नाम दनुजकरि पावा। पवनतनय तेहि मारि खसावा।।
जय मारूतसुत जन अनुकूला। नाम कृशानु शोकसमतूला॥
जेहिं जीवन कहँ संशय होई। अधसमेत तेहिं संकट खोई।।
बन्दी परै सुमिर हनुमाना। गदागरू लै चल बलवाना।।
यम कहँ बाँधि वामपद दीन्हा। मृतय जिवाय हालबहु कीन्हा।।
सो भुजबल कहँ कीन्ह कृपाला। अछत तुम्हार मोर असहाला। ।
आरतहरन नाम हनुमाना। शारद सुरपति कीन बखाना।।
संकट रहै न एक रती की। ध्यान धरै हनुमान वती की।।
धावहु देखि दीनता मोरी। काटहु बन्दि कहौं कर जोरि।।
कपिपति वेग अनुग्रह करहू। अतुर आय दास दुख हरहु।।
राम शपथ मैं तुमहिं खवाई। जो न गुहारि लागि शिव जाई।।
बिरद तुम्हार सकल जग जाना। भवभञ्जन सज्जन हनुमाना।।
यह बन्धन कर केतिक बाता। नाम तुम्हार जगत सुख दाता।।
करहु कृपा जय जय जग स्वामी। बार अनेक नमामि–नमामि।।
भौमवार करि होम विधाना। धूप दीप नैवेध सुजाना।।
मंगलदायक की लव लावै। सुरनर मुनि तुरतहि फल पावै।।
जयति जयति जय जय जगस्वामी। समरथ पुरूष कि अन्तर्यामी।।
अञ्जनी तनय नाम हनुमाना। सो तुलसी के कृपा निधाना।।

दोहा

जय कपीश सुग्रीव की, जय अंगद हनुमान।
राम लखन जय जानकी, सदा करहु कल्याण।।
बन्दी मोचन नाम यह, भौमवार वर मान।
ध्यान धरै नर पाव ही, निश्चय पद निर्वाण।।
जो यह पाट पढ़े नित, तुलसी कहे विचारि।
परे न सकंट ताहि तन, साखी है त्रिपुरारि।।

(हनुमद्‌बन्दी मोचन सम्पूर्ण)

महर्षि सनत्कुमार जी द्वारा वर्णित "श्री मारूति कवच (ताबीज)"

मोहनाशक, विजय प्रदाता, भयानक उपद्रव, भूतप्रेतादि-शत्रु, दुःखों के नाश एवं पुत्र, विद्या-बुद्धि प्राप्ति हेतु।

भक्तगणों! यह परम पावन सुख प्रदाता, दुःख हर्त्ता, पुत्र, विद्या, बुद्धि, विजय, सम्मान, धन प्रदाता कवच का वर्णन—श्री नारद पुराण में मिलता है। इस कवच का वर्णन करते हुए श्री सनत्कुमार महर्षि जी देवर्षि नारद जी से कहते हैं— हे देवर्षि! जो भी प्राणी यह कवच लिखकर गले या बाजू में, ताबीज में भरकर धारण करता है, उसे समस्त सुख भोगों की प्राप्ति, पुत्र व लक्ष्मी प्राप्ति, बाधावों का नाश, भूत—प्रेतादि, नवग्रह के अनिष्टों का निवारण, विद्या बुद्धि, यश, मान,सम्मान व सम्पूर्ण सफलताओं की प्राप्ति हो जाती है। इस अति शक्तिशाली कवच का वर्णन स्वयं भगवान—रामचन्द्र जी ने हमसे अयोध्या नगरी में किए थे, जो इस प्रकार है।

नोटः— पाठकों! श्री सनत्कुमार जी द्वारा वर्णित "मारूति कवच का वर्णन" पाठको की सुविधा हेतु हिन्दी में लिख रहा हूँ, जिससे पाठ करने में या कवच लिखकर—ताबीज में भरकर धारण करने में श्री हनुमान जी के भक्तों को सरल हो जाय। गले या बाजू में धारण करने हेतु इस कवच को भोजपत्र या सादा कागज पर, लाल रंग की स्याही, अष्ट गंध अथवा रक्त चन्दन की स्याही से लिखें।

कवच आरम्भ

पूर्व दिशा में श्री हनुमान जी रक्षा करें।
दक्षिण दिशा में श्री पवनपुत्र जी रक्षा करें।।
पश्चिम दिशा में रावन पुत्र नाशक रक्षा करें।
उत्तर दिशा में सागर लाँघने वाले रक्षा करें।।
नमस्कार श्रीराम दूत जी सदा मेरी रक्षा करें।।1।।
उर्ध्व दिशा में केशरी नंदन कपिश्रेष्ठ रक्षा करें।
अधोभाग में विष्णु भक्त जी, हर क्षण ही रक्षा करें।।
मध्य भाग में रूद्रावतार जी, पल—पल ही रक्षा करें।
लंकादहन करने वाले सदा मेरी रक्षा करें।।
हे सुग्रीव के मंत्री जी, मस्तक की रक्षा करें।।2।।
वायुनन्दन सदा मेरे, भालों की रक्षा करें।।
महावीर जी भौहों की, निरन्तर ही रक्षा करें।

वानर गण के स्वामी जी, नेत्रों की रक्षा करें।।
श्री राम सेवक कपोलों और कानों की रक्षा करें।
नमस्कार श्रीराम दूत जी, सदा मेरी रक्षा करें।।3।।
अञ्जनी पुत्र नासिकी की, आप सदा रक्षा करें।
हे खलमर्दन मेरे मुख की, प्रभु आप रक्षा करें।।
हे दानवों के महाशत्रु, कंठ की रक्षा करें।
महातेजस्वी भुजाओं की, सदा मेरी रक्षा करें।।
नमस्कार श्री राम दूत जी, देव मेरी रक्षा करे।।4।।
नखरूपी अस्त्र वाले, नखों की रक्षा करें।
कपियों के स्वामी कुक्षिभाग की, दयाकर रक्षा करें।।
श्रीराम मुद्रिका ले जाने वाले, सीने की रक्षा करें।
भुजारूपी आयुध वाले, पार्श्वभागों की रक्षा करें।
नमस्कार श्रीराम दूत जी, सदा मेरी रक्षा करें।।5।।
लंका को भूजने वाले, पीठ की रक्षा करें।
हे वायुनंदन नाभि और कमर की रक्षा करें।।
महाज्ञानी अतिथिप्रिय, जांघों की रक्षा करें।
कपिश्रेष्ठ पिंडलियों की, सदा मेरी रक्षा करें।।
महाबलि दोऊगुल्फों की, दयानिधि रक्षा करें।
नमस्कार श्री राम दूत जी, सदा मेरी रक्षा करें।।6।।
पर्वत को उठाने वाले, चरणों की रक्षा करें।
अति बलशाली हनुमान, हर अंगों की रक्षा करें।।
पंचमुखी हनुमान देवजी, धन–जन सुख सम्पाति भरें।
रवि को ग्रसने वाले वीर जी, विपतियों को सदा हरें।।
नमस्कार श्री राम दूत जी, सदा मेरी रक्षा करें।।7।।
हे शिवनन्दन हनुमान जी, विद्या बुद्धि ज्ञान भरें।
विराट रूपी कपि स्वामी जी, युद्धों में रक्षा करें।।
नभ, थल, जल, पर्वत पे मेरी, नाथ सदा रक्षा करें।
भूत–प्रेंतादि भय से हनुमान देव,. सदा रक्षा करें।।
नमस्कार श्री राम दूत जी, प्रभु मेरी रक्षा करे।।8।।
हर भय व हर कष्टों से, रोगों से रक्षा करें।
रूद्र एकादश हनुमान जी, हर क्षण ही रक्षा करें।।
भयानक जन्तु के संघारक, सर्वरूप रक्षा करें।
तीनों कालों में हनुमान जी, सदा मेरी रक्षा करें।।
नमस्कार श्री राम दूत जी, प्रभु मेरी रक्षा करें।।9।।

(महर्षि सनत्कुमार वर्णित मारुति कवच समाप्त)

महर्षि सनत्कुमार जी द्वारा रचित असाध्य कार्य के सिद्ध कराने वाली श्री हनुमान नमस्कार प्रार्थना

पाठको!

महर्षि सनत्कुमार जी द्वारा रचित नमस्कार वन्दना नित्य प्रातः काल स्नान से पवित्र होकर हनुमान जी प्रतिमा या तस्वीर के समक्ष धूप–दीप जगाकर करने से असाध्य कार्य भी शीघ्र सिद्ध हो जाता है। उसे पद–पद पर विजय की प्राप्ति होती है और समस्त कष्टों से छुटकारा पाकर, धन–जन पुत्र–पौत्रादि का सुख भोगकर साधक मोक्ष को प्राप्त करता है।

इस ''नमस्कार वन्दना'' का ''मूल स्वरूप'' श्री सनत्कुमार जी द्वारा रचित (संस्कृत भाषा) पहले वर्णित कर रह हूँ, फिर ''हिन्दी अनुवाद'' साधक की सरलता हेतु वर्णित करूँगा। साधक यह वन्दना संस्कृत या हिन्दी रचित किसी भी स्वरूप का प्रयोग कर सकते हैं।

नमस्कार वन्दना का मूल श्लोक

(महर्षि सनत्कुमार उवाच) :–

ऋग्ययजुः सामरूपश्य प्रणावस्त्रिवृदध्वरः।
तस्मैं स्वस्मै च सर्वस्मै नतोऽस्मयात्मसमाधिना।।1।।
अनेकानन्त ब्रह्माण्डधृते ब्रह्मास्वरूपीणें।
समीरजात्मने तस्मै नतोऽस्मयात्मस्वरूपिणो।।2।।
नमो हनुमते तस्मै नमो मारूत सूनवे।
नमः श्री राम भक्ताय श्यामाय सहते नमः।।3।।
नमो वानरवीराय सुग्रीव सख्य कारिणे।
लंकाविदहनायाथ महासागर तारिणे।।4।।
सीता शोक विनाशाय राममुद्राधराय च।
रावणान्तनिदानाय नमः सर्वोत्तरात्मने।।5।।
मेघनादभखध्वंसकारणाय नमो नमः।
अशोक वन विध्वंशकारणाय जय दायिने।।6।।
वायु पुत्राय वीराय आकाशोदर गामिने।
वनपालशिरश्छेत्रे लंकाप्रासाद भञ्जिने।।7।।
ज्वलत्काञ्चनवर्णाय दीर्घलाडं गूल धारिणे।
सौमित्रीजयदात्रे च रामदूताय ते नमः ।।8।।
अक्षस्य वधकत्रै च ब्रह्मशस्त्र निवारिणे।
लक्ष्मणांगमहाशक्तिजातक्षत विनाशिने।।9।।

रक्षोध्नाय रिपुध्नाय भूतध्यानाय नमो नमः।
ऋृक्षवानरवीरौधप्रासादाय नमो नमः।।10।।
परसैन्यवलध्नाय शास्त्रास्त्र धनाय ते नमो नमः।
विषध्नाय द्विषधनाय भयध्नाय नमो नमः ।।11।।
महारिपुभयध्नाय भक्तत्राणैक कारिणे।
पर प्रेरित मंत्राणां यन्त्राणां स्तम्भ कारिणे।।12।।
पयः पाषाणतरण कारणाय नमो नमः।
बालर्कमण्डग्रास कारिणे दुःख हारिणे।।13।।
नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च।
विहंगमाय शर्वाय व्रजदेहाय ते नमो नमः।।14।।
प्रतिग्रामस्थितायाथ भूतप्रेतवधार्धिने।
करस्थशैलशस्त्राय रामशस्त्राय ते नमः।।15।।
कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्ति रताय च।
दक्षिणाशाभास्कराय सतां चन्द्रोदयात्मने।।16।।
कृत्याक्षतव्यथाध्याय सर्वक्लेश हराय च।
स्वाम्याज्ञार्पाथ संग्राम सख्य सञ्जयकारिणे।। 17।।
भक्तानां दिव्यवादेषु संग्रामे जयकारिणे।
किल्किला बुबुकाराय घोर शब्द कराय च।।18।।
सर्वाग्नि व्यधिसंस्तम्भकारिणे भयहारिणे।
सदा वनफला हारसन्तृप्ताय विशेषतः।।19।।
महार्णवशिलावद्धसेतुबन्धाय ते नमो नमः।
इत्येतत्कथिंत विप्र मारूतेः कवचं शिवम्।।20।।

काव्यरूप हिन्दी अनुवाद—

हे सर्वव्यापी पवन पुत्र, नमस्कार है।
तीनों वेदों के स्वरूप कपि, नमस्कार है।।1।।
ब्रह्माण्ड के धारणकर्त्ता, ब्रह्मरूप हो।
वायुरूप और आत्मा स्वरूप हो।।
राम भक्त तू महान, श्याम रूप हो।
श्री राम व सुग्रीव के, मैत्री स्वरूप हो।।
लंकापुरी जलाने वाले, नमस्कार है।
हे सर्वव्यापी पवनपुत्र, नमस्कार है।।2।।
महासागर के तूं प्रभु जी, लाँधक हो।
मैया सीता के शोक के, विनाशक हो।।
राम मुद्रिका सिया को पहुँचाये तूं।
दानवों के कपिदेव जी नाशक हो।।
करूँ वन्दना हे महावीर, बार बार है।
हे सर्वव्यापी पवनपुत्र, नमस्कार है।।3।।

मेघनाद यज्ञ के तूं, विध्वंशक हो।
अशोकवाटिका के, क्षण में ही नष्टक हो।।
हो गगन बीच में तू, उड़ने वाले,।
लंकापुरी के महलों के, भञ्जक हो।।
हे विजय प्रदाता, विन्य बार बार है।
हे सर्वव्यापी पवनपुत्र, नमस्कार है।।4।।

तप्त स्वर्ण के समान, कान्ति व्राले हो।
मेघनाद को मूर्छित करने वाले हो।।
बचाए लक्ष्मण को तूं ही ब्रह्मअस्त्रों से।
दानवों के संघार, करने वाले हो।
भूतों रीछों के विधाता, तूझे नमस्कार है।
हे सर्वव्यापी पवनपुत्र, नमस्कार है।।5।।

शत्रु भय को सदा ही मिटाते हो।
अपने भक्तों की भक्ति बरसाते हो।।
सारे अस्त्र शस्त्र भय के नाशक हो।
सर्व बिपत्ति को सदा ही हटाते हो।।
हे रूद्र देव स्तुति ये बार-बार है।
हे सर्वव्यापी पवनपुत्र, नमस्कार है।।6।।

प्रभु शिवस्वरूप, वज्रदेह धारी हो।
हो अमर कपि सदा ही ब्रह्मचारी हो।।
नख-दाँत के आयुध तुने धारी हो।
निज भक्तों के आप मंगलकारी हो।।
मांगता हूँ गदाधारी, तेरो प्यार है।
हे सर्वव्यापी पवनपुत्र,नमस्कार है।।

।। महर्षि सनत्कुमार जी द्वारा रचित
हनुमान वन्दना का काव्यरूप समाप्त।।

प्रार्थना का लाभ

''प्रार्थना का अर्थ है'' – भगवान की स्तुति, अराधना और उपासना करना। मानव जीवन की सफलता के लिए भगवान से मदद मांगना, उनका धन्यवाद करना और अपने आप को समर्पण करना, यह सब कर्म प्रार्थना के अन्तर्गत आते हैं।

आत्मा और प्रमात्मा मे कोई खास भेद नहीं है, मानव जीवन का उद्देश्य तो केवल अपने निजी अंहकार को समाप्त करके ईश्वर से एकता का अनुभव करना ही है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्रार्थना एक

बहुत ही उत्तम साधक है। किसी पुरूष के लिए यह साधन लम्बे समय का होता है, किसी के लिए थोड़े समय का। जो भी प्रार्थना मनुष्य के हृदय की गहराई से निकलती है उसका मन पर प्रभाव बहुत तीव्र रूप से पड़ता है। परमात्मा सबकी आवश्यकताओं को पूरा करता है, वह सब भाषाओं को जानता है। इसलिए प्रार्थना के द्वारा की गई सब बातों को सुनता है और उपासक को उसका पूरा–पूरा फल देता है। उपासना भी एक प्रकार का कर्म ही है, इसलिए मनुष्य को इसका फल अवश्य मिलता है।

''ईश्वर'' सदा हमारे संग रहता है। लेकिन हम सब इन आँखों से उन्हें देख नहीं सकते। जब हम प्रार्थना करते हैं तो वह हमारे और भी निकट हो जाता है। वह जब भी मिलता है खामोशी, शान्ति और एकान्त में ही मिलता है। इसलिए प्रातः काल के समय किसी पवित्र एकान्त स्थान में बैठकर की गई प्रार्थना और उपासना उत्तम दर्जे की होती है और उसका मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

जब मनुष्य ईश्वर को सच्चे दिल से याद करता है, उसको पुकारता है, अपने रहन–सहन स्वभाव और चाल–चलन को सुधारने और अपने कष्टों को दूर करने के लिए प्रमात्मा से प्रार्थना के द्वारा मदद मांगता है। तो ईश्वर प्रसन्न होकर उसके मनोरथ को पूरा करता है। प्रार्थना से मनुष्य का मन जितना निर्मल और शुद्ध होता है। और किसी साधना से नहीं होता। प्रतिदिन नियम पूर्वक प्रार्थना करने से उपासक का अहंकार पिघलने लगता है और धीरे–धीरे सब सांसारिक बंधन ढीले होते जाते हैं। जो प्रार्थना सांसारिक पदार्थों को पाने के लिए की जाती है, वह तुच्छ और हल्के दर्जे की होती है। अपने मानसिक दोषों को दूर करने, आध्यात्मिक उन्नति अथवा सभी दूसरे प्राणियों और देश की भलाई के लिए जो प्रार्थना की जाती है, वह बहुत उत्तम है।

प्रार्थना में ईश्वर से कुछ मांगने को अपेक्षा भगवान को अपना तन–मन और धन सम्पत्ति आदि पदार्थों को इसके अर्पण करना ही बुद्धि मानी है। वास्तव में ईश्वर से सच्चा प्रेम ही प्रार्थना का पूरा सार और मानव जीवन का असली उद्देश्य है। मानव शरीर रूपी तेल केवल भगवत प्रेम के दीप को सदा प्रज्जवलित रखने के लिए ही सुरक्षित रखना चाहिए। ईश्वर से प्रेम दूसरों को दिखाने की वस्तु नहीं बल्कि इसका सम्बन्ध तो खामोशी, एकान्त और दिल की गहराई से है।

प्रार्थना से लाभ उठाने के लिए मन में शान्ति, नम्रता, सेवा, समानता, सरलता, क्षमा, दया जैसे शुभ गुणों को धारण करने की बहुत जरूरत होती है यदि प्रार्थना में शुद्ध और सच्चे मन से ईश्वर को अपना सब कुछ (तन,मन और धन इत्यादि) न सौंप दिया जाय तो प्रार्थना बेजान ही रहेगी।

जो लोग अपने दोषों को दूर करने के लिए प्रार्थना के द्वारा ईश्वर से सहायता मांगते हैं, लेकिन दूसरों के दोषों को ही देखते रहते हैं, उनको प्रार्थना का पूरा–पूरा फल नहीं मिलता। यदि परमात्मा हमारे दोषों को माफ कर देता है तो हमें भी चाहिए कि हम दूसरों के दोषों और अवगुणों को माफ करते रहें।

दान से लाभ

''दान'' भी धर्म का एक मुख्य अंग है। दान का अर्थ है– ''देना''। जो कुछ भी भगवान ने दिया है उसका कुछ भाग दूसरों को भलाई के लिए खर्च करना। वैसे तो दान देने वाला और लेने वाला भी ईश्वर का ही रूप है क्योंकि वह सर्वव्यापी है। फिर भी जो मनुष्य दूसरों को जो कुछ देता है। उसको उसका कई गुना फल प्राप्त होता है।

दानी को किसी चीज की कमी नहीं रहती। दान एक''बीज'' की तरह है। जिसका फल कई गुना बढ़ जाता है। जो कई जीवन भर धन जोड़ने में ही लगा रहता है। न अपनी और न किसी दूसरे की भलाई में इसे खर्च करता है। तो वह बोझ उठाने वाले मजदूर की तरह है। दान की एक ऐसी पूंजी है जो परलोक में भी मनुष्य की सहायता करती है। धन कमाना अच्छा है, परन्तु नेक कमाई से। और उस कमाई से थोड़ा दूसरों की भलाई में लगाना शुभ काम है। इसका बहुत उत्तम फल मिलता है। जो धन दूसरों की भलाई में लगता है। वही अपना धन है। बाकी तो दूसरे मुफ्त में ही हथिया लेते हैं। परलोक में केवल वही धन काम आयेगा जो हमने दान के रूप में जरूरतमंदों को दिया है। ''अपनी कमाई से कम से कम दशवां भाग दान में अवश्य लगाना चाहिए। यह वेद का आदेश है''।

भगवान कृष्ण ने गीता के सत्रहवें अध्याय में कहा है कि जो दान अपना कर्तव्य समझ कर पात्र को ठीक समय पर दिया जाय वह''सात्विक'' दान है। जो किसी कामना को सामने रखकर या अपने स्वार्थ के लिए दिया जाता है। वह ''राजसिक'' दान है और जो दान किसी का अपमान करने और घृणा की दृष्टि से दिया जाता है। वह ''तामसिक दान'' है।

सबसे उत्तम दान ब्रह्म विद्या का दान है। इसके लिए सतसंग का प्रबंध करना, धार्मिक पुस्तकें जैसे–श्रीमद् भगवत पुराण, योग वशिष्ठ गीता, अष्टावक्र गीता, विवेक चूड़ामणि, रामायण और अन्यान्य धार्मिक पुस्तकें विद्याध्यन योग्य पुस्तकें छपवाकर योग्य व्यक्तियों में मुफ्त बाँटता है।

वह उत्तम दान है। पशु–पशियों, निर्धन रोगियों पर दया करके

उनकी चिकित्सा का प्रबन्ध करना या इस काम के लिए सहायता करना ही उत्तम दान है। भगवान ने भगवत गीता में बताया है कि ज्ञान यज्ञ सबसे महान यज्ञ है, इससे दूसरे लोगों की काया पलट जाती है। अस्पतालों, स्कूलों कॉलजों और अनाथालयों को बनवाना या बनवाने में सहायता करना, विधवा स्त्रियों की सहायता, निर्धन बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध, अज्ञानी को ज्ञान देकर उसकी आध्यात्मिक उन्नति करना, अपाहिज और अंगहीन लोगों की सहायता, संन्यासी लोगों अथवा वृद्ध लोगों के लिए आश्रम, गौशालावों जैसी संस्थाओं की सहायता, निर्धन लोगों की वस्त्र आदि से सहायता, प्याऊ लगवाना, सब काम दान के अन्तर्गत आते हैं।

जिस तरह एक बुद्धिमान किसान आगामी फसल के लिए कुछ अनाज बीज की शकल में बचाकर रख लेता है। इसी तरह बुद्धि मान व्यक्ति अपने परिश्रम की नेक कमाई में से कुछ धन दान पर व्यय करता है।

''अर्थव वेद 3/24/2''–के अनुसार –दान की महिमा वर्णन करते हुए लिखा गया है कि सैकड़ों हाथों से कमाओ और हजारों हाथों से दान दो यानि बाँट कर खावों और कई धर्म शास्त्रों में यह भी लिखा है कि दान से सभी प्राणी वश में हो जाते है। दान से शत्र की शत्रुता का नाश हो जाता है, दान से पराया भी अपना हो जाता हैं। दान समाज की कई बुराइओं का नाश कर देता है। दान के द्वारा दूसरों की सहायता करे। मगर ठीक जगह उचित समय पर दिया हुआ दान सफल होता है।

जो लोग धन नहीं दे सकते वह''श्रमदान'' दे सकते हैं। दान का वास्तविक अर्थ ही वह है कि जो कुछ किसी के पास है उसका कुछ भाग जरूरतमंदों को देना। अगर दान का सही महत्व समझ लिया जाय तो देश निर्धनता, द्वेश और अज्ञानता दूर करने में बहुत सहायता मिल सकती है।

तप का महत्व और चम्त्कारिक फल

''अथर्व वेद'' में लिखा है कि – ''मनुष्य तप से उपर उठता है''। संसार में सभी महापुरूषों ने भी तप करने पर बड़ा बल दिया है। जीवन में अधिक से अधिक आनंद और सुख प्राप्त करने के लिए तप की बहुत आवश्यकता है।

''तप का अर्थ है''–''मनुष्य को अपने कर्तव्य पालन, ईश्वर की प्राप्ति और समाज की भलाई के कार्यो या धर्म और देश–भक्ति के लिए जो कष्ट या अपमान उठाना पड़ता है, उसको खुशी से सहन करना। ऐसे शुभ कार्यो के लिए मनुष्य की कई दफा शारीरिक कष्ट के

अतिरिक्त जानी अथवा माली नुक्सान भी बर्दाश्त करना पड़ता है। अगर इन मौकों पर इन्सान सब प्रकार के कष्ट और हानि को खुशी–खुशी सहन कर लेता है और उनके चेहरे पर कोई मलाल नहीं होता तो ऐसा तप सात्विक तप कहलाता है और उसका फल भी बहुत उत्तम होता है।

''तप'' तीन प्रकार का होता है।

शारीरिक तप, मानसिक तप और वाणी का तप

शरीरिक तप

कमजोरों की रक्षा करना, सत्संग में जाना, कर्तव्य पालन और दूसरे भलाई के कामों में आलस्य न करना, अपने शरीर को चुस्त, स्वस्त और निरोग रखने के लिए सुबह स्वस्थ और निरोग रखने के लिए सुबह सबेरे उठना, स्नान, सैर, व्यायाम, आसन, प्राणायाम, उपासना करना, मन्दिर व तीर्थ यात्रा में जाना, ईश्वर ध्यान और कथा कीर्तन में बैठना, व्रत धारण करना। दूसरों को खाना खिलाना तथा खुद बाद में खाना। देश और समाज की सेवा करना। दूसरों के दुखः सुख में शामिल होना। माता–पिता गुरू और बड़ों की सेवा करना। शरीर से किसी को कष्ट या हानि न पहुँचाना। बीमारों की सेवा करना।

यह कर्म शारीरिक तप के अन्तर्गत किए जाते है।

मानसिक तप

मन को रोकना, मन का मौन धारण करना, सत्संग में महापुरूषों के कथन पर बार–बार विचार करना, शस्त्र विचार, मन में ममता धारण करना। मन को शुभ मार्ग में लगाना, मन को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार, घृणा, ईर्ष्या, द्वेश, जैसी अशुभ वृत्तियों से हटाकर शुभ गुणों यानि सेवा, दया, नम्रता, उदारता, संतोषशील, सहनशीलता, अहिंसा, तप आदि की ओर लगाना, अपनी इन्द्रियों पर काबू पाना, मन को प्रभु की चिन्तन में लगाना, ईश्वर पर भरोसा रखना, मन को सदा प्रसन्न रखना, मान अपमान से रहित होना, छल–कपट द्वेश भाव से रहित होना, निन्दा, चुगली और स्वार्थ से बचना आदि ''मानसिक तप'' है।

वाणी का तप

किसी की निन्दा चुगली न करना, व्यर्थ न बोलना, कम से कम बोलना, मधुर वाणी बोलना, बोलने से पहले बात का तौलना, सत्य बोलना, वाणी से किसी का दिल न दुखाना। ऐसा बोलना जिससे सबका भला हो। ईश्वर का जप और गुणगान करना, शास्त्र पढ़ना और दूसरों को सुनाना।

भजन–कीर्तन करना, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति के विषय

पर प्रवचन करना, दुखी को ढाढ़स देना, जुबान के स्वाद में न फंसना, सात्विक आहार करना, बाणी से दूसरों में फूट न डलवाना आदि, यह सब कर्म वाणी के तप में आते हैं।

तप किसी निजी स्वार्थ के लिए नहीं करना चाहिए, जिसमें झूठी वाह–वाह की खवाहिश छिपी है। इससे तप ''रजोगुणी'' हो जाता है। जो लोग अपने शरीर को कष्ट देकर यानि आग में खड़े होकर, बर्फ पर लेटकर या दिखलावे के खातिर धरती में दबंकर, सांस रोक कर चमत्कार दिखाते हैं या दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए तप करते हैं वह सब ''तमोगुणी तप'' है।

गोस्वामी तुलसी दास जी द्वारा रचित असाध्य रोग निवारक श्री हनुमान बाहुक स्तोत्र

ध्यान

सिन्धु तरन, सिय सोच हरन, रवि बाल बरन तनु।
भुज बिसाल मूरति कराल, कालहुँ को काल जनु।।
गहन–दहन–निरदहन, लंक निःशंक बंक भुव।
जातुधान बलवान मान मद दवन पवन सुव।।
कह तुलसी दास सेवत शुलभ, सेवक हित सन्तत निकट।
गुन गनत, नमत, सुमिरत,जपत, समन सकल संकट विकट।।
स्वनं सैल संकास कोटि, रवि तरूण तेज धन।
उर बिशाल भुज दण्ड चण्ड नख वज्र बज्र तन।।
पिंग नयन भृकुटी कराल रसना दसनानन।
कपिल केश करकस लंगूर, खल–दल बल मानन।।
कह तलुसी दास बस जासु, उर मारूत सुत मूरित बिकट।
सन्ताप–पाप तेहि पूरूष पहिं, सपनेहुँ नहिं आवत निकट।।

तर्ज झूलना सौरठी

पञ्चमुख छः मुख भृगु मुख्य भट आसुर सुर,
सर्व सारि समर–समरथ–सूरो।
बाँकुरो वीर विरूदैत विरूदावली,
वेद बन्दी बदत – पैजपूरो।।1।।
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह जासु बल,
विपुल जल भरित जग जलाधि झूरो।
दुवन दल दमन को तुलसीस है,
पवन को पूत रजपूत – रूरो।।2।।

भानु सौं पढ़न हनुमान गए भानुमन,
अनुमानि सिसु केलि कियो फेर फार सो।
पाछिले पगनि गम गगन मगन मन,
क्रम को न भ्रम कपि बालक बिहार सो।।3।।
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर विधि,
लोचननि–चकाचौंधी चितीन खभार सो।
बल कैथो वीर रस, धीरज के, साहस के,
तुलसी शरीर धरे सबनि को सार सो।।4।।
भारत में पारथ के रथ केतु कपिराज,
गाज्यो सुनि कुरूराज दल–हल बल भो।
कह्यो द्रोण, भीष्म समीर सुत महावीर,
बीर रस बारि–निधि जाको बल जल भो।।5।।
बानर सुभाय बाल केलि भूमि भानु लागि,
फलँग फलांगहू तें घाटि नभ थल मो।
नाई–नाई माथ जोरि जोरि हाथ जोधा जो है,
हनुमान देखे जग जीवन के फल मो।।6।।
गोपद पयोधि करि, होलिका ज्यों लाई लंक,
निपट निसंक परपुर गल बल – मो।
द्रोण सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,
कन्दुक ज्यों कपि खेल बेल कैसों फल भो।।7।।
संकट समाज असमंजस भो राम रज,
काज जुग पूगनि को करतल पल भो।
साहसी समत्थ तुलसी को नाह जा की बाँह,
लोकपाल पालन को फिर थिर थल भो।।8।।
कमठ की पीठि जाके गोड़नि की गाड़ै मानो,
नाप के भाजन भरि जलिनिधि जल भो।
जातुधान दावन परावन को दुर्ग भयो,
महामीन बास तिमि तोमनि को बाल भो।।9।।
कुम्भकर्ण रावण पयोदनाद ईंधन को,
तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान,
सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो।।10।।
दूत राम राय को सपूत पौन को तू,
अञ्जनी को नंदन प्रताप भूरि भानु सो।
सीय सोच समन, दुरित दोष दमन,

सरन आए अवन लखन प्रिय प्राण सो।।11।।
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबे को भयो,
प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो।
ज्ञान गुणवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो।।12।।
दवन दुवन दल भुवन बिदित बल,
बेद जस गावत बिबुध बन्दी छोर को।
पाप ताप तिमिर तुहिन विघटन पटु,
सेवक सरोरूह सुखद भानु भोर को।।13।।
लोक परलोक ते बिसोक सपने न सोक,
तुलसी के हिय है भरोसो एक ओर को।
राम को दुलारो दास वामदेव को निवास,
नाम कलि कामतरू केशरी किशोर को।।14।।
महाबल सीम महाभीम महा बानइत,
महावीर बिदित बरायो रघुबीर को।
कुलिस कठोर तनु जोर परै रोर रन,
करूणा कलित मन थारमिक धीर को।।15।।
दूर्जन को काल सो कराल पाल सज्जन को,
सुमिरे हरन हार तुलसी की पीर को।
सीय सुख दायक दुलारो रघुनाथ को,
सेवक सहायक है साहसी समीर को।।16।।
रचिवे को विधि जैसे पालिंबे को हरिहर,
मीच मारिबे को, ज्याइबे को सुधापान भो।।
धारिवे को धरनि तरनि तम दलिबे को,
सोखिबे कृसानु, पोषिबे को हिम भानु भो।।17।।
खल दुख दोषिबे को, जन परितोषिबे को,
माँगिबो मलीनता को मोदक सुदाम भो।
आरत की आरति निवारिबे को तिहुँ पर,
तुलसी की साहेब हठीलो हनुमान भो।।18।।
सेवक स्योकाई जानि जानकीश मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाक को।
देवी देव दानव दयावने हैं जोरे हाथ,
बापुरे वराक कहा और राजा रंक को।।19।।
जागत सोबत बैठ पागत बिनोद मोद,
ताके जो अनर्थ सो समर्थ एक औंक को।

सब दिन रूरो परै पूरो जहों तहौं ताहि,
जाके है भरोसो हिय हनुमान हौंक को।।20।।
सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी।
लोक परलोक को बिसोक सो तिलोकताहि,
तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आन की।।21।।
केशरी किशोर बन्दी छोर के नेवाजे सब,
कीरति विमल कपि करूणानिधान की।
बालक ज्यौं पालि है कृपालु मुनि सिद्धताकों,
जाके हिये हुलसति हौंक हनुमान की।।22।।
करूणा निधान बल बुद्धि के निधान, मोद,
महिमा निधान गुणगान के निधान हौ।
बामदेव रूप भूप राम के सनेही, नाम,
लेत देत अर्थ धर्म क़ाम निरबान हौ।।23।।
अपने प्रभाव, सीता नाथ के सुभाव सील,
लोक वेद विधि के विदूष हनुमान हौं।
मन की वचन की करम की तिहुँ प्रकार,
तुलसी तिहारों तुम साहेब सुजान हौं।।24।।
मन को अगम तन सुगम किए कपीश,
काज महाराज के समाज आज साजे है।
देबबन्दी छोर रनरोर केशरी किशोर,
जुग जुग जग तेरे बिरद बिराजे है।।25।।
बीर बरजोर घटि जोर तुलसी की ओर,
सुनि सकुचाने साधु खलगन गाजे है।
बिगरी सँवार अञ्जनी कुमार की जै मोहि,
जैसे होत आये हनुमान के निवाजे है।।26।।

सोरठी सवैया

जान सिरोमनि हौं हनुमान सदा,
जन के मन बास तिहारो।
ढारो बिगारो मैं काकों कहा केहि,
कारण खीझत हौं तो तिहारो।।
साहेब सेवक नाते तो हातो कियो,
सो तहाँ तुलसी को न चारो।
दोष सुनाए तै आगेहूँ को होशियार हैं,

हो मन–तौं हिय हारो।।27।।

तेरे थपै उथपै न महेश,
थपै थिर को कपि जे घर घाले।
तेरे निबाजे गरीब निवाज,
बिरासत बैरिन के उर साले।।
संकट सोच सबै तुलसी लिए,
नाम फटै मकरी के से जाले।
बूढ़ भये बलि मोरिहिं बार कि,
हारि परे बहुतै नत पाले।।28।।

सिन्धु तरे, बड़े बीर दले खल,
जारि हैं लंक से बंक मवासे।
तैं रनि केहरि के बिदले अरि,
और कुंजर छैल छवासे।।
तो सो समत्थ सुसाहिब सेई,
सहै तुलसी दुख दोष दवासे।
बानरबाज! बढ़े खल खेचर,
लीजत क्यों न लपेट लवासे।।29।।

अच्छा विमर्दन कानन भानि,
दसानन आनन मा न निहारो।
बारिदनाद अकम्पन कुम्भकरन,
से कुञ्जर केहरि – वारो।।
राम प्रताप हुतासन, कच्छ,
विपच्छ समीर समीर दुलारो।
पाप ते साप ते ताप तिहूते,
सदा तुलसी कह सो रखवारो।।30।।

सौरठी धनाक्षरी

जानत जहान हनुमान को निवाज्यो जन,
मन अनुमानि बलि बोल न बिसारिए।
सेवा जोग तुलसी कबहुं कहा चूक परी,
साहेब सुभाव कपि साहिबि सँभारिए।।31।।
अपराधी जानि कीजै सासति सहस भाँति,
मोदक मरै जो ताहि माहुर न मारिए।
साहसी समीर के दुलारे रघुबीर जू के,
बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिए।।32।।

बालक बिलोकि बलि बारें तें आपनो कियो,
दीनबन्धु दया कीन्हीं निरूपाधि न्यारिए।
रावरो भरोसो तुलसी के रावरोई बल,
आस रावरीयै दास रावरो बिचारिए।।33।।
बड़ो बिकराल कलि काको न बिहाल कियो,
माथे पगु बलिको निहारि सो निबारिए।
केशरी किशोर रनरोर बरजोर बीर,
बाँह पीर राहु मातु ज्यौं पछरि मारिए।।34।।
उथपे थपनथिर थपे उथपन हार,
केशरी कुमार बल आपनो सँभारिए।
राम के गुलामनि को काम तरू रामदूत,
मोसे दीन दूबरे को तकिया तिहारिए।।35।।
साहेब समर्थ तो सौं तुलसी के माथे पर,
सोऊ अपराध बिनु बौर बाँधि मारिए।
पोखरी बिसाल बाँहु बलि वारिचर पीर,
मकरी ज्यों पकरि के बदन बिदारिए।।36।।
राम को सनेह, राम साहस लखन सिय,
राम की भगति, सोच संकट निवारिए।
मुद मरकट रोग बारिनिधि हेरि हारे,
जीव जामवन्त को भरोसो तेरो भारिए।।37।।
कूदिए कृपाल तुलसी सप्रेम पब्बयतें,
सुथल सुबेल भालु बैठि के विचारिए।
महाबीर बाँकुरे बराकी बाँह पीर क्यों न,
लंकिनी ज्यों लात घात ही मरोरि मारिए।।38।।
लोक परोकहूँ तिलोक न विलोकियत,
तोसे समर्‌थ चष चाहिहु निहारिए।
कर्म काल लोकपाल अग जग जीवजाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिए।।39।।
खास दास रावरों, निवास तेरी तासु ऊर,
तुलसी सो देव दुखी देखिअत भारिए।
बात तरूमूल, बाहुसूल, कपिकच्छु बेलि,
उपजी सकेलि कपि केलिव ही उखारिए।।40।।
करम कराल कंस भूमिपाल के भरोसे,
बकी बक भगिनी काहू तें कहा डरैगी।
बड़ी बिकराल बाल छातिनी न जात कहि,

बाहूँ बल बालक छबीले छोटे छरैगी।।41।।
आई है बनाई वेष आप ही विचारि देख,
पाप जाय सब को गुनी के पाले परैगी।
पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपि कान्ह तुलसी की,
बाँह पीर महाबीर तेरे मारे – मरैगी।।42।।
भाल की कि काल की कि रोष की त्रिदोष की है,
बेदन बिषम पाप तप छल छौंह की।
करमन कूट की, कि जन्त्र मन्त्र बूट की,
पराहि जाहि पापिनि मलीन मन माँह की।।43।।
पैदहि सजाय, नत कहत बजाय तोहि,
बाबरी न होहि बानि जानि कपि नाँह की।
आन हनुमान की दुहाई बलवान की,
सपथ महाबीर की जौं रहै पीर बाँह की।।44।।
सिंहिका संहारि बल सुंरसा सुधारिछल,
लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है।
लंक पर जारि मकरी बिदारी बार–बार,
जातुधान धारि धूरि धानि करि डारी है।।45।।
तोरि जमकातरि मन्दोदरि कठोरि आनी,
रावण की रानी मेघनाद मँहतारी है।
भीर बाँह पीर की निपट राखी महाबीर,
कौन के संकोच तुलसी के सोच भारी है।। 46।।
तेरो बालि केलि बीर सुनि सहमत धीर,
भूलत सरीर सुधि सक्र रवि राहु की।
तेरी बाँह बसत बिसोत लोकपाल सब,
तेरो नाम लेत रहै आरित न काहु की।।47।।
साम दाम भेद विधि बेदहू लबेद सिधि,
हाथ कपिनाथ ही के चोटी चोर साहु की।
आलस अनख परिहास के सिखावन है,
एते दिन रही पीर तुलसी के बाहु की।।48।।
टुकनि को घर घर डोलत कंगाल बोलि,
बाल जौं कृपाल नत पाल पालि पोसो है।
कीन्ही हैं सँभार सार अञ्जनी कुमार बीर,
आपनो बिसरि है न मेरेहु भरोसो है।।49।।
इतनो परेखो सब भाँति समरथ आजु,
कपिराज साँची कहौं को तिलोक तोसो है।

सासति सहत दास कीजै पेखि परिहास,
चीरी को मरन खेल बालकनि कोसो है।।50।।
आपनें ही पापतें त्रितापते कि सापतैं,
बढ़ी है बाँह बेदन कही न सहि जाति है।
औषध अनेक जन्त्र मन्त्र टोटकादि किये,
बादि भये देवता मनाये अधिकाति है।।51।।
करतार, भरतार, हरतार, कर्म फल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो राम दूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीरते पिराति है।।52।।
दूत राम राय को, सपूत पूत वाय को,
समत्थ हाथ पाय को सहाय असहाय को।
बाँकी बिरूदावली बिदित बेद गाईयत,
रावन सों भेट भयो मुठिका के धाय को।।53।।
एते बड़े साहेब समर्थ को निवाजो आज,
सीदत सुसेवक बचन मन काय को।
थोड़ी बाँह पीर की बड़ी जिलानि तुलसी को,
कौन बाप कोप, लोप प्रकाट·प्रभाय को।।54।।
देवी देज दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत है।
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधाम बाम,
राम दूत की रजाई माथे मानि लेत है।।55।।
घोर जन्त्र कूट कपट कुरोग जोग,
हनुमान आन सुनि छाड़त निकेत है।
क्रोध कीजे को प्रबोध कीजे तुलसी को,
सोध कीजे तिनको जो दोष दुःख देते है।।56।।
तेरे बल वानर जिताये रन रावन सो,
तेरे घाले जातु धान भये घर घर के।
तेरे बल राम राज किये सब सुर काज,
सकल समाज साजे रघुबर के।।57।।
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,
सजल बिलोचन बिरीञ्च हरिहर के।
तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीसनाथ,
देखिए न दास दुखी तो से कनिगर के।।58।।
पालो तेरे टूक को परेहू चूक मूकिए न,

कूर कौड़ी ढूको ही आपनी ओर हेरिए।
भोरानाथ भोरे ही सरोष होत थोड़े दोष,
पोषि तोषि थापि आपनो न अब डेरिए।।59।।
अम्बु तू हौं अबुं चूर, अम्बु तू हौं डिम्ब सो न,
बूझिए बिलम्ब अवलम्ब मेरे तेरिए।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,
तुलसी की बाँह पर लामी लूम फेरिए।।60।।
घोरि लियो रोगनि, कुजोगनि कुलोगनि ज्यौं,
बासर जलद धन घटा धुकि थाई – है।
बरसत बारि पीर जारिये जबासे जस,
रोष बिनु दोष घूम मूल मलिनाई है।।61।।
करूणानिधान हनुमान महा बलवान,
हेरि हँसि हाँकि फूँक फौजे ते उड़ाई है।
खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ राकसनि,
केशरी किशोर राखे बीर बरिआई है।।62।।

सौरठी सवैया

राम गुलाम तुही हनुमान गोसाईं,
सुसाईं सदा अनुकूलो।
पाल्यों हौं बाल ज्यों आखिर,
पितु मातु सो मंगल मोद समूलो।।63।।
बाँह की बेदन बाँह पगार,
पुकारत आरत आनंद भूलो।
श्री रघुबीर निबारिये पीर,
रहौ दरवार परो लटि लूलो।।64।।

सौरठी धनाक्षरी

काल की करालता करम कठिनाई कीधौ,
पाप के प्रभाव की सुभाय वाय बावरे।
बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,
सोई बाँह गही जो गही समीर डाबरे।।65।।
लायो तरू तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,
सींचिये मलीन भौं तयो है तिहुँ तावरे।
भूतानि की आपनी पराये की कृपाधिान,
जानियत सबही की रीति राम – रावरे।।66।।

पाँय पीर पेट बाँह पीर मुँह पीर,
जर–जर सकल सरीर पीर भई है।
देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,
मोहि पर दवारि दमानक सी दई है।।67।।
हौं तो बिनु मोल के बिकानो बलि बारें ही तें,
ओट राम नाम की ललाट लिखि लई है।
कुम्भज के किंकर बूढ़े गोखुरीन,
हाय राम राय ऐसी हाल कहूँ भई है।।68।।
बाहुक सुबाहु नीच लीचर मरीच मिलि,
मुँह पीर केतुजा को रोग जातु धान है।
राम नाम जप जाग कियो चहों सानुराग,
काल कैसे दूत भूत कह मेरे मान है।।69।।
सुमिरे सहाय राम लखन आखर दोऊ,
जिनके समूह ताके जागत – जहान है।
तुलसी सँभारि ताड़का सँहारि भारि भट,
बेधे ब्रगद से बनाई बानवान है।।70।।
बालपने सूध मन राम सनमुख भंयो,
राम नाम लेते माँगि खात टूक टाक हौं।
परयो लोक रीति में पुनीत प्रीति राम राय,
मोह बस बैठो तोरि तरकि तराक हौं।।71।।
खोटे खोटे आचरन आचरत अपनायो,
अञ्जनी कुमार सोध्यो रामपानि पाक हौ।
तुलसी गुसाईं भयो भोड़े दिन भूल गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौं।।72।।
असन वसन हीन विषम विषाद लीन,
देखि दान दूबरो करै न हाय हाय को।
तुलसी अनाथ सो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सील सिन्धु आपने सुभाय को।।73।।
नीच यहि बीच पति पाई भरू हाइगो,
बिहाई प्रभु भजन वचन मन काय को।
ताते तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,
फूटि फूटि निकसत लोन राम राय को।।74।।
जीओ जग जानकी जीवन को कहाई जन,
मरिबे को बारानसी बारि सुरसारि को।
तुलसी के दोऊ हाथ मोदक है ऐसे ढाऊ,

जाके जिये मुये सोच करिहैं न लारिको।।75।।
मो को झूठो सांचो लोग राम को कहत सब,
मेरे मन मान है न हर को न हरि को।
भारी पीर दुसह सरीरतें बिहाल होत,
सोंऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करि को।।76।।
सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेश को महेश मानो गुरू कै।
मानस वचन काय सरन तिहारे पाँय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुर कै।।77।।
व्याधि भूत जनित उपाधि काहु खल की,
समाधि कीजै तुलसी को जानि जन फुर कै।
कपिनाथ रघुनाथ भोलेनाथ भूत नाथ,
रोग सिन्धु क्यों न डारियत गाय खुर कै।।78।।
कहों हनुमान सौं सुजान राम राय सों,
कृपा निधान संकर सौं सावधान सुनि।
हरष विषाद राग रोष गुन दोष मई,
बिचरि बिरञ्चि सब देखियत दुनिये।।79।।
माया जीव काल के करम के सुभाय के,
करैया राम वेद कहे साँचि मन गुनिये।
तुम्हते कहा न होय हाहा सो बुझैये मोहि,
हौंहूं रहौं मौनहि वयो सो जानि लुनिये।।80।।

।। श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत हनुमान बाहुक स्तोत्र समाप्त ।।

श्री गोस्वामी तुलसी दास कृत "हनुमान बाहुक स्तोत्र" असाध्य रोग निवारक क्यों?

श्री गोस्वामी तुलसी दास जी द्वारा की गई "हनुमान बाहुक स्तोत्र" अत्यन्त प्रभावशाली "असाध्य रोग निवारक" स्तोत्र है।

इसके सम्बन्ध में "तुलसी मानस सुधा" में वर्णित है कि विक्रम संबत 1664 के लगभग श्री तुलसी दास जी अत्यन्त बीमार हो गए थे। उनकी बाजुओं में असहनीय दर्द और शरीर में विस्तृत रूप से

असंह्य पीड़ा दायक फोड़े हो गये थे, जिसके परिणाम स्वरूप वे हर समय कराहते रहते थे।

श्री तुलसी दास जी के साथ यह घटना राम–रावण युद्ध के बाद घटी थी। रोग निवारण हेतु उन्होंने जादू–टोने, यंत्र–मंत्र अनेका नेक टोटके आदि कराए, अनेकों वैद्यों से औषधि ग्रहण किए, फिर भी उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ। उनकी दर्द व्यथा घटने के बजाय बढ़ंती ही चली गई।

समस्त उपायों से हारने के पश्चात् स्वामी जी हनुमान जी की – वन्दना करने लगे। यह वन्दना उन्होंने बाँहों की पीड़ा निवारण हेतु की थी। इसलिए वन्दना का नाम उन्होंने ''हनुमान बाहुक स्तोत्र'' दिया।

''हनुमान बाहुक स्तोत्र वन्दना'' जबसे गोस्वामी जी आरम्भ किए, तब से ही उनके बाजू की पीड़ा, फोड़े आदि दूर होने लगे और कुछ ही दिनों के बाद वे स्वस्थ हो गए।

वन्दना के दिनों में ही श्री हनुमान जी ने उन्हें फिर दर्शन दिया और कहा–हे गोस्वामी तुलसीदास! आपकी वन्दना से हम प्रसन्न हुए। और तुरन्त ही कपिदेव ने उन्हें पूर्ण पीड़ा मुक्त कर दिये और बोले– आपके द्वारा की गई वन्दना के अक्षरसः शब्दों द्वारा जो हमारी वन्दना करेगा, उस प्राणी के असाध्य से असाध्य रोग मिट जायेंगें और प्राणी सुखद जीवन व्यतीत करेगा।

पाठको! गोस्वामी जी द्वारा '' सौरठी भाषा'' में की गई वन्दना कुछ अट–पटा सा पढ़ने में तो जरूर लगता है परन्तु इस वन्दना को हनुमान जी द्वारा वरदान मिला है, इस लिए अटपट शब्दों में भी अत्यन्त मंगलकारी, महारोग विनाशकारी और शीघ्र प्रभावकारी वन्दना है, जिसे नित्य ही स्नान से पवित्र होकर प्रातः काल पाठ क़रें और असाध्य बिमारियों से पीड़ित व्यक्ति पीड़ा मुक्त हो जाएं।

पाठको! गोस्वामी तुलसी दास जी ने इसीलिए रामायण में लिखे हैं कि –

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा।।

उनका यह कथन सदैव सत्य है।

श्री हनुमान जी का रूप, परिधान, अलंकार, आभूषण व श्रृंगार खण्ड

श्री हनुमान जी का रूप

श्री हनुमान प्रत्येक युग में अपने भक्तों को अपने स्वरूप का दर्शन कराते रहते हैं।

वे सारे चिरंजिवियों में से एक हैं। द्वापर और कलि के संधिकाल में ''भीम सेन'' ने इनके रूप को देखा था। गन्ध मादन पर्वत पर कदली वन में विचरण करते हुए भीम को इन्होंने कृपापूर्वक अपना रूप दिखलाया था। उनकी अंगकान्ति गिरती हुई बिजली के समान पिंगल वर्ण की थी। उनका गर्जन वज्रपात की गड़गड़ाहट के समान था। वे विद्युत्पात के सदृश चंचल प्रतीत होते थे। विद्युत्पात के समान चकाचौंध पैदा करने के कारण उनकी ओर देखना कठिन था।

विद्युतसम्पातदुष्प्रेक्षं विद्युतसम्पातपिङ्गलम्।
विद्युत्संपातनिनदं विद्युतसम्पात चंचलम।।

(महा. वन. 146/81)

स्कन्ध पुराण के ब्रह्मखण्ड के ''धर्मारण्यमहात्म्य'' में उल्लेख है कि ब्राह्मणों को विशेष आग्रह पर श्री हनुमान जी ने अपना रूप प्रकट किया। उस दिव्य रूप को देखकर धर्मारण्य निवासी हर्षित हुए। उनके कंधे चौड़े और पुष्ट थे। उनके शरीर का मध्य भाग और कटिप्रदेश पतला था। उनकी रोमावली धनी थी, पूंछ ऊपर की ओर उठकर ध्वजासी सुशोभित थी, होंठ छोटे थे, जीभ और मुख का रंग तांबे के समान था और कान लाल रंग के थे। उनके खुले मुख में सफेद चमकते दाँत थे और दाढ़ी तीखे श्वेत अग्रभाग से सुशोभित थी। सुवर्णभय कदली वृक्षों के बीच विराजमान, तेज़ से दीप्त हनुमान जी ऐसे लगते थे मानो केशरों की क्यारी में अशोक पुष्प का गुच्छा रखा हो। श्लोक रूप में उपरोक्त तथ्यों का वर्णन इस प्रकार है।

द्रष्टा दिव्यस्वरूपं तं हनुमन्तं जहषिरे।
केशरीत्कारस म्मिश्रामशोकानामिवोत्करम,
हिरण्यमयी नां मध्यस्थं कदली नां महाद्युतिम्।।

(महा. वन. 146/8137/17/)

कहा जाता है कि चित्र कूट में गोस्वामी तुलसी दास जी को श्री राम–लक्ष्मण के दर्शन के बाद श्री हनुमान जी ने प्रकट होकर बतलाया

था कि उन्हें श्री राम ने दर्शन दिया, पर वे (गोस्वामी जी) उन्हें पहचान न सकें।

अभिनव बाल्मीकि तुलसीदास जी ने श्री हनुमान के मंगलमय रूप का बड़ा भव्य चित्रण किया है, जो इस प्रकार है।

स्वर्ण सैल संकास कोटि, रबि तरूण तेज धन।
उर बिशाल भुजदंड चंड, नख वज्र वज्रतन।।
पिंग नयन भृकुटी कराल, रसना नानन।
कपिश केश करकस लँगूर, खल बल भानन।।
कह तुलसीदास बस जासु उर, मारूत सूत मूरति बिकट।
संताप पाप तेहि पुरूष पहि, सपनेहुँ नहीं आवत निकट।।

(श्री हनुमान बाहुक–2)

लंका जाते समय श्री हनुमान जी ने महेन्द्र पर्वत पर अपना विशाल पर्वतकार रूप प्रकट किया था। उस समय समस्त प्राणियों को वायुपुत्र महामनस्वी हनुमान जी महान पर्वतराज के समान विशालकाय, सुवर्ण वर्ण, अरूण (बाल सूर्य) के समान मनोहर मुख वाले और महान सर्पराज के समान दीर्घ भुजा वाले दीख पड़े–

महानगेन्द्रप्रतिमो महात्मा,
सुवर्णवर्णोऽरूणाचारूवक्त्रः।
महाकणीन्द्राभसुदीर्घबाहु,
वार्तात्मजोऽदृश्यत सर्वभूतैः।।

श्री सीता जी के पास के किष्किन्धा के लिए प्रस्थान करते समय चूड़ामणि प्राप्त करने के पहले उन्होंने उनके(सीता जी के) विश्वास के लिए अपना ''विश्वरूप'' दिखाया। श्री रंगनाथ रामायण के रचयिता राजा गोन बुद्ध ने इसकी बड़ी रमणीय झाँकी प्रस्तुत की है–

''श्री हनुमान जी ने अपना रूप इतना विशाल बनाया किं सम्पूर्ण आकाश मे उनका शरीर परिव्याप्त हो गया। चमकने वाले नक्षत्रों का समूह पहले उनके कण्ठमाला मालती मल्लिका का हार बना, फिर वक्षः स्थल पर शोभित हाने वाले रजत का हार बना और उसके बाद उनके कटि प्रदेश को अलंकृत करने वाली चाँदी की क्षुद्र् घंटिकाओं की मेखला बन गया। ऐसा अत्यन्त विस्मयकारी रूप धारण कर जब हनुमान जी सीता के समक्ष खड़े हुए, तब वे मन ही मन भयभीत हो गयी और कहने लगीं कि हे अनुपम गात्र वाले! हे अञ्जनासुत! तुम्हारा यह रूप आश्चर्यजनक है। इसका शीघ्र ही उपसंहार करो। उनका वह ''विश्व–रूप'' देखकर देवता भी उनकी प्रशंसा करने लगे। पवन पुत्र ने भगवान विष्णु के समान उस विशाल आकार को त्यागकर ''लघु रूप'' धारण कर लिया। (सुन्दर काण्ड 14)

इस प्रकार श्री हनुमान जी ने समय और जरूरत के मुताबिक कभी महाविशाल और कभी अतिलघु रूप धारण किए हैं जो समस्त रूप महातेस्वी हैं।

श्री हनुमान जी का वर्ण

श्री हनुमान जी के शरीर का रंग– (वर्ण) अनेक प्रकार का कहा गया है, पर निर्विवाद रूप से सामान्यतः वे स्वर्ण वर्ण के ही चित्रित किए गये हैं। भगवान सूर्य ने उन्हें प्रभा प्रदान की थी।

सूर्येन च प्रभा दत्ता......।

(नारद पु. 78/37)

उन्हें लाल देह वाला भी कहा गया है –

लाल देह लाली लसै.......।

श्री हनुमान जी का रूप, अंग प्रत्यंग, परिधान, तथा अलंकार आदि परम दिव्य है। कोटि–कोटि कंदर्पों के लावण्य से भी उनका दिव्य सौन्दर्य मापा नहीं ज़ा सकता । श्री हनुमान जी को ब्रह्म ने वरदान दिया था कि तुम्हारे शरीर का दिव्य आभूषण,जो दूसरों के लिए अदृश्य है, केवल(विष्णु) सेब्य के द्वारा ही दृष्टिगत हो सकते हैं। ''श्री रंगनाथ रामायण में उल्लेख है कि जब किष्किन्धा में श्री हनुमान श्री राम–लक्ष्मण से मिलने गये, तब श्री राम ने लक्ष्मण से कहा हे लक्ष्मण! ऐसा प्रतीत होता है कि सुनहरा रंग, मुंज की सुन्दर करधनीरत्न कुण्डलों से विलसित कर्ण, श्रेष्ठ हार, यज्ञोपवीत, कौपीन तथा हाथ में कंगन धारण किए किसी मनुष्य ने कपि का ही रूप अपनाया है। इस रूप को धारण करने के लिए क्या स्वयं भगवान रूद्र ने तो जन्म नहीं लिया है ? इस पृथ्वी पर केवल कपिमात्र को ऐसी प्रभा किस तरह प्राप्त हो सकती है ?

श्री हनुमान ने वायु पुत्र तथा सुग्रीव के मंत्री रूप में अपना परिचय दिया और कहा – अपनी प्रिय माता के गर्भ से जन्म लेने के कुछ वर्षो के पश्चात मैंने किसी उद्देश्य से ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की थी। तपस्या से प्रसन्न होकर कमल सम्भव(ब्रह्म) ने मुझे दर्शन दिया। वे बोले कि कोई इच्छा हो तो कहो। मैंने उनकी परिक्रमा करके उन्हे प्रणाम किया, सहस्त्रों प्रकार से स्तुति कर फिर कहा – हें विमलात्मा!इस पृथ्वी पर मेरे मोक्ष तथा इच्छित कार्यों की सिद्धि के आधार और अराध्य कौन हैं ? मैं किनकी प्रार्थना तथा सेवा करूँ तब कमल सम्भव ब्रह्म ने अपने मन में विचार कर कहा कि – ''जो तुम्हारे शरीर के आभूषणों को देख सकेंगे, वे ही तुम्हारे स्वामी और प्रभु होंगे। वे ही हम सब के इष्ट देव तथा संसार के कर्त्ता हैं। वे

ही विष्णु हैं। ऐसा ज़ानो कि वे ही तुम्हारे त्राता और प्रभु हैं। इस तरह ब्रह्म आदेश देकर चले गये। तब से मैं समस्त लोक में विचरण करता रहता हूं। हे प्रभु! मेरे आभूषणों को दीप्ति को स्वर्ग के निवासी भी नहीं देख सकतें।

(श्री रंगनाथ रामायण किनिष्कन्धा, अध्याय 3)

महाकवि गिरिधर कृत गुजराती रामायण में उपर्युक्त प्रसंग का अत्यन्त भावपूर्ण स्पष्टीकरण उपलब्ध होता है। श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा

भाई जोआ कपीनो वेश।
एने वज्र कछोटे छाजे। वली कनकनुं कोपीन राजे।।
ए कपिवर महा बलवंत। एनु नाम हशे हनुमंत।।

अर्थात्– भैया लक्ष्मण! इन कपि का वेश देखो। ये वज्र और कछोटे से सुशोभित हैं, इनके स्वर्णिम कौपीन है। ये कपिश्रेष्ठ महान बलशाली हैं और इनका नाम ''हनुमान' है।

श्री हनुमान के आयुध

श्री हनुमान जी अपने प्रभु श्री राम के चरणों में पूर्ण समर्पित आप्त काम निष्काम सेवक है। उनका सर्वस्व प्रभु की सेवा की उपकरण है। उनके सम्पूर्ण अंग –प्रत्यंग – रद, मुष्टि, नख, पूंछ, राधा एवं गिरि, पादप आदि प्रभु के सेवा मार्ग में अवरोध उत्पन्न करने वाले, अमंगलों के नाश के लिए दिब्य आयुध(अस्त्र) हैं।

''पंचमुख हनुमान'' दस आयुधों से समलंकृत कहा गया है।

खड़ग, त्रिशूल, खटवाङ्ग, पाश अंकुश, पर्वत, स्तम्भ, मुष्टि, गदा, और वृक्ष ही उनके दस आयुधों के रूप में परिगणित है।

श्री हनुमान जी के वाहन

श्री हनुमान जी के वाहन की शक्ति किसमें हैं ? – यह एक ऐसा प्रशन है, जिसके उत्तर में केवल इतना ही कहकर संतोष किया जा सकता है। कि उनके सिवा उनका वाहन होने की शक्ति किसी– दूसरे में है ही नहीं।

वे इतने वेगवान है कि उनके वेग के समान तीनों लोकों में किसी का भी वेग नहीं है। यद्यपि श्री हनुमत्सहस्त्र नाम स्तोत्र के 62वें श्लोक में– उन्हें ''वायुवाहन'' कहा गया है और यह युक्तिसंगत भी है, तथापि वायु भी उनके भार वहन करने में असमर्थ ही है।

श्री हनुमान जी की व्रत कथा

एक बार गंगा जी के पावन तट पर विराजमान श्री सूत जी महाराज से शौनकादिक ऋृषियों ने निवेदन किया कि हमें किसी श्रेष्ठ व्रत का विधान बताइए।

सूत जी बोले– ऋृषिगण! आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया है। एक बार महर्षि वेदव्यास जी ने पृथा पुत्र युधिष्ठिर को अत्यन्त गुप्त सभी सम्पत्तियों के निधि स्वरूप तथा नष्ट राज्य की प्राप्ति कराने वाला– हनुमान जी का व्रत कहा था।

उन्होंने बताया कि यह व्रत भगवान श्री कृष्ण ने द्रोपदी के लिए कहा था। द्रोपदी ने हनुमान का व्रत आरम्भ किया और संबन्धित डोरा गले में बांध लिया। एक समय युधिष्ठिर ने उस डोरे को बंधा देखा तो बोला–

"यह व्यर्थ का डोरा गले में क्यों बांध रखा है ?" तब द्रोपदी ने मधुर शब्दों में कहा श्री कृष्ण के निर्देशानुसार मैं भी हनुमान जी का व्रत करती हूँ, यह डोरा उसी का है। "यह सुनकर युधिष्ठिर क्रुद्ध हो गए और बोला–" अरे! यह बन्दर तो हमारे रथ की ध्वजा पर निरन्तर लटका रहता है। भला, वह तुम्हें क्या दे सकता है ? कृष्ण भी तो कपटी हैं, उन्होंने हँसी में ऐसा कह दिया होगा। अब तुम इस डोरे को तुरन्त उतार कर फेंक दो।

द्रोपदी को युधिष्ठिर की बात माननी पड़ी।

उसने उस डोरे को गले से खोलकर उद्यान में सुरक्षित रख दिया।

इसके बाद जब द्रोपदी एक बार युधिष्ठिर के साथ थी, तो एकाएक वहां अकाशवाणी हुई– "हे युधिष्ठिर! हनुमान जी के डोरे का परित्याग ही तुम्हारी वर्तमान विपत्ति का कारण है। उसी के फलस्वरूप तुम्हारा प्राप्त ऐश्वर्य सहसा नष्ट हो गया। उस डोरे में तेरह (13) ग्रंथियां हैं। इस लिए तुम्हें तेरह वर्ष का वनवास भोगना पड़ा। यदि उस डोरे का परित्याग न किया होता तो वह तेरह वर्ष सुखपूर्वक ही व्यतीत होते। (कही–कही जानने को मिलता है कि द्रोपदी को गले से डोरा उतार फेंकने के लिए युधिष्ठिर ने नहीं बल्कि अर्जुन ने कहा था।

जब व्यास जी यह चर्चा कर रहे थे तो द्रोपदी भी वहां मोजूद थी। उसने स्वीकार किया कि भगवान श्री वेद्व्यास जी का कथन सत्य है। व्यास जी पुनः बोले।

"युधिष्ठिर! यदि तुम इस व्रत कथा को सुनना चाहते हो तों ध्यान पूर्वक सुनो।" वह कथा सुनाने लगे–

''जब सीता जी की खोज करते हुए भगवान श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण सहित ऋष्य मुक पर्वक पर पधारें, तब उन्होंने वानर राज सुग्रीव के साथ हनुमान जी को भी वहां देखा। तब हनुमान जी ने उनसे मित्रता स्थापित की और बोले–''

हे महाबाहो श्रीराम चन्द्र जी! मैं आपका भक्त हूँ और आपका प्रत्येक कार्य करने के आतुर हूँ पहले इन्द्र ने मेरी हनु पर वज्र से प्रहार किया था, इसलिए पृथ्वी पर मैं हनुमान नाम से विख्यात हुआ। उस समय मेरे पिता वायु, क्रोध में यह कहते हुए अन्तर्ध्यान हो गए कि जिसने मेरे पुत्र को मारा है, मैं उसे नष्ट कर दूंगा। तदनन्तर ब्रह्मादि देवताओं ने प्रकट होकर कहा– अञ्जनी पुत्र! तुम्हारे लिए इस वज्र का प्रहार व्यर्थ है, और तुम अमित पराक्रमी होकर अपने व्रत के लायक होकर राम–कार्य को करो। तुम्हारे इस व्रत के करने वाले की सभी कामानाएं पूर्ण होंगी। इस व्रत का अनुष्ठान पहले श्री राम ने भी किया था। ''यह कहकर देवगण चले गए।''

''अब हे नाथ! हे श्रीराम! आप इस व्रत को अवश्य कीजिए।''

''हनुमान जी की इस बात का समर्थन आकाशवाणी ने भी किया''

तब श्री राम ने हनुमान जी व्रत का विधान पूछा। तब हनुमान जी बोले– जब मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष में तेरस घटी युक्त त्रयोदशी एवं अभिजित नक्षत्र हो, तब पीले डोरे में तेरह गाँठ लगाकर उसे कलश में रखें और फिर ॐ नमो भगवते वायुनन्दनाय मन्त्र से मेरा आवाहन तथा पीले गन्ध, पीले पुष्प और अर्चनोचित सामग्री से मेरा पूजन करें। पूजन में ॐ कार युक्त मन्त्र द्वारा ''षोड़षोपचार''(सोलह उपचारों द्वारा, यह सोलह उपचारों द्वारा पूजन करने की विधि वृहद पूजन खण्ड में कर चुका हूं) करने चाहिए। गेहूँ के आटे का तेरह मालपूआ, ताम्बूल एवं दक्षिणा ब्राह्मण को दे तथा भोजन भी करावे। यह व्रत तेरह वर्ष तक नियम पूर्वक करें तथा तेरह वर्ष पश्चात् विधिवत उद्यापन करें।।

यह व्रत लक्ष्मण, सुग्रीव एवं श्रीराम ने भी किए थे।

इस व्रत का साधन करने वाले साधक की श्री हनुमान जी स्वयं सहायता करते हैं।

''ये युधिष्ठिर! इस मार्गशीर्ष मास में तुम भी इस व्रत को करो, तो तुम्हें राज्य की पुनः प्राप्ति हो सकती हैं।''

व्यास जी द्वारा व्रत की ऐसी महिमा सुनकर समुद्र तट पर रात्रि व्यतीत करने के पश्चात दूसरे दिन युधिष्ठिर ने श्री व्यास जी के समक्ष ही द्रोपदी के साथ यह व्रत पायस एवं ''घृताक्त हवि''(घी युक्त हवन सामग्री) से होम तथा ''ॐ नमों भगवने वायुनन्दनाय'' मूल मंत्र से श्री हनुमान जी का पूजन एवं उद्यापन किया।

इसके फलस्वरूप युधिष्ठिर को उसी वर्ष राज्य की पुनः प्राप्ति हो गई। इसलिए हे ऋषियों! आप भी इस व्रत को करके सफल मनोरथ कर सकते हैं। तब उन ऋषियों ने भी यह हनुमान व्रत किया।

यह हनुमान व्रत सम्बन्धी कल्प का पाठ करने, सुनाने से सभी मनोरथ पूर्ण होता है। यह व्रत चारों वर्णों के लिए हितकर है, क्योंकि इसके करने से ब्राह्मण वेद पारंगत, क्षत्रिय ऐश्वर्य एवं अमित पराक्रम से युक्त वैश्य कुवेर के समान धन का स्वामी, तथा शूद्र भी कृषि साधन सम्पन्न एवं अत्यन्त धनी हो जाता है।

रोगी रोग मुक्त, पुत्रार्थी पुत्रवान, धन सम्पन्न हो जाता और इस व्रत से समस्त अनिष्ट निवारण एवं समस्त कामनाओं की पूर्ति हो जाती है।

सभी अंगों उपांगों सहित श्री हनुमान जी का पूजन कर– ''ॐ नमो भगवते वायुनन्दनाय'' मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित की हुई गन्ध(चन्दन) को अपने मस्तक पर लगा लेने से सभी प्राणी वश में हो जाते हैं।

इस विधि से राजा भी वश में होता है तथा घर में निकलने पर विजय प्राप्त करके ही लौटता है। इसके पाठ से राजद्वार, संग्राम,सभा, व्यवहार, अग्नि, वायु व्याधादि का भय दूर हो जाता है।

हनुमान व्रत के तेरह गांठ वाले डोरे को कण्ठ या दांयी भुजा में धारण करने से सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

श्री हनुमान जी का स्वप्न में दर्शन हेतु एक अद्भुत अनुष्ठान

मैं साधकों के लाभार्थ श्री हनुमान जी के एक अनुष्ठान के विषय में लिख रहा हूँ। यह अनुष्ठान प्रयोगिक सिद्ध है और इसका नियम बहुत सरल है तथा यह अनुष्ठान कुल 81 दिन का है।

मंगलवार को इसे प्रारम्भ करना चाहिए। अनुष्ठान काल में ब्रह्मचर्य पालन अनिवार्य है, तथा बाल या नख काटना, मद्यपान तथा मांसाहार सर्वथा निषिद्ध है।

अनुष्ठान के दिन प्रातः काल उठकर शोच, मुख मार्जन और स्नान के अन्नतर शुद्ध वस्त्र पहनकर एक लोटा जल लेकर हनुमान जी के मंदिर जायें और उस जल से हनुमान जी की मूर्ति को स्नान करायें। प्रथम दिन एक दाना उड़द हनुमान जी के सिर पर रखकर ग्यारह प्रदक्षिणा करें। बाद में नमस्कार करके मन ही मन अपनी कामना हनुमान जी के सामने रखें तथा उड़द का दाना लेकर घर लौट आवें और उसे अलग पात्र में रख दें।

दूसरे दिन से एक–एक उड़द का दाना बढ़ाते रहना चाहिए। 41 दिन तक रख कर बाद में 42वें दिन से एक –एक दाना कम करते जाना चाहिए।

जैसे 42 दिन 40, 43वें दिन 39 और 81वें दिन दाना। 81 दिन का यह अनुष्ठान पूर्ण होने पर उसी दिन रात को श्री हनुमान जी स्वप्न में दर्शन देकर साधक की कामना पूर्ति करते हैं। 81 दिन तक जो उड़द के दाने अलग जमा किए थे, उन्हें नदी में बहा देना चाहिए।

व्रत का लाभ

व्रत का अर्थ है– ''किसी काम को करने के लिए दृढता से निश्चय करना, किसी प्रतिभा को निभाना।'' यजु. वेद 4–11 में परमात्मा ने मनुष्य को उपदेश दिया है कि व्रत धारण करके अपना मानव जन्म सफल करो।

व्रत क्या है ? अवगुणों को छोड़कर शुभ गुणों को धारण करने का प्रण ही व्रत है। व्रत को ''उपवास'' भी कहते हैं, लेकिन शरीर को सुखाने का नाम ही ''उपवास'' नहीं है, बल्कि अपने पापों, रोगों और बुरी आदतों को जड़ से उखाड़ने का नाम ही– व्रत है– उपवास है।

व्रत का वास्तविक उद्येश्य है अपने आचार–विचार–आहार तथा व्यवहार को शुद्ध पवित्र और महान बनाना। यह बात ठीक है। कि उपवास से शरीर का मैल दूर करने और नसनाड़ियों को फिर से शक्तिशाली बनाने और मन को पवित्र करने में सहायता मिलती है, लेकिन इसका एक बहुत बड़ा लाभ यह भी है कि इससे शारीरिक दुर्बलता के कारण इन्द्रियां कुछ सीमा तक अपने–अपने विषयों में अधिक लिप्त नहीं होती। परन्तु व्रत का यह अर्थ कदापि नहीं है कि भूख से पीड़ित होना और इसलिए भोजन न करना कि एकादशी के दिन अन्न न खाने से सब पाप एक ही दिन भस्म हो जायेंगे और मंगल के दिन भोजन करने से हनुमान जी रूष्ट हो जायेंगे। उपवास का यह भी अर्थ नहीं कि उपवास के दिन अन्न तो बिल्कुल न खाया जाये लेकिन दूसरी चीज़ें दूध, फल और मिठाईयाँ आदि पेट में ठूंस–ठूंस कर भर दी जायें।

महर्षि दयानन्द ने कहा है कि गर्भवती या नव विवाहित स्त्री, लड़के या दुर्बल व्यक्ति को ज्यादा उपवास नहीं करना चाहिए। उपवास उस दिन करना उचित है जिस दिन अजीर्ण हो या भूख न लगे। यदि जरूरत पड़े तो उस दिन जल, फल और दूध का प्रयोग करने में कोई हर्ज नहीं। जो लोग भूख लगने पर नहीं खाते और जो बिना भूख ही खाते रहते हैं। वह रोगी बन जाते हैं।

भारत में आज कल भी करोड़ों लोग हैं जो जन्माष्टमी, राम नवमी, शिवरात्री और अन्य त्यौहारों और अवसरों पर व्रत रखकर अपने आपको पवित्र करते रहते हैं।

पाचन शक्ति को ठीक रखने और मन को निर्मल करने के लिए व्रत का लाभ तो होता ही है। लेकिन अपने निष्काम कर्तब्य पालन, स्वाध्याय मन का विगरह, अन्तः करण की पवित्रता, सत्य और मधुर भाषण सेवा,नम्रता आदि शुभ गुणों को अपने जीवन धारण करने के लिए भी अवश्य प्रतिज्ञा करनी चाहिए, जैसे महात्मा गाँधी ने देश के स्वतंत्र कराने और भीष्म पितामह ने पिता की खातिर सारी उम्र कंवारा रहने का व्रत धारण किया था। आज कल हम लोगों को देश से भ्रष्टाचार, अज्ञानता, आतंकवाद, गरीबी, बेरोजगारी और नशाबाजी को हटाने का प्रण लेना चाहिए।

"ॐ" की महिमा और उपासना

"ॐ" परमात्मा का मुख्य नाम है।

"औम्" (ओ, ऊ, म) के एक ही शब्द में संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का रहस्य छिपा हुआ है। यह वह "अक्षर" है। जिसका कभी नाश नहीं होता। ओम् सबकी जान की जान और प्राण का प्राण है– सबका सहारा है। सब शक्तियों की शक्ति है। संसार भर की सभी और सभी प्रकार के संगीत ओम से ही निकलते हैं। ओम एक महान मंत्र है। सब बड़े बड़े मंत्रों का आरम्भ ओम(ॐ) से ही होता है.

ओम का नाद सब जगह बज रहा है। ओम की ध्वनि हमारे शरीर में भी बज रही है। और इस ध्वनि का कभी अन्त नहीं होता है।

"ओम्" की एक हल्की सी किरण से सारा संसार रोशन हो रहा है।

"ओम्" के तीन अक्षर "ओ, ऊ, म" वेदों के प्रतिनिधी हैं। ओम ही ब्रंह्म, विष्णु और महेश है। गीता के दशवें अध्याय में भगवान कृष्णा ने कहा है कि –"शब्दों में मैं ॐ शब्द हूँ" गुरू नानक जी ने भी अपनी वाणी में ओम (ओंकार) को ही ईश्वर का उच्चारण करता हुआ शरीर को त्यागता है, वह संसार सागर से पार हो जाता है, यनि वह "मोक्ष" प्राप्त कर लेता है।

निराकार भगवान में भी ध्यान लगाते समय "ॐ" का ही ध्यान और मन में उच्चारण करना चाहिए।

"ॐ" का ध्यान किसी समय भी किया जा सकता है। ॐ का ध्यान करते हुए परमात्मा के सताचित् आनन्द, सर्वव्यापी आदि गुणों का ख्याल रखना चाहिए।

गायत्री मंत्र का अर्थ, महिमा और उपासना

(गायत्री मंत्र)

ॐ भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदायत्।।

नोटः– उपासको! सर्व प्रथम मैं गायत्री मंत्र के शब्द का अर्थ समझा रहा हूँ, तत्पश्चात इस महामंत्र की महिमा और उपासना का वर्णन करेंगे।

''ॐ'' – परमात्मा का मुख्य नाम है।
भूः – प्राण आधार, सत्य स्वरूप।
भवः – दुःखों का नाश करने वाला, ज्ञान स्वरूप।
स्वः – स्वयं प्रकाशमान, सुख स्वरूप।
तत् – अनन्त, अपार, सबका सार, सबको सत्ता प्रदान करने वाला।
सवितः – संसार को उत्पन्न करने वाला, चलाने वाला, प्रेरणा देने वाला, पवित्र करने वाला, मन और बुद्धि को भी चलाने वाला।
वरेण्यं – वनें या अपनाने योग्य, पूजा और उपासना करने योग्य।
भर्गो – तेज स्वरूप, सब प्रकार के अज्ञान,पापों दुःखों, रोगों, तापों और क्लेशों का नाश करने वाला।
देवस्य – दिब्य ज्ञान देकर, परमानन्द प्रदान करने वाला देवता।
धीमहि – हम ध्यान करते है उस परमात्मा का।
धियोयोनः – जो हमारी बुद्धियों को
प्रचोद्यातः – प्ररेणा देकर शुद्ध करती है।

प्रार्थना का मुख्य भार्वाथ इस प्रकार हैः–

''हे परमात्मा आप सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी हो, सबके पालन पोषण करने वाले, रक्षक और अन्तरयामी हो। आप ही सबके प्राणाधार, सबको सत्ता देने वाले हो, आप ही हमारे सब प्रकार के अज्ञान, दुःखों, रोगों, क्लेशों और चिन्तावों को मिटाने वाले और समस्त सुखों और आनन्द को प्रदान करने वाले हो, आप ही हमारे कर्मों के साक्षी और बुद्धि को प्रेरणा देने वाले, हम एकाग्रिचत्र से आपका ध्यान करते हैं और आपसे नम्रता पूर्वक प्रार्थना करते हैं कि आप कृपा करके हमें बुरे कर्मों से हटाकर शुभ कर्मों में लगाएं ताकि हमारा मानव जन्म सफल हो''।

स्वामी दयानन्द जी के गायत्री मंत्र के शब्दों का अर्थ संक्षित रूप से इस प्रकार किया है।

''वह परमात्मा जिसका नाम ओम(ॐ) है और जो सारे संसार को उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्य देने वाला, सब आत्माओं को प्रकाश देने वाला, सब दुःख दूर करके, सब प्रकार का सुख और शान्ति देने वाला है। जो बेहद ग्रहण करने योग्य और जो शुद्ध ज्ञान स्वरूप है। हम उस परमात्मा को प्रेम भक्ति और पूरी श्रद्धा के साथ अपनी आत्मा में धारण करें, ताकि वह सविता देव परमेश्वर हमारी बुद्धियों को बुरे कामों से हटाकर अच्छे कामों में लगाता रहें।''

''महात्मा आनन्द स्वामी'' जो गायत्री मंत्र के बहुत बड़े उपासक थे, उन्होंने इस मंत्र के शब्दों की व्याख्या इस प्रकार की है:-

ॐ (ओम)–स्वयं एक बहुत बड़ा मन्त्र है। ''ओम'' परमात्मा का मुख्य नाम है। ॐ में ''आ, ऊ, म'' तीनों वेदों के प्रतिनिधि हैं। ऊँ की ध्वनि से जो झंकार उत्पन्न होती है। उससे आत्मा के पट खुल जाते है।

भूभूवः सवः–यह शब्द उपनिष्दों का सार है। ''भू'' का मतलब है प्राण आधार,प्राण यानि जीवन देने वाला। जैसे मछली पानी के वगैर जीवित नहीं रह सकती, इसी प्रकार कोई प्राणी ईश्वर की सत्ता के बिना जिन्दा नहीं रह सकता और जब हम परमात्मा को सबका प्राण आधार मान लेते हैं तो हमारा भी कर्तव्य बन जाता है कि हम दूसरे प्राणियों को अपने स्वार्थ के लिए कभी हत्या न करें, बल्कि उनकी रक्षा करें।

''भवः स्वः'' का यह भाव है कि जब हम गायत्री के द्वारा यह स्वीकार कर लेते हैं कि परमात्मा सबके कष्टों को दूर करके सुख देने वाला है। तो गायत्री के उपासकों को भी चाहिए कि दूसरे लोगों की न तो हानि करें और न उन्हें कष्ट दें बल्कि जहां तक हो सके उनके दुः ख दूर करें।

तत्सवितर्वरेण्यं का यह अर्थ है कि यह सारा संसार भगवान की शक्ति और प्रेरणा से चलता है। वह परमात्मा ही आत्मरूप से बुद्धि के द्वारा प्रेरणा देकर मनुष्य को कर्मों में लगाता है। जिनके विचार अच्छे हैं वह शुभ कर्म करते हैं। और जिनके विचार शुद्ध नहीं होते वह बुरे कर्म करते हैं। लेकिन सभी काम ईश्वर की सत्ता से ही होते हैं। और ईश्वर की उपासना और प्रार्थना से बुद्धि का अवश्यक सुधार होता है।

''सविता'' वह शक्ति है जिनके द्वारा मनुष्य भगवान से राजदारी की बातें करता है। इस लिए गायत्री का जप करते–करते उपासक जब ''सविता'' शब्द पर पहुँचे तो उसे उस सर्वशक्तिमान परमात्मा का खास तौर पर ध्यान करना चाहिए, जो कल्याण का मार्ग बतलाता है। जो मनुष्य की बुद्धि शुद्ध करके उसको बुरे कर्मों से हटाकर भले कर्मों

में लगाता है। जो पशु योनि से बचाता है, जो मनुष्य को मोक्ष प्रदान करता है और जो सब कुछ बुद्धि के द्वारा ही करता है. गायत्री का जप करने वाला पुरूष जीवन में पूरी तरह सफल हो जाता है। वह सब बुराईयों से छूटकर परम सुख पाता है। जो साधक गायत्री की नियम और विधिपूर्वक उपासना करते हैं वह परमात्मा के एक रूप होकर सब बन्धनों से छूट जाते हैं।

''वरेण्यं''– का अर्थ है, उस परमात्मा की शरण में चले जाना जो कल्याणकारी हैं जो मोक्ष के दाता हैं। जो उसको दुःखों रोगों बुढ़ापे के कष्टों और जन्म–मरण के चक्करों से बचाता है। जो जीवन की रक्षा करता है। यदि कोई मनुष्य संसार का सहारा छोड़कर उसको अपना बना लेता है, अपना सब कुछ उसी को सोंप देता है तो वह परमात्मा उसके जीवन निर्वाह के सम्बन्ध में उसकी सब जरूरतों को पूरा करता है और मोक्ष के पद पर भी पहुंचा देता है।

''भर्गो''– शब्द का अर्थ है कि वह परमात्मा सब तापों, संतापों, रोगों, क्लेशों और अज्ञान का नाश करने वाला है। जब उपासक जप करते हुए इस शब्द पर पहुँचे तो उसे इस बात का ध्यान और विश्वास करना चाहिए कि वह महान शक्ति मेरे सब पापों, दुःखों, रोगों, वहमों, चिन्ताओं और क्लेशों को भस्म कर देगी और मेरे जीवन में आनन्द और शान्ति का अवश्य संचार होगा। मेरे सब शारीरिक और मानसिक रूप दूर हो जायेंगे।

''देवस्य''– जब उपासक देवस्य शब्द पर पहुँचे तो उसे इस बात का विश्वास होना चाहिए कि वह परमात्मा परम देवता है। वह सब कुछ देता है। जो हमारे लिय कल्याणकारी है। क्योंकि वह हमारा परम पिता परमेश्वर है।

इसमें कोई शक नहीं कि वह सब कुछ देता है। सब पदार्थ देते हुए भी किसी पर अहसान नहीं जताता। यदि कोई मनुष्य एक जन्म में ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाता तो उसे फिर जन्म देकर शुभ कर्मों की प्रेरणा देता है।

धी महि धियोयोनः प्रचोदयात – यह शब्द गायत्री मंत्र का आखिरी भाग है। इसका भावार्थ यह है कि वह परमात्मा हमारी बुद्धियों को प्रेरणा देने वाला है, वह हमें बुरे मार्ग से हटाकर शुभ मार्ग पर लगाता है। भगवान कृष्ण ने गीता में उपदेश दिया है कि– ''मन्त्रों में मैं गायत्री मंत्र हूँ'' यानि यह मंत्र बहुत ऊँचे दर्जे का है। उन्होंने यह भी कहा है कि जो लोग इसका जप करके मेरी उपासना करते हैं; मैं उनको बुद्धि योग देता हूँ, जिससे उनका कल्याण हो जाता है।

गायत्री मंत्र में 24 अक्षर हैं और यह मंत्र में इस प्रकार सजाए गये हैं। कि मन में उनका उच्चारण करने से मनुष्य सूक्ष्म शरीर में एक

ऐसी झंकार पैदा होने लगती है जो सूक्ष्म शरीर के अतिरिक्त स्थूल शरीर पर भी अपना प्रभाव निरन्तर डालती चली जाती है जैसे वीणा के एक तार को हिलाने से अन्य तारें भी अपने आप हिलने लगती है। वैसे ही इस मंत्र के लगातार जाप से शरीर के सभी मर्म स्थानों मन, बुद्धि, चित्त आदि और शरीर की नस नाड़ियों पर इसका कल्याण कारी प्रभाव पड़ता है। मन का लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति की ओर होता जाता है। और इसके साथ–साथ सब अज्ञान और अंधकार भी नष्ट होता जाता है। आरम्भ में इस रहस्य का पता न भी चले लेकिन इसका पता उस समय साधक को लगता है जब उसका मन ईश्वर की ओर पूरे तौर पर झुक जाता है। फिर मन शुद्ध और शान्त होकर ईश्वर प्रेम और युग के सिवा और कुछ नहीं चाहता अन्त में गायत्री के उपासक के आठों के आठों चक्कर (बंधन) खुल जाते है।

प्रातः काल किसी शुद्ध स्थान पर एकाग्रता से प्रमात्मा में उनके गुणों का ध्यान रखतें हुए गायत्री का मन ही मन में किया हुआ जप बहुत लाभकारी होता है।

भगवान कृष्ण, महात्मा गाँधी, लोकमान्य, तिलक, रविन्द्रनाथ टैगोर, महर्षि दयानन्द, स्वामी, नित्यानंद, स्वामी विवेकानन्द, राम कृष्ण परमहंस, महात्मा आनन्द स्वामी और अन्य करोड़ों महापुरूष गायत्री का नियम पूर्वक आप जाप करते थे और अब भी अनेक लोग कर रहें हें। भगवान वेदव्यास ने बतलाया था कि गायत्री और ब्रह्म में कोई भेद–भाव नहीं है।

महामृत्युञ्जय मंत्र का अर्थ, महिमा और मंत्र जप से -लाभ

(महामृत्युञ्जय मंत्र)

ॐ त्रयंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्ब्बारूकमिव वन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

उपरोक्त मंत्र के अलग–अलग शब्दों का अर्थ इस प्रकार हैः–

ॐ – परमात्मा का मुख्य नाम है।
त्रयंबकं – तीन नेत्रों वाले, तीनों लोकों के मालिक भगवान शिव।
यजामहे – बड़े ध्यान से पूजन करते हैं।
सुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम् – वह हमको शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सुख शान्ति प्रदान करें।

उर्ध्वारूकमिव – जैसे खरबूजे का फल पक कर बेल से अपने आप अलग हो जाता है।
वन्धनांमृत्यों – मुत्यु के बन्धन से
मुक्षीय – छुड़ायें, मुक्त करा दें।
माम – हमको
अमृतात् – अमृता प्रदान करें। आवागमन से मुक्त करें।

मंत्र का भावार्थ :– "हे त्रिनेत्र, भगवान शिव मैं आपकी उपासना करता हूँ, आपकी प्रार्थना सुख शान्ति देने वाली और हृष्ट–पुष्ट करने वाली है। आप आध्यात्मिक उन्नति कराने वाले हैं। हे भगवान आप सब प्रकार के दुःखों, रोगों, बुढ़ापें के कष्टों और आवागमन से छुड़ाने वाले हैं। हे प्रभु, कृपा करके आप मेरी मौत को मोक्ष में इस तरह बदल दें, जिस प्रकार एक खरबूजे का फल पक जाने पर अपनी बेल से अपने आप अलग हो जाता है।

मंत्र जप का :– यह मंत्र शिव जी महाराज की अराधना करने का मंत्र है। भगवान शिव परमदयालू और कृपालु हैं। अपने भक्तों की सभी इच्छित कामनाओं को पूरा करते रहते हैं। भगवान शंकर अपने भक्तों पर बहुत जल्द प्रसन्न हो जाते हैं।

यह मंत्र जीवन शक्ति देने वाला है। इसमें शरीर की रक्षा होती है।

उपासक अकाल मृत्यु से बचा रहता है। रूद्राक्ष की माला पहनकर जप करने से अधिक लाभ होता है। यह मंत्र शारीरिक रोगों, बुढ़ापे के कष्टों और मृत्यु के भय से बचाता है। कहते हैं कि जिन रोगों का किसी वैद्य या डाक्टर के द्वारा भी इलाज नहीं हो सकता , वह भी पूरी श्रद्धा से इस मंत्र के जाप से ठीक हो जाते हैं। इस मंत्र का श्रद्धा और भरोसा के साथ जप करते–करते मनुष्य मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर लेता है। यह मंत्र उपासक को धन–दौलत, सुख शान्ति, स्वास्थ्य प्रदान करने वाला है। इसके जप से आयु भी लम्बी हो जाती है। मुख का तेज़ और शरीर का बल बढ़ता है और सभी सांसारिक कामों में भी उपासक को सफलता मिलती है। गायत्री के अतिरिक्त इस मंत्र के जप के साथ –साथ साधक को अपने कर्मों का सुधार भी अवश्य करना चाहिए तभी लाभ सम्भव है।

शनिदेव की साढ़ेसाती और ढैया का महाप्रकोप मिटाने हेतु श्री हनुमान कथा

पूर्व समय में एक बार नारद जी को अभिमान हो गया कि मैंने "कामदेव" को वश में कर लिया और ये विष्णुलोक में जाकर "हरि"

के समक्ष वर्णन करने लगे। भगवान विष्णु ने माया की नगरी रचाई और उस कौतुकी नगरी में एक राजकुमारी का स्वयंबर था। वहाँ पर नारद जी उस राजकुमारी की सुन्दरता को देखकर ''काम'' को वश में नहीं कर सकें। उनकी इच्छा हुई कि यह दिव्य रूप राजकुमारी हमें ही वरण करें, अतः जयमाला लिये राज कुमारी जब सामने से गुजरी थी तो बार–बार मुनिवर अपना सिर उनकी तरफ झुका रहे थे, वो उस समय भगवान विष्णु से प्राप्त किये ''नारायण'' नामक बन्दर के रूप में बैठे थे, इस कारण से राजकुमारी ने उन्हें वरण न करते हुए आगे निकल पड़ी।

मुनिवर की यह हास्यपद वृत्ति देखकर वहाँ पर विराजमान भगवान शंकर के दो गणों से रहा नहीं गया और मुनिवर को देखकर हँस पड़ा। इस पर उन दोंनों गणों को नारद जी ने शाप दे दिया कि तुम दोनों राक्षस योनि में उत्पन्न होगे। उनके शाप वश वें दोनों गण पुलस्त्य कुल में उत्पन्न होकर रावण और कुम्भकरण के नाम से विख्यात हुए।

वे दोनों दानव बड़े ही शक्तिशाली और मायावी थे। अपने पराक्रम से उन दोनों ने पूरी सृष्टि में हलचल मचा दी। उन्होंने तो तीनों लोकों के देवताओं को भी जीना हराम कर दिया।

रावण साधारण योद्धा नहीं बल्कि वे एक महान तपस्वी और चमत्कारिक योद्धा था। उसे सृष्टि की विनष्टकारी शक्तियों के विषय में पूर्ण ज्ञान था। अतः उसने ''शनि और महाकाल'' का भी बन्दी बनाने की इच्छा प्रकट कर शनि लोक पर चढ़ाई कर दी।

रावन ने ब्रह्मा जी से यह वर प्राप्त किया था कि वह मनुष्य और बंदरों को छोड़कर किसी से भी पराजित न हो और मनुष्य तथा बंदर को तो वे अपना भोजन ही समझते थे, अतः उससे रावण को कोई भय नहीं था।

शनिलोक पर रावण और शनि में भीषण घोर संग्राम हुआ। दोनों ओर से बाणों की वर्षा होने लगी। महाबली शनिदेव अमर्ष जनित उत्साह से निर्भय हो अपने त्रिशूल, गदा और फरसा से बार–बार राक्षसों पर प्रहार कर रहे थे तथा हाथों में वृक्ष और शिलाएं उठाकर जोर–जोर से गरजते थे और राक्षसों को पकड़–पकड़ कर पृथ्वी पर पटकते जाते थे। शनिदेव की मार से सारी रणभूमि राक्षसों के रक्त से भर गयी।

राक्षस सेना को पीड़ित देखकर रावण से शनिदेव पर भीषण बाणों की वर्षा करने लगे। उसकी वाण वर्षा से तब शनिदेव घबरा गए तभी रावण ने भगवान शंकर के दिए हुए त्रिशूल से शनि को घायल कर दिया और ब्रह्मपाश में जकड़ लिया। उन्हें घसीटते हुए लंका ले गया और वहाँ ले जाकर राजमहल से बाहर उल्टा लटका दिया। शनि

देव वहाँ बिल्कुल विवश थे क्योंकि ब्रह्मफांस का अनादर नहीं कर सकते थे, अतः धर्म–मर्यादा में बंधे कष्ट झेलते रहे और मुक्त होने हेतु बार–बार अपने इष्टदेव की अराधना करते रहे। उनकी आँखों से आँसू की धारा बह निकली किंतु उन्हें मुक्त करने रावण के सामने कोई नहीं आ सकता था। इतना ही नहीं उस महा पराक्रमी रावण ने ''महाकाल'' के ऊपर भी चढ़ाई कर दी और उसे भी संग्राम में हराकर शनि के साथ ही उल्टा लटका दिया। दोनों वहाँ लटके हुए भगवान शंकर को याद करने लगे।

एक दिन उन दोनों के करूण रूदन पर भगवान शंकर स्वयं प्रकट हो गए और उन दोनों को सांत्वना दिए कि ''धैये रखें। आपके दुःखों का अब अन्त होने वाला है और रावण का पाप अति से भी ऊपर हो चुका है। अतः शीघ्र ही–'' श्री हनुमान के रूप में आकर आप दोनों को बन्धन मुक्त करेंगें।

रावण के संहार के लिए भगवान विष्णु श्रीराम के रूप में अवतरित हुए, उनके साथ माता लक्ष्मी सीता रूप में पृथ्वी से अवतरित हुई।

अपने पृज्य पिता महाराज दशरथ की आज्ञा मानकर श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण तथा पत्नी सीता के साथ चौदह वर्ष के लिए वन में चले गए। उस समय श्रीराम के ऊपर शनि साढ़ेसती का प्रभाव था।

वन में भगवान श्री राम के दिव्य रूप पर प्रभावति होकर रावण की कुरूप बहन सुर्पनखा ने उन पर अपने रूप का मायाजाल फेंका। इस पर लक्ष्मण ने क्रोधित होकर उनकी नाक–कान काट डाले। उसने रोती हुई जाकर खरदूषण और त्रिसरा से अपना हाल सुनाई। इसपर खरदूषण और त्रिसरा ने भगवान श्रीराम को युद्ध के लिए ललकारा। श्रीराम ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए दोनों को मौत के घाट उतार दिया। यह समाचार सुन रावण को महा आशचर्य हुआ। वे क्रोधित होकर वन में आए और साधु का वेष बनाकर सीता का हरण कर लिया तथा उन्हें अशोक वाटिका में ले जाकर रखा। रावण ने अपने योगबल से यह पता सीता हरण से पहले ही कर लिया था कि यही मेरी मुक्ति का मार्ग है। अतः जान बूझ कर श्रीराम रूपी भड़कने वाले आग में कूद पड़ा।

श्री राम शनि के अशुभ दृष्टि के कारण लक्ष्मण सहित, सीता की खोज में इधर–उधर भटक रहे थे कि तभी उन्हें रूद्रावतार श्री पवन पुत्र हनुमान का दर्शन हुआ।

श्री पवन पुत्र ने सुग्रीव और राम की सुदृढ़ मैत्री कराने के बाद, वानरों की सेना के साथ सीता की खोज में निकल पड़े। वे समुद्र की खोज में निकल पड़े। वे समुद्र को लाँघकर लंका जा पहुँचे। वहाँ माता

सीता से मिलने के बाद पराक्रमी हनुमान ने अपना बल कौतुहल दिखाना प्रारम्भ कर दिया। अशोक वाटिका को उजाड़कर वहाँ के राक्षकों को मार गिराया। समूचे लंका में इस पराक्रमी हनुमान के पराक्रम से कोलाहल मच गया। क्रोधित होकर रावण के पुत्र अक्षय कुमार हनुमान को मारने आये, किंतु स्वयं ही उनके हाथों वीरगति प्राप्त हुए।

तत्पश्चात् रावण के आज्ञानुसार उनके वीर पुत्र मेघनाथ ने हनुमान को युद्ध के लिए ललकारा। महा संग्राम के बाद मेघनाद हनुमान को ब्रह्म फांस में फांसने में सफल हो गए।

श्री हनुमान ने ''ब्रह्मसूत्र'' को नहीं तोड़ा क्योंकि इसमें ब्रह्म जी की अवहेलना हो जानी थी, अतः बन्दी होकर रावण के दरबार मे लाये गए। वहाँ सर्व सम्मति से उनकी पूंछ में आग लगा दी गई, तब हनुमान का हृदय रोष से भर गया। उन्होंने अपनी जलती हुई पूंछ से राक्षसों को पीटने लगा और लंका के दुर्ग का विनाश करने लगा। वे वानर वीर राक्षसों के एक घर से दूसरे घर और उद्यानों तथा राज भवनों पर पहुँचकर आग लगाने तथा राज भवनों पर पहुँचकर आग लगाने लगे। महात्मा विभीषण की कुटिया को छोड़कर समूची लंका आग की लपटों में घूं-घूं करके जलने लगी। उस समय पवन वेग से बहने लगी। अग्नि अत्यन्त तीव्र हो गई, मानों उसमें घृत की आहुति दे दी गई हो। अग्नि के प्रभाव से ऊँचे और सुन्दर प्रासाद नष्ट हो कर पृथ्वी पर गिरने लगे। जैसे पुण्य का क्षय होने पर स्वर्ग से प्राणी पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं, वैसी ही दशा इन भवनों की थी।

राक्षस अपने-अपने घरों को बचाने के लिए इधर-उधर दौड़ रहे थे। किन्तु असफल रहे। परम ज्ञानी महाराज रावण माया के वशीभूत हो किकर्तव्य विमूढ़ हो गया और लंका को भस्म होते देखता रहा। उनका शास्त्रागार जलकर राख हो चुका था और एक मात्र विभीषण और सोते हुए कुम्भकरण का घर ही बचा रह गया, जिसका अग्नि ने भी विनाश नहीं किया।

उस समय श्री हनुमान को किसी के द्वारा भगवान शंकर के नाम जोर-जोर से पुकारने और उसके साथ भयानक रूप में रोने की आवाज सुनाई दी। श्री हनुमान उस करूण आवाज को सुनकर वहाँ पहुँचा तो देखा कि -''महाकाल'' और ''शनि'' उल्टे लटके हुए क्रन्दन कर रहे हैं और मुक्त होने हेतु भगवान शंकर को पुकार रहे हैं।

शनि देव और महाकाल को जैसे ही महावीर जी के दर्शन हुए वैसे ही वे दोनों बंधन से मुक्त होने हेतु उनसे रो-रोकर वन्दना करने लगे।

तब भगवान हनुमान को दोनों के ऊपर दया आ गई और बंधन तोड़ दिए।

इस पर शनि ने कहा– हे महावीर पवन पुत्र हनुमान मैं आपका इस कार्य के लिए सदैव ऋणी रहूंगा और दोनों प्रेमाश्रु गिराने लगे। शनि ने कहा– हे नाथ! मैं आपके सम्मान में यह वचन देता हूँ कि आपके भक्तों पर मेरा प्रकोप भूल से भी नहीं होगा। जो मानव मेरी इस कथा को पढ़ेगा या श्रवण करेगा, उस पर हमारी अशुभ दृष्टि कभी नहीं पड़ेगी। उस वक्त पवन पुत्र के एक ही इसारे पर शनिदेव ने उस जलती हुई सोने की लंका को अशुभ दृष्टि डालकर कोयले के समान काला कर दिया, जिससे समूची लंका की सुन्दरता ही नष्ट हो गई।

जो नर–नारी भगवान श्री हनुमान जी और शनिदेव की इस महिमा का पाठ करेगा। उन्हें शनि की साढ़ेसती और ढैया ने कोई भी नुक्सान नहीं पहुँचाएगा।

श्री हनुमान यंत्र सिद्धि खण्ड

यंत्र-मंत्र का परिचय शक्ति और महत्व

आज का युग अत्यधिक तीव्र गति से – ''यांत्रिका विकाश'' की ओर निरन्तर अग्रसर होता जा रहा है। इस यांत्रिक शक्तियों का निर्माण– ''देवासुर संग्राम'' से पूर्व ही हो चुका था। उस समय देवी–देवताओं ने ऐसे स्वचालित यन्त्रों का निर्माण किया जो शत्रुवों पर प्रहार करके पुनः अपने पूर्व स्थान पर लौट आता था। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण – सुदर्शन चक्र, अग्निवाण, ब्रह शक्ति आदि है।

पूर्व काल के मूल यांत्रिक परिभाषावों को लेकर आज के वैज्ञानिकों ने परमाणु बम, हाईड्रोजन बम, नेपाम बम आदि विश्व संहारक यंत्र तैयार किया है, जो छोटा आकार का होते हुए भी संसार को संहारमे की शक्ति रखता है।

इस यंत्रों को हम भौतिक यंत्रों के नाम से जानते हैं। परन्तु आज इस परम पुस्तक में जिन यंत्रों का वर्णन करने जा रहा हूँ– उसका नाम सिद्धि यंत्र है, जो आड़ी, तिरछी रेखावों बिन्दुओं, अंकों और त्रिकोणों आदि से स्वचालित है।. इस सिद्धि यंत्र को यही कलपुर्जे चलाते हैं। भौतिक यंत्र दिखाई पड़ता है और इससे हमारा भौतिक जगत् प्रभावित होता है, किन्तु इसकी अपेक्षा सिद्धि यंत्र मनुष्य का जीवन बदलने की शक्ति रखता है।

सिद्धि यंत्रों में इतनी शक्ति छिपी हुई है, जिसे प्राप्त करने के बाद मानव किसी भी असम्भव कार्य को सम्भव में बदल सकता हैं। ये यंत्र

जो इतनी विस्फोटक ऊर्जा अपने गर्भ मे छुपाए हुए हैं, आखिर क्या रहस्य है। इसका ?

यंत्रों को समझने से पहले हमें मंत्र संसार में पदार्पण करना होगा, तभी हम इस रहस्यमयी गुत्थी को सुलझा सकेंगे।

यह सम्पूर्ण विश्व भगवान का स्वरूप है। उसी प्रकार ''शब्द मात्र'' भी भगवान है। जगत का मूल कारण शब्द है। यह बात ''स्फोट वाद'' प्रतिपादित करता है।

प्रत्येक शब्द एक कम्पन्न उत्पन्न करता है और प्रत्येक कम्पन एक रूप व्यक्त करता है। ग्रामोफोन के रेकार्ड पर कुछ रेखाएँ मात्र होती हैं, जो आँखों से नहीं दिखती। इन्हीं रेखावों पर सूई घूमती है, जिससे शब्द उत्पन्न होता है। ये रेखाएँ गाने वाले के शब्द के कम्पन से रिकार्ड पर बनी हैं। वर्षों पहले फ्रांस में किसी ने एक ऐसा यन्त्र बनाया था कि उसके सम्मुख कोई गीत या स्तुति गाने पर यंत्र मे लगे पर्दे पर रखे रेत के कण उछल कर एक आकृति बना देता था। एक भारतीय सज्जन ने जब उस यन्त्र के सम्मुख ''काल भैरव'' की स्तुति गई तो यंत्र के पर्दे पर रेत के कणों से काल भेरव का रूप बन गया।

मन्त्र शब्दों का समूह है। मन्त्र ईश्वरीय शक्ति है, यह निर्माण का मार्ग है, यह शिव और शक्ति का प्रतीक है और साक्षात ''देवता'' है। मंत्र बिन्दु से विराट की ओर ले जाता है, जिससे हम आत्मा और परमात्मा का साक्षात कार करते हैं। शब्दों के समूह मंत्रों की अपनी ही भाषा है, आप ही स्वर हैं–सुर हैं– और अपना ही ताल है। जो मानव इस महान सुर–ताल को समझ लेता है– जान लेता है, वह अपने परमेश्वर के समीप हो जाता है। क्यों श्रद्धा पूर्वक सुर वो ताल में लयवद्ध होकर बोला जाता है तो मंत्र के देवता उन पर प्रसन्न हो जाते हैं और उन्हें वरदान देते हैं, जिससे साधक के मनोकामनाओं की पूर्ति होती है।

शब्दों से कम्पन होती है। सृष्टि के सब पदार्थ कम्पन से बनते–बिगड़ते हैं, यह विज्ञान भी मानता है। इसलिए यंत्रों मत्रों की शक्ति को समझना कठिन नहीं होना चाहिए। किन्तु शब्दों में क्या शक्ति है, यह सर्वज्ञ ऋषि –मुनि जानते थे। उन्होनें ऐसे शब्दों की रचना की तथा उनके प्रयोग की ऐसी विधि निश्चित की, जिससे उन मंत्रों को निर्दिष्ट विधि से काम में लेकर अभीष्ट फल प्राप्त किया जा सके।

इस विचार धारा को लेकर वेदों पुराणों और अनेक तांत्रिक ग्रन्थों की रचना ऋषि–महर्षियों ने की युग का परिवर्तन होता गया और परिवर्तन के प्रभाव से मंत्रों का प्रभाव घटा। क्योंकि इन शक्तियों को प्राप्त कर प्राणी गलत कार्य करने लगे। अतः ऋषि –महर्षियों ने मंत्र को गुप्त रखने की विधि अपनायी। इस विद्या को जीवित रखने के

लिए उन्होंने मंत्र की ऐसी गुप्त विधि का निर्माण किया, जिसे ''यन्त्र'' कहा गया।

यंत्र के सूक्ष्म शब्द और अंकों का महत्व

यंत्र के सूक्ष्म शब्द एवं समस्त अंक देवी और देवता हैं। जैसा वैज्ञानिक छात्र ही समझ सकते हैं कि ''H.Q.'' का क्या तात्पर्य है। उसी प्रकार एक तांत्रिक ही समझ सकता है। कि ''फ्रीं, हीं, कमीं, और श्रीं'' क्या है। पाठको! ये सभी सूक्ष्म शब्द देवी के स्वरूप हैं।

जैसे श्रीं का मतलब लक्ष्मी, हीं का मतलब भगवती दुर्गा और कलीं एवं फ्री का तात्पर्य कात्यायनि भगवती काली से जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार यंत्रों के प्रत्येक अंक भी देवता हैं, जो यन्त्र में लिखने पर अपना प्रभाव दिखाता है।

इतना ही नहीं यंत्र के लाईन, त्रिकोण भुपुर का भी बहुत विशाल और अदभुत अर्थ है। जैसे– बिन्दु का मतलब ब्रह्म, त्रिकोण का मतलब शिव, और भुपुर की तुलना भगवती से की गई है। उस यन्त्रों का रेखा चित्र अनुभूतियों के सूक्ष्म लोक के और शक्ति के विविध स्वरूपों के रेखा चित्र हैं और सूक्ष्म सशक्त रूप से कार्य करते हैं।

इनके ज्ञाता नहीं रहे, समझने वाले नहीं रहे, प्रयोग करने वाले नहीं रहे, इसलिए यह तकनीक इतनी सीमित हो गई है कि आज इसका अर्थ समझना दुश्वार हो गया।

भारतीय विज्ञान यन्त्रों को– मांसल नहीं करता, रेखा चित्रों को ठोस रूप नहीं देता बल्कि उसके माध्यम से ''शक्ति के बीज'' को टटोलता है और उसे सक्रिय करता है। परन्तु हमारा विज्ञान अभी तक यह जान नहीं पाया है कि किसी पदार्थ की अन्तः शक्ति को किस वातावरण और विधि से प्रकट किया जा सकता है।

पाठको! यंत्र–मंत्र की शक्तियाँ तुरन्त लाभ प्रदान करती हैं, इसमें कोई ससंय नहीं करना चाहिए। अपने रिसर्च के अनुसार यंत्र–मंत्रों पर आधारित कई पुस्तकें मैं लिख चुका हूँ, जो अमित पाकेट बुक्स जालंधर सिटी से प्रकाशित हो चुकी हैं और इनसे भारत ही नहीं विदेशों की भी पाठकगण पूर्ण लाभ उठा रहे हैं क्योंकि पुस्तकों में मैंने केवल उसी यंत्र मंत्रों का वर्णन किया हूँ जिसकी सिद्धि स्वयं प्राप्त किया हूँ। वर्तमान समय में भी हज़ारों दुखी लोग पत्रों द्वारा हमसे सम्पर्क स्थापित कर, स्वयं मिलकर–यंत्र प्राप्त कर गारंटी के साथ लाभान्वित हो रहे हैं और आप भी किसी भी समस्यावों से उबरने हेतु, कोई सम्पर्क स्थापित कर यंत्र प्राप्त कर दुखद जीवन को सुखी बना सकते हैं।

यह परम पवित्र पुस्तक श्री हनुमान जी की विष्यो पर आधारित है, अतः इसमें मात्र हनुमान जी के अमोध यंत्र– मंत्र का विस्तृत चर्चा करेंगे।

यंत्र लिखने का विधान

पाठको! श्रद्धा यन्त्रों का प्राण है। श्रद्धा संहित रहकर यन्त्र का निर्माण करना जीवन है। यन्त्रों में रेखावों बीजों को बीजाक्षरों या मन्त्रों को विधि विशेष द्वारा संयोजित किया जाता है।

यंत्र के प्रति सन्देह करने से यन्त्र मृत हो जाता है और मृत वस्तु कोई भी कार्य नहीं कर सकती। यन्त्र के बारे में यह भी कहा गया है कि– "कर गये तो कसरत, चूक गये तो मौत"। क्योंकि यंत्र लिखते समय जरा सी भी असावधानी मौत के मुँह में झोंक देता है। इसलिए यन्त्र की साधना की अभीष्ट सिद्धि प्राप्ति हेतु किसी सिद्ध गुरू से दीक्षा लेकर ही यन्त्र निर्माण करना चाहिए। यन्त्र की प्रयोग विधि पुस्तकों में मिलती जरूर है, किन्तु पुस्तकों को सिर्फ पथ प्रदर्शन ही समझे, क्योंकि इसका ज्ञान और दिशा गुरू ही निर्धारित करता है। यदि आप आवश्यकता समझें तो यन्त्र–मन्त्र की सिद्धि में हमसे परामर्श और सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। मैं यन्त्र–मन्त्र के प्रसार– प्रचार और विस्तार के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ।

यन्त्र मनुष्य की गुप्त सूक्ष्म शक्तियों को उदय करता है। यन्त्र की रचना करते समय रेखाएँ शुद्ध भाव का रचना करते खींचनी चाहिए, क्योंकि रेखाएँ ही मनुष्य के अन्तः करण की गुप्त शक्तियों को आन्दोलित करती हैं। उस समय मन तथा चित्र के सहयोग से आसक्ति उत्पन्न होती है और अंहकार तथा बुद्धि के सहयोग से भाव तत्व का उदय होता है। (पूर्ण रूप से जानकारी हेतु पढ़ें–वाई. एन. झा. 'तूफान' द्वार रचित–"यन्त्र मन्त्र द्वारा भाग्य बदलिये") तथा अन्तः करण निर्मल हो जाता है और साधक की मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

यन्त्र विद्या वेद और ईश्वरीय शक्ति का सम्मिश्रण

यन्त्र का मूल "वेद" है और वेदों का मूल मन्त्र, जो शब्दों, अंकों रेखावों आदि के रूप में ईश्वरीय अवतार के रूप में हम मानव को प्राप्त है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने राम चरित मानस में कहा है कि - कलियुग में जीवों के कष्टों को देखकर उसे दूर करने के लिए

जगहित की करूण कामना से प्रेरित होकर श्री ''उमा महेश्वर''(शिवजी) ने मन्त्रों और यन्त्रों की सृष्टि की । यद्यपि इन यन्त्रों और मन्त्रों के अक्षर अंक आदि अनमिल होते हैं तथा इसका कोई अर्थ भी नहीं होता तथापि महेश के प्रताप से ये मन्त्र और यन्त्र तत्काल अपना चमत्कारिक फल प्रकट कर देते हैं।

यन्त्र–मन्त्र शक्तियों का वेद स्वतः प्रमाण हैं, इनको किसी से प्रमाणित होने की आवश्यकता नहीं। अतः यन्त्र–मन्त्र की प्रमाणिकता भगवान शंकर के मुख से निकले होने के कारण सिद्ध है। आइये अब आपको यन्त्रों की सिद्धि विधि की जानकारी प्राप्त कराता हूं।

श्री हनुमान दर्शन मंत्र

समस्त युगों में सब दिनों के लिए श्री रामचन्द्र जी से अमरता का वरदान पाने वाले श्री हनुमान जी का यह अद्भूत चमत्कारी यन्त्र है। यह यन्त्र हनुमान जी भक्तों के लिए वरदान स्वरूप ही समझा जाय, क्योंकि इस यंत्र की साधना से साधकों को हनुमान जी का प्रत्यक्ष दर्शन मिल जाता है।

नं	छं	जं	चं
दं	दं	चं	चं
जं	छं	जं	वं
छं	नं	जं	हं

साधना विधिः– इस यन्त्र का निर्माण कार्य मंगलवार के दिन मध्य रात्रि में प्रारम्भ करें। बीस रात के अन्दर सवा लाख यन्त्र लिखें। यन्त्र लिखने के लिएं सफेद कागज, सिन्दूर की स्याही, और अनार की कलम का उपयोग करें। बीसवें दिन रात्री में सवा लाख यन्त्र पूरा हो जाने पर, वहां पर ब्राह्मण द्वारा पूजा–पाठ हवन करावें। तत्पश्चात् 5 ब्रह्माण को मीठा भोजन करावें। फिर एक यन्त्र तांबे की ताबीज में भरकर बाजू में या गले में धारण करें और बाकी को नदी मे प्रवाहित कर दें। सिद्धि मिल जायेगी और कुछ ही दिनों में भक्त शिरोमणि के दर्शन प्राप्त हो जायेंगे। परन्तु ध्यान रहें–यन्त्र सिद्धि के दिनों ब्रह्मचर्य पालन एवं नित्य ही प्रातः काल पवित्र होकर–**''ॐ हनुमते नमः''** का 5 माला जप भी करते रहें।

उपरोक्त सिद्धि विधि आरम्भ करने से पूर्व योग्य सिद्ध गुरू से सलाह अवश्य प्राप्त कर लें। हनुमान जी की कोई भी मन्त्र सिद्धि में ब्रह्मचर्य पालन नितान्त आवश्यक है।

विजय, सफलता, शक्ति, सन्तान, विद्या व धन प्राप्ति हेतु श्री हनुमान यन्त्र

यह यन्त्र श्री हनुमान जी का परम शक्तिशाली यन्त्र है। साधक जब यह यन्त्र स्वयं साधना कर या गुरू से प्राप्त कर धारण करता है। तो हर स्थानों पर विजय, सफलता, शक्ति उनका चरण चूमती हैं और साधक धन, सन्तान, सुख और प्रसन्नता से परिपूर्ण हो जाता है। कुश्ती में लड़ने वाले पहलवान लोग इस यन्त्र को धारण कर यदि अखाड़े में जाय तो विजय निश्चित है। भूत–प्रेत के रोगी या असाध्य रोगी को यह यन्त्र गले में डाल दिया जाय तो अवश्य निरोग हो जाता है।

साधना विधिः– यह यन्त्र साधना भी मंगलवार को ही आरम्भ करें। मध्य रात्रि में स्नानदि से पवित्र कमरे में आम लकड़ी का सिहांसन स्थापित करें। सिहासन पर हनुमान जी की तस्वीर, लाल आसन बिछाकर रखें। धूप व देशी घी का दीपक जगावें । हनुमान जी को लड्डू का प्रसाद चढ़ावें। इसके बाद अष्टगंध की स्याही या लाल स्याही से अनार की कलम द्वारा, भोजपत्र पर, या कागज पर 501 यन्त्र निर्माण करें। यह कार्य सवा महीने तक लगातार रात्रि में करें। यन्त्र लिखने के बाद नित्य ही रूद्राक्ष की माला से नीचे लिखित मन्त्र का जप करें। अन्तिम रात्रि में निम्न मंत्र से ही। माला हवन करें। अर्थात् 108 बार हवन सामग्री द्वारा निम्न मंत्र से हवन करें।

मंत्रः– ॐ हनुमते रूद्रात्माकाये हुँ फट्

अन्तिम दिन की रात्रि में अन्तिम लिखा यन्त्र तांबे के ताबीज में भरकर. लाल डोरे के साथ गले में धारण कर लें। बाकी लिखे सभी यन्त्र बहते दरिया मे बहा दें। इतना नियम करने के पश्चात् यन्त्र सिद्ध समझे। इसके पश्चात् मंगलवार के दिन पवित्र होकर यदि स्वयं आप यन्त्र निर्माण कर किसी को प्रदान करेंगे तो उपरोक्त सभी फलों की
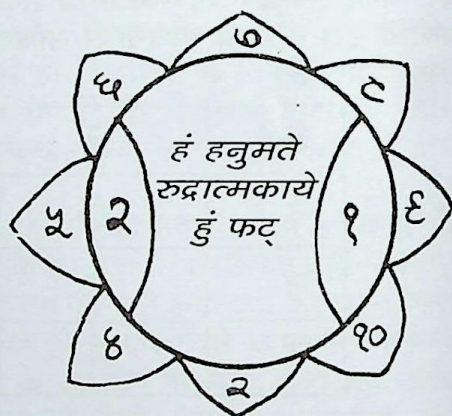
प्राप्ति धारण कर्त्ता को प्राप्त होगी। यदि स्वयं यन्त्र सिद्ध करने में असमर्थ हैं तो किसी भी समस्यावों को उबरने हेतु, कोई भी कामना प्राप्त करने हेतु पंडित वाई. एन. झा. के कार्यालय से ''यन्त्र सिद्ध प्राप्त कर'' सफलताएँ हासिल कर सकते हैं।

नौकरी, मुकदमे में विजय, परिवार में शन्ति, सफलता हेतु हनुमान यन्त्र

नीचे निर्मित यन्त्र धारण करने से सरकारी नौकरी, मुकद्मे में विजय, पारिवारिक क्लह–क्लेश का नाश, विद्या बुद्धि की प्राप्ति होती सर्वत्र सफलता हाशिल होती है।

साधाना विधिः– इस महायन्त्र का निर्माण चैत्र मास शुक्ल पक्ष ''रामनवमी'' की रात्रि में करें। रात्रि के समय 1100 यन्त्र लिखें। यन्त्रा लिखना आरम्भ करने से पूर्व आम लकड़ी की सिहांसन पर लाल वस्त्र बिछाकर हनुमान जी तस्वीर की स्थापना करें। धूप–दूप जगावें। गेहूँ, आटे, देसी घी व गुड़ से बना चूरमा का प्रसाद चढ़ावें। इसके पश्चात् अनार की कलम, रक्त चन्दन या लाल स्याही से कागज पर यन्त्र निर्माण करना आरम्भ करें। 1100 यन्त्र लिखने के बाद निम्न मन्त्र का 5 माला जप करें–
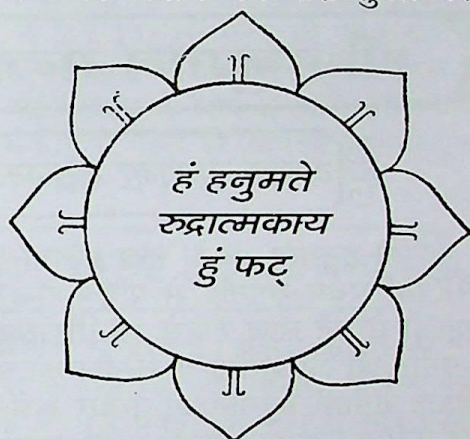
ॐ नमो हनुमते रूद्रावताराय सर्वशत्रुसंहारणाय, सर्वकामना देवाय सर्व रोग–शोक हराय रामदूताय नमः।।

जप समाप्त होने के बाद हनुमान जी को प्रणाम करें। अन्तिम लिखे यन्त्र को लाल डोरे के साथ गले या बाजू में धारण कर लें। बाकी लिखे यन्त्र को प्रातः काल दरिया में बहा दें।

रोग, शोक, अशान्ति और ऋण से मुक्ति हेतु श्री हनुमान यन्त्र

सिद्धि विधि–किसी भी मंगलवार के दिन प्रातः काल ब्रह्म बेला में

उठकर शौचादि, स्नानदि से पवित्र होकर भोजपत्र पर केसर की स्याही से मोर पंख की कलम के द्वारा 108 यन्त्र लिखें।

इसके पश्चात् निम्न मन्त्र का 5 माला जाप करें:-

।। ॐ फ्रौं फ्रीं श्री हनुमत्ये नमः।।

अन्तिम यन्त्र को तांबे के ताबीज में भरकर लाल डोरे के साथ गले या बाजू में धारण करें। बाकी यन्त्र दरिया में बहा दें।

ऋण मुक्ति के लिए मंत्र
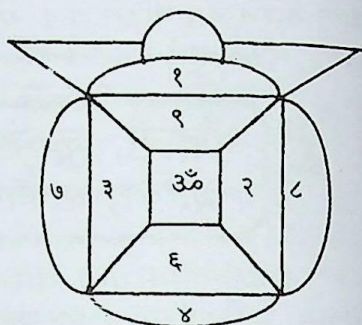
श्री हनुमान मन्त्र सिद्धि खण्ड

मन्त्र साधना आरम्भ से पूर्व विधि

श्री हनुमान जी के मन्त्र साधना करते समय (वैदिक मन्त्र सिद्धि में) सर्व प्रथम स्नानदि से पवित्र होकर लाल वस्त्र धारण करें। आम लकड़ी से बने लाल रंग से रंगे सिंहासन पर, लाल आसन बिछाकर श्री हनुमान जी की प्रतिमा या तस्वीर की स्थापना करें। धूप व देशी घी का दीपक जगावें। हनुमान जी तस्वीर फूल माला चढ़ावें। लड्डु का या गुड़ का केले का प्रसाद चढ़ावें। इसके पश्चात् सिद्धि में सफलता हेतु, विघ्न नाश हेतु, एवं सिद्धि काल में खोंट होने के कारण अनिष्टों में बचाव हेतु- सिद्ध गुरू से प्राप्त- ''सिद्ध सफलता प्राप्ति यन्त्र''- लाल डोरे में डालकर गले में धारण करें। इसके बाद लाल कम्बल के आसन पर बैठ, रूद्राक्ष की माला से ''निश्चित संख्या'' मन्त्र जप करें।

निश्चित जप संख्या मन्त्र जिस दिन (या रात) पूर्ण हो जाय, उस समय आम की लकड़ी पर आग जलाकर, हवन सामग्री के साथ 5 माला मन्त्र करते हुए हवन करें। हवन के बाद आरती करें। इसके पश्चात् हनुमान जी को प्रणाम करें।

उपरोक्त विधि किसी भी हनुमान मन्त्र सिद्धि में प्रयोग करना चाहिए। बिना गुरू की आज्ञा लिए और ''गुरू यन्त्र'' धारण किए बिना कोई भी मन्त्र सिद्धि न करें।

क्योंकि साधना काल में त्रुटियाँ भी होती हैं, जिससे साधक को कई अनिष्टों का सामना करना पड़ता है, कभी-कभी तो जान से भी

हाथ धोना पड़ता है, अतः गुरू यन्त्र धारण किए बिना सिद्धि करना–मृत्यु को निमंत्रण देना है।

विजय व सफलता प्राप्ति, धन, पुत्र, ऐश्वर्य प्राप्ति हेतु श्री हनुमान मन्त्र

मन्त्रः–

ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहाण भूत–भविष्यद्वर्तमानाय दूरस्थसमीपस्थां छिन्धिछिन्धि भिन्धी सर्वकाल दुष्ट बुद्धि नृच्याटोयोच्चाटाय। परबलान क्षोभय–क्षोभय मम सर्व कार्याणिॐ साधय साधय। ॐ नमो हनुमते ॐ हवांग हविंग हुं फट् देहि शिव सिद्धि ॐ हवांग ॐ हवींग ॐ ह्रीं ॐ हवेंग हः स्वाहा।।

सिद्धि विधिः–इस मन्त्र का जाप मंगलवार की रात्रि में व्रत रखकर करें। प्रत्येक मंगलवार की रात में 2100 सौं मन्त्र का जाप रूद्राक्ष की माला से करें। इस प्रकार 41 मंगलवार में मन्त्र की सिद्धि हो जाती है। 4वें मंगलवार की रात्रि में जप समाप्ति के बाद 5 माला मन्त्र जप से हवन करें। 41 मंगलवार पूर्ण होने से पहले ही आपकी कामना पूर्ण हो जायगी।

असाध्यरोग निवारण हेतु श्री हनुमान मन्त्र

प्रथम प्रयोगः–यदि आप बिमारी से ग्रस्त हैं। इलाज कराने पर भी वह बिमारी जड़ से नहीं समाप्त हो रही है और उसके कारण पूरा परिवार ही परेशानी में रहता है तो इस प्रकार के रोग से मुक्ति हेतु आप अवश्य यह प्रयोग करें।

मन्त्रः–

हनुमन्नञ्जनी सुनो वायुपुत्र महावलः।
अकस्मादागतोत्पांत नाशयाशु नमोस्तुते।।

साधना व अनुष्ठान विधिः– इस मन्त्र का जप अनुष्ठान विधि से पंडित को रखकर भी कर सकते हैं। इस अनुष्ठान में ग्यारह दिनों तक नित्य तीन हजार माला का जप होना आवश्यक है। पांच पंडित रखकर जप करावें। बाद में अन्तिम दिन पाँच–पाँच माला उपरोक्त मन्त्र के द्वारा ही पंडितों से हवन करावें। इससे असाध्य रोग शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

दूसरा प्रयोग–किसी तांबे के पात्र में गुरू से प्राप्त किया– ''सिद्ध महामृत्युञ्जय यन्त्र'' को रखकर, शिवजी की तस्वीर के समक्ष स्थापित करें। तत्पश्चात यन्त्र के पास धूप और देसी घी का दीप जगाकर निम्न

मन्त्र का जप 51 बार 11 दिन तक करें तो असाध्य रोगों से मुक्ति मिल जायगी।

मन्त्रः–

"ॐ ह्रौ जूं सः मृत्युञ्जाय फट्" ॥

11 दिन मन्त्र जप करने के पश्चात् यन्त्र काले डोरे के साथ गले में धारण कर लें। कुछ ही दिनों के बाद असाध्य रोगों से मुक्ति मिल जायगी, आजमा कर देखें।

भूत, प्रेत बाधा निवारक हनुमान मन्त्र

मन्त्रः–

ॐ दक्षिण मुखाय पञ्चमुख हनुमतेकरालवदनाय नारसिंहाय ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हौं हुं हः सकल भूत–प्रेतदमनाय स्वाहा।।

साधना विधिः– यह मन्त्र दस हजार बार जाप करने पर सिद्ध हो जाता है। मन्त्र जप के बाद अन्तिम दिन 5 माला निम्न मन्त्र द्वारा हवन करें। उपरोक्त विधि अपनाने पर मन्त्र सिद्ध हो जायगा, फिर भूत–प्रेत बाधा से पीड़ित व्यक्ति को 11 बार मन्त्रोच्चारण कर सिर झाड़ देंगे तो भूत–प्रेत बाधा समाप्त हो जायगी।

महामारी, अमंगल, ग्रह दोष निवारक हनुमान मन्त्र

मन्त्रः–

ॐ ऐं श्रीं हवांग हवांग हुवींग–हुवींग ह्रों हवः ॐ नमो भगवते महाबलपराक्रमाय भूत प्रेत पिशाच ब्रह्म राक्षस शाकिनी डाकिनी यक्षिणी पूतना मारी महामारी राक्षस भैरव वैताल ग्रहराक्षसादिकान् क्षणेन हन–हन भञ्जय भञ्जय, मारय शिक्षय शिक्षय महामहेश्वेर रूद्रावतार ॐ ह्रं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमादाख्याय रूद्रायसर्वदुष्ट जन मुख स्तम्भन कुरू–कुरू स्वाहा, ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हवं टं टं टं फट् स्वाहा।।

साधना विधिः– यह मन्त्र की सिद्धि मंगलवार के दिन से आरम्भ करें। लगातार 7 मंगलवार तक एक–एक हजार मन्त्र का जप करें. अन्तिम मंगलवार के दिन 7 माला हवन करे। साधना अर्धरात्रि में करें।

साबर साधना खण्ड

साबर मन्त्र एवं श्री हनुमान

गोस्वामी तुलसी दास जी ने ''रामचरित मानस'' में कहा हैं कि कलियुग में जीवों के कष्ट को देखकर उसे दूर करने के लिए जग हित की करूण कामना से प्रेरित होकर ''श्री उमा महेश्वर'' ने इन साबर मन्त्रों की सृष्टि की। यद्यपि इन मन्त्रों के अक्षर बिलकुल ही अनमिल होते हैं तथा इसका कोई अर्थ भी नहीं होता तथापि महेश्वर के प्रताप से मन्त्र तत्काल अपना चमत्कारिक फल प्रकट कर देते हैं।

साबर मन्त्र को किसी भी देवि–देवताओं ने कीलित नहीं किया, इसीलिए ये मन्त्र अल्प साधना एवं प्रयोग से ही सिद्ध हो जाते हैं।

साबर मन्त्रों में देवों में देव ''महादेव'' का तथा देवियों में ''कामारव्या'' देवी का स्मरण विशेष रूप से किया जाता है। श्री रामचन्द्र, लक्ष्मण, हनुमान एवं सुग्रीवादि की शक्ति का स्मरण करके ही साबर मन्त्र रचे गए हैं। साबर मन्त्रों की साधना से इन सूक्ष्म शक्तियों या देव शाक्तियों का अनुग्रह प्राप्त कर सभी लौकिक कार्य सिद्ध किए जा सकते हैं।

श्री हनुमान चिरंजीवी हैं तथा जब तक यह पृथ्वी है, तब तक श्रीराम काज के साधन एवं लोक हित की सिद्धि के लिए धरा पर निवास करेंगे। उनकी शाक्ति सर्वत्र वायु प्रवाह के समान व्याप्त है।

साबर मन्त्रों में न कोई लम्बा, चौड़ा विधि–विधान, न कोई मुश्किल मन्त्र उच्चारण,न व्यर्थ का आडम्बर है, क्योंकि साबर साधनाएँ रची ही गयी हैं गृहस्थ साधकों को जीवन को ध्यान में रखकर–पूर्ण प्रमाणिकता के साथ साबर साधनाएँ निर्विवाद रूप से सर्वोपरि हैं, क्यौंकि साबर साधनाएँ बिन किसी लाग–लपेट के जीवन के छोटे से छोटे पक्ष को स्पर्श करते हुए आगे बढ़ती हैं।

सावर मन्त्रों के अद्भुत चमत्कारिक फल व साधना विधि

साधक या साधिका किसी भी सावर साधना को पूरे वर्ष भर में कभी भी किसी भी शुक्रवार की रात्रि, विशेष कर दीवाली, होली,

नवरात्रे का अष्टमी की रात्रि को कर सकते हैं। सूर्य ग्रहण व चन्द्रग्रहण के समय में भी मन्त्र सिद्धि का विधान है।

इसकें साथ ही शिवरात्री से लेकर चैत्र नवरात्रि के मध्य का काल इन साधनावों को सम्पन्न करने का विशिष्ठ अवसर होता है, क्योंकि यह ''तन्त्र माह'' होता है, जो एक छोर पर भगवान शिव से तथा दूसरे छोर पर शक्ति से सम्पर्कित होने के कारण अद्‌भुत रूप से चैतन्य हो जाता है।

काफी दिनों से हम यह विचार करते रहे थे कि जिस कार्य की सफलता के लिए हम वैदिक एवं तांत्रिक मन्त्रों का प्रयोग करते हैं, उसी कार्य को साधारण ओझा, मौलवी, या कम पढ़ा लिखा व्यक्ति कम समय में सरलता में सफल कर देता है।

जहाँ हमें वैदिक तथा तांत्रिक अनुष्ठानों का सहारा लेना पड़ता है। वहीं वे साधारण आदमी– सावर मन्त्रों के सहारे कष्ट प्राप्त व्यक्ति को कम समय और कम खर्च में ठीक कर देते हैं। आज भी ऐसे लोग ज्यादा सफल हैं, जो साबर मन्त्रों के सहारे लोगों का सिर दर्द से लेकर मृत्यु भय तक दूर कर देते हैं। यहीं नहीं साबर मन्त्रों यन्त्रों टोने–टोटके के सहारे दूसरों को परेशान भी कर देते हैं।

आज से 20 वर्ष पहले हमारे पास एक ऐसा व्यक्ति आया जिसे हमने यह कह कर वापस कर दिया था कि तुम्हारी पत्नी को ''मनोवैज्ञानिक रोग'' है। तुम भूत–प्रेत या किसी प्रकार के जादू–टोने के बारे में मत सोचो, बल्कि इसके इलाज के लिए अपनी पत्नी को किसी योग्य चिकित्सक (डाक्टर) को दिखाओ।

उसने उस समय हमसे तांत्रिक उपाय करने की जिद की तो हमने ग्यारह दिन का सात्विक वैधिक अनुष्ठान उसे बता दिया और यह भी बता दिया कि केवल सामग्री का खर्च लगभग पाँच हजार रूपये आएगा। कई योग्य ब्राह्मण लगेंगे। जिनको अलग से दक्षिणा देनी होगी। हमारी बात सुनकर वह व्यक्ति वापस चला गया, क्योंकि इतना खर्च वह नहीं कर सकता था। कुछ दिनों के बाद वहीं व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ आया। आते ही उसने हमसे चुनौती पूर्ण शब्दों मे कहा– पंडित जी! मेरी पत्नी अब पूर्ण स्वस्थ हो गयी है। उसे हमारे पड़ोसी गाँव के ओझा (जिस गाँव का नाम पोठिया बाजार, कटिहार जिला में बिहार राज्य केअर्न्तगत पड़ता है।) श्री चेत नारायण झा जी के झाड़– फूक के बाद स्वस्थ कर दिया और खर्चा भी यही करीब पाँच–सात सौ के आस–पास लगा, और आप कह रहे थे कि .....।

इस अपमान को मैं बर्दाशत नहीं कर सका और उसी व्रक्त माता महाकाली का ध्यान लगाया और यह जानने का प्रयास किया कि ऐसी कौन सी तांत्रिक कियाएँ हैं, जो कम समय और कम खर्च में सफलता

दे देती है। काफी देर तक ध्यानमग्न रहने के बाद त्राटक शक्ति से आदेश मिला– ''साबर मन्त्र की साधना करो''।

हमारा माथा ठनका। क्या साबर मन्त्रों में इतनी शक्ति होती है। जिन मन्त्रों को हम साधारण गुनिया या झाड़–फूल करने वालों का कहते थे, मानता था, वहीं मन्त्र क्या इतने शक्तिशाली हैं जो हमारे वैदिक व तांत्रिक मन्त्रों को चुनौती दे सके।

उसी दिन से मैंने साबर मन्त्रों की खोज़ आरम्भ कर दी। इसके साथ ही साबर मन्त्रों की उपयोगिता, महत्व प्रयोग विधि तथा शक्ति के साथ वास्तविक्ता सत्यता परखने जोखने लगा। संयोग था ''कामारव्या'' के हमारे तांत्रिक गुरू जी वैद्यनाथ धाम अर्थात् ''देवघर '' पधारे तो हमने उनसे साबर मन्त्रों के बारे में जो कुछ बताया वह हमारे लिए आश्चर्य जनक था।

तबसे विश्वास हो गया। गुरू कृपा हुई। उन्होंने साबर मन्त्र हमें सिखाए कुछ लिखाएं और कुछ का प्रयोग करके साबर मन्त्रों का चमत्कार भी दिखाया।

साबर मन्त्र किसी वेद में, शाखा में, पुराणों में या अन्य किसी ग्रन्थ में एक जगह संकलित नहीं मिलते। ये लोक भाषा में, लोक प्रचलित है। लेकिन अपने आप में ये स्वयं सिद्ध है और अनुभूत है कि साबर मन्त्रों में बड़ी शक्ति है।

साबर मन्त्र की श्रेष्ठता, शब्द, संचयन ध्वनि तरंग प्रभाव, उनकी उत्पत्ति तथा विशिष्ठता के बारे में गोस्वामी तुलसी दास ने मात्र एक पंक्ति में यह कह दिया है, जिससे स्पष्ट होता है कि उन्हें भी साबर मन्त्रों की शक्ति पर पूर्ण विश्वास था

अनिमल आखर अरथ न जापू।
प्रकट प्रभाव महेस प्रतापू।।

वैदिक तथा तांत्रिक मन्त्रों को जब शंकर जी ने कीलित कर दिया तो उन्होंने देवताओं, मनुष्यों और तांत्रिकों की प्रार्थना पर साबर मन्त्रों को प्रकट करके उनके महत्त्व का वर्णन किया। इसलिए साबर मन्त्रों को उत्कीलित करने की आवश्यक्ता नहीं होती।

साबर मन्त्र के प्रयोग कभी निष्फल नहीं जाते। इसके न्यास, ध्यान आदि की चिन्ता नहीं करनी होती। इनका कोई अर्थ नहीं होता। इनके अर्थों पर ध्यान देने की कोई आवश्यकता नहीं होती। इनके अधिक जप करने, इनका अनुष्ठान करने की आवश्यकता नहीं होती। यह साबर मन्त्र अनपढ़, सामान्य व्यक्ति से लेकर महान से महान विद्वान व्यक्तियों के लिए भी समान रूप से उपयोगी होता है।

साबर मन्त्रों की विशेषता यह है कि यह छोटे से छोटे प्रयोजन से लेकर मारन, मोहन, उच्चारण, कीलन, विद्वेषण, वशीकरण तक अपना

व्यापक एवं शीघ्र प्रभाव दिखाते हैं। इस मन्त्र में काफी चमत्कारिक प्रभाव भरा हुआ होता है। किसी वस्तु को दूसरी वस्तु में बदल देना, नज़र बाँधकर कुछ का कुछ दिखाना शाबर मन्त्रों के लिए आसन है। रोग दोष, भूत–प्रेत बाधा आदि को साबर मन्त्र शीघ्र दूर कर देते हैं।

साबर मन्त्र की तरह ही ''शाबर यन्त्र'' टोटका भी प्रभावशाली होते हैं। किन्तु दुष्ट प्रकृत्ति के लोग साबर मंन्त्रों , यन्त्रों और टोटकों से नाजायज कार्य भी करते हैं। इस तरह के अनैतिक कार्य के कारण भी साबर मन्त्र आप ने महत्त्व एवं प्रभावों से कभी निष्फल नहीं होते। इनसे किसी भी व्यक्ति को पीड़ा रहित भी किया जा सकता है और इन्हीं से अपने शत्रु को भी पीड़ा पहुँचाई जा सकती है।

शाबर मन्त्रों को वर्ष में एक बार दीपावली के अतिरिक्त आवश्यक्ता पड़ने पर चन्द्रग्रहण , सूर्य ग्रहण तथा होली की रात में भी सिद्ध किया जा सकता है। विवषता में कुछ साबर मन्त्र ऐसे भी हैं, जिन्हें रविवार या मंगलवार को भी सिद्ध किया जा सकता है। इनके सिद्ध करने में ज्यादा सामग्री या अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं होती।

महानिशा की रात शीघ्र सिद्धि प्रदायक है। इसलिए दीपावली की रात महानिशा से ग्यारह बजे से पाँच बजे प्रातः तक में मन्त्र सिद्ध कर लेना ज्यादा उपयुक्त रहता है।

साबर मन्त्रों में दो बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। पहला यह कि मन्त्र जैसा लिखा है या किसी ने सिखाया है। वैसा ही बोलना चाहिए। मन्त्र के अक्षर, शब्द या भाषा को शुद्ध करने या संशोधित करने का प्रयास कदापि नहीं करना चाहिए। उनमें कभी ''व्याकरण दोष'' भी न देखा जाए।

दूसरी बात यह है कि साबर मन्त्रों को बिना ठहरे, विराम लिए तेजी से एक प्रभाव में बोलना चाहिए। इसमें अर्थ विराम या पूर्ण विराम का महत्व नहीं होता।

किसी भी दशा में साबर मन्त्रों का प्रयोग बुरी भावना से और अनैतिक विचार से कदापि न करें। हालांकि साबर मन्त्र अपना प्रभाव किसी भी कार्य में अवश्य दिखायेंगे, पर प्रयोग गलत न करना ही आपकी महानता और मानवता होगी।

हाँ; जन कल्याण में इनका प्रयोग खुल कर करें।

स्वयं सिद्ध किया हुआ, अनेकानेक सफल प्रयोग किया हुआ– साबर मन्त्र व सिद्धि विधि नीचे लिख रहा हूँ। स्वयं पाठक गण इन मन्त्रों को सिद्ध कर सच्चाई से अवगत हो सकते हैं।

नीचे का लिखा प्रथम मन्त्र साबर मन्त्रों का ''सुमेरू'' हैं। किसी भी साबर मन्त्रों की ''जाग्रत'' या सिद्ध करने के पूर्व यह मन्त्र को अवश्य पढ़ लें, तब कोई मन्त्र प्रयोग करें। इस ''सुमेरू मन्त्र'' की

दीपावली की महानिशा में 108 बार जप करके सिद्ध कर लें। यह परम जाग्रत मन्त्र है किसी भी साबर को स्फूर्ति एवं शक्ति भरता है।

साबर मन्त्रों का सुमेरू

''गुरू सठ गुरू सठ गूरू है वीर
गूरू साहब सुमरों बड़ी भांति
सिंगी टोरो बन कहौं मन नाऊँ
करतार सकल गुरूण की हर भजे
घट्ठा पकड़ उठ नाग—चेत
सम्भार श्री परमहंश।''

सिद्धि विधिः— दीपावली की रात्रि में ग्यारह बजे के बाद, शिव जी तस्वीर के समक्ष—धूप—दीप जगाकर, कम्बल के आसन पर बैठ जाएँ। चावल का घोल तैयार कर कटोरी में रख लें। मन्त्र पढ़े और चावल घोल से मन्त्र समाप्ति पर मस्तक पर तिलक लगावें। इस प्रकार यह प्रयोग 108 बार करें। तत्पश्चात् शिवजी को प्रणाम करें, बस मन्त्र सिद्ध हो गया। अब कोई दूसरा साबर मन्त्र सिद्ध करें तो उन मन्त्रों का जप आरम्भ करने से पहले यह ''सुमेरू मन्त्र'' पढ़ लें।

रक्षा कवच मन्त्र

नोटः— साधक हो या सामान्य व्यक्ति हर किसी को सर्व प्रथम अपनी रक्षा करनी चाहिए। हो सकता है आपके ऊपर ही कोई दूसरा तांत्रिक कोई प्रयोग कर दे तो आप दूसरों की रक्षा करने के पहले ही स्वयं कष्ट में पड़ जायेंगे। ऐसी स्थिति में सर्वप्रथम अपनी रक्षा और बचाव करना चाहिए. निम्न मन्त्र को सात बार पढ़कर अपने चारों ओर रेखा खींचकर या जल छिड़क कर बैठ जायें। और अन्य मन्त्रों का प्रयोग दूसरे लिए करें।

इस मन्त्र के प्रभाव से घर—बाहर, देश परदेश, जंग—पहाड़, श्मशान, कब्रिस्तान कहीं भी रहें, आप पर बिषैले जीव, हिंसक पशु, भूत—प्रेत डाकिनी, शकिनी, बदमाश हत्यारे या किसी प्रकार का तन्त्र,मन्त्र, टोना—टोटका असर नहीं करेगा। यह मन्त्र आपके लिए सुरक्षा कवच बन कर आपकी हर हाल में रक्षा करेगा।

मन्त्र

''ॐ नमो आदेश गुरून की ईश्वरी वाचाअजरी—बजरी में बज्जरी

बांधा दशो दुआर छव्वा और के घालौं तो पलट हनूमन्त और उसी को मारे पहली चौंकी गणपति दूजी चौंकी हनुमंत तीजी चौंकी में भैरों चौथी चौंकी देत रक्षा करन को आवे श्री नरसिंह देव जी शब्द सांचा चले मन्त्र ईश्वरी वाचा'।

साधना विधिः—दीपावली की रात्रि में शिव जी तस्वीर के समक्ष धूप–दूप जगाकर।। माला जप करें। जप समाप्त होने के बाद भगवान शंकर को प्रणाम कर लें। मन्त्र सिद्ध समझे।

प्रयोगि विधिः—रक्षा कवच मन्त्र का प्रयोग स्वयं के लिए तो करें ही साथ ही साथ दूसरों पर भी इसका प्रयोग कर सकते है। उक्त मन्त्र शारीरिक पीड़ा से छटपटाते व्यक्ति पर भी प्रयोग किया जा सकता है। यदि किसी को मूर्च्छा आ जाये या कष्ट से गिर जाये तो इस मन्त्र से 7 बार झाड़ देने से वह व्यक्ति अच्छा हो जाता है और शीघ्र स्वस्थ प्रसन्न हो जाता है।

उक्त साबर मन्त्र का प्रयोग किसी उपद्रव ग्रसित घर को शुद्ध करने में भी किया जाता है। यदि किसी घर को उपद्रवों से अशुभतावों से बचना हो या उपद्रवों से अशुभतावों को मिटाना हो तो उस घर में जितने दरवाजे हों– उन्हें गिनकर, उतने ही लोहे के किल ले लें और काली उर्द के दाने लेकर, मकान के अन्दर वाले कमरे में बैठकर उक्त मन्त्र से लोहे की किल और उर्द के दाने को ग्यारह बार मत्र पढ़ कर अभिमंत्रित कर लें। फिर बारी–बारी से हर कमरे में उर्द दाने फेंकते हुए चौकट पर बाहर से कील ठोक दें। आँगन, छत, बरामदे में केवल उर्द ही फेंकें।

कील ठोकने के बाद उस घर की अशुभता व उपद्रव शान्त हो जायेंगे।

भूत-प्रेत शत्रु बाधा निवारण हेतु श्री हनुमान साबर मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र अत्यन्त ही उपयोगी है। इसे हनुमान जी का साबर मन्त्र के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। इस मन्त्र के प्रयोग को साबर मन्त्र के साधक– "साबरी वीर" को चलाना कहते हैं। यह मन्त्र भूत–प्रेत बाधावों से छुटकारा दिलाया हूँ आप भी करके देखें।

इस साबर मन्त्र की एक विशेषता यह है कि इसके जानकार पर एक साथ 50–60 आदमी आक्रमण करें और यदि साधक उस समय यह मन्त्र पढ़ने लगे तो सारे आदमी को "मंत्र साधक " परास्त कर भगा देता है। ऐसे "साबरी" पर कभी कोई आक्रमण का हिम्मत नहीं करता।

मन्त्र

"अव हनुमान वरा वर्ष को ज्वान
हाथ में लड्डु मुँह में पान
हाऊ मारत आप वावा हनुमान
मेरी भक्ति गुरू की शक्ति
फूरे मन्त्र ईश्वरीय–वाचा।।"

साधना विधिः– उपरोक्त मन्त्र को दीपावली की महानिशा में शिव जी तस्वीर के समक्ष धूप दीप जगाकर, 11 माला जप करके सिद्ध कर लें।

प्रयोग विधिः– 1. इस मन्त्र में 11 बार झाड़ देने की भूत–प्रेत बाधा समाप्त हो जाती है।

2. एक और भूत प्रेत बाधा साबर मन्त्र नीचे लिख रहा हूँ, जिसकी सिद्धि विधि पहले वाली है।

मन्त्र

"वाँधों भूत जहाँ तु उपजो छाड़ों
पर्वत चढ़ाई सर्ग दहेली तुजिभ
झिलमिलाहि हुंकारे हनुमन्त
पचारई भीमा जारि–जारि–जारि
भस्म करे जो चापे सिऊ"।।

सर्प विष निवारक हनुमान साबर मन्त्र

यदि किसी व्यक्ति को सांप ने काट लिया हो और वह मृत्यु के मुख में पहुँचने ही वाला हो, उस परिस्थिति में भी यह मन्त्र द्वारा नीम की पत्तियों की झाड़(गुच्छा) लेकर रोगी का (सर्प विष से पीड़ित व्यक्ति को) शरीर झाड़ देंगें तो सांप का विषम जहर भी उतर जायगा। मंत्र द्वारा सात अथवा 12 बार मंत्रोच्चारण करके पीड़ित व्यक्ति को झाड़े।

मन्त्र

जेहि समय गये राम वनमाहीं
तिनका तहाँ कष्ट अति हो हीं
सिय हरण अरू बाली नाशा
पुनि लागि सखन नाग फाँसा

बिकल हरि देख नाग फाँसा
स्मरण करहिं गरूड़ निज दासा
बिनता नन्दन बसहिं – पहारा
पहुँचे स्मरण ते हि लंका पल पारा
रहे लखन बाँधि जितने सब नागा।
सो गरूड़ देख तुरन्त सब भागा
अमुक अंग विष निर्विस होई जाई।
आदेश श्री रामचन्द्र की दुहाई
आज्ञा विनता नंदन की आन।।

साधना विधिः– सूर्य ग्रहण या चन्द्र ग्रहण जब लगे, तो उस समय से पवित्र स्थान पर कम्बल के आसन पर बैठ कर, धूप–जलाकर उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण ग्रहण समाप्ति तक करते रहें। मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

घर में अक्षय भंडार प्राप्ति हेतु श्री हनुमान साबर मन्त्र

आपके घर में अक्षय धन–धान्य का भंडार भरा रहे, इसके लिए निम्न मन्त्र का उपयोग करें।

मन्त्र

ॐ नमो ईश्वरी चल ब्रह्म रिद्धि सिद्धि
दोनों हमारे साथ भंडार लाभ करो
श्री अन्नपूर्णा ज्वालामुखी चोखा।
एक–एक स्वाहा।।

सिधि–विधिः– इस मन्त्र का जप 11 हजार करें। दीपावली की महानिशा से शुरू करें और देवेत्थान एकादशी तक में पूर्ण कर लें। नित्य जप रात्रि के समय करें और जप करते समय पीली सरसों पात्र में भरकर रख लें और हर माला जपने के बाद उसमें फूंक मारते जाएं। एकादशी की रात्रि में 11 माला उपरोक्त मन्त्र से हवन करें। हवन के पश्चात् उस पीली सरसों को अपने भंडार में धन–धान्य रखने की जगह में मन्त्र पढ़ते हुए डाल दें। प्रति वर्ष यह क्रिया दुहराते रहें। ऐसा करने से घर का भंडार कभी समाप्त नहीं होता।

अण्ड वृद्धि रोग निवारक एवं सर्प को भगाने हेतु हनुमान साबर मन्त्र

अण्डकोष में वृद्धि हो रहा हो तो निम्नलिखित मन्त्र का उपयोग करें।

मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को जैसे को लेहु रामचन्द्र कबूत ओ सई करहु राध बिनु कबूत पवन सूत हनुमंत घाऊ हरहर रावन कूट मिरावन श्रणन अण्ड खेतहि श्रवण अण्ड अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवइ बाँज गर्भहि श्रवई स्त्री पीलहि श्रवई शाप हर हर जम्बीर हर जम्बीर हर–हर–हर।।

साधना विधिः– शिवरात्री से चैत्र नवरात्रे के मध्य रात्रि के समय 21 हजार मन्त्र जप पूर्ण करें। साबर मन्त्र का जप चाहे कोई भी करें, शिवजी के आगे धूप दीप जगाकर ही मंत्र जप करें।

प्रयोग विधिः– मंत्र पढ़कर फूले हुए अण्डकोष को मलें तथा मंत्र से जप अभिमंत्रित कर जल पिएँ तो अण्डकोष बृद्धि रूक कर सामान्य हो जाता है। इस मंत्र को पढ़कर मिट्टी के ढेले में फूंक मारकर, उस ढेले को यदि सांप के बिल के ऊपर रख देगे तो उस बिल से सांप निकलकर भाग जायेगा।

सर्व बाधा निवारक हनुमान साबरी मंत्र

सभी प्रकार के उपद्रव एवं घर परिवार में आयी बाधा निवारण के लिए यह साबर मंत्र बहुत उपयोगी है।

मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरू का धरती में बैठा लोहे का पिंडराख लगाता गुरू गोरख नाथ आवंता जावंता धावंता हांक देत धार–धार–मार शब्द सांचो फुरो वाचा।।

साधना विधिः– इस मंत्र को महानिशा में 5 माला जप करें। तत्पश्चात् 108 बार मंत्र पढ़ते हुए खीर की आहुति अग्नि में डालें। इसके लिए मृग चर्म या काले कम्बल के आसन पर बैठकर ही जप करना चाहिए। मंत्र सिद्ध हो जाने पर किसी के घर में कलह हो, अनजाने उपद्रव हों, अघटित –घटनाएँ घटती हों, किसी के करे–कराये का बुरा प्रभाव पड़ रहा हो तो उनके घर में मृग चर्म या काले कम्बल पर बैठकर , आम, पलाश या पीपल की लकड़ी पर दूध, चावल, चीनी और मेवा में बनी खीर से मंत्र पढ़ते हुए 108 बार

हवन आहुति दें। इससे उसके घर में होने वाले सभी उपद्रव शान्त हो जाते हैं। उपद्रवों की शान्ति हेतु ''सिद्ध यंत्र'' पंडित वाई० एन० झा के कार्यालय से सर्म्पक करके प्राप्त कर भी सफलता हासिल कर सकते हैं।

वशीकरण साबर हनुमान मंत्र

यह वशीकरण हनुमान मंत्र अत्यन्त ही प्रभावशाली है। इसका उपयोग गलत कार्य करने हेतु न करें, वरना इस पाप के जिम्मे वार आप स्वयं होंगे। इसे उचित स्थान पर ही प्रयोग करें।

मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरू का मोहिनी—जगमोहिनी मेरा नाम ऊँचे टीले में बसुं बस करूं प्रजागाम मम मोहुं टाकुर बाग—बाग मोहुं कामनी पंसारी मोहुं महल बैठी रानी बस करूं तब मोहिनी कहाऊँ सत वचन गुरू का।।.

साधना विधिः—उपरोक्त मंत्र को दीपावली की महानिशा में 11 माला जप करें। माला मंत्र पढ़कर हवन सामग्री से हवन करें, यह जप हवन उसका नाम लेते हुए करें जिसे वशीभूत करना है और इसका उपयोग दुराचार की भावना से कदापि न करें।

पीलिया रोग निवारक हनुमान साबर मंत्र

पीलिया रोग कभी—कभी मनुष्य को मृत्यु के मुख में भी पहुंचा देता है। पीड़ित व्यक्ति निम्न मंत्र के प्रयोग से बिल्कुल स्वस्थ हो सकते हैं।

मंत्र

ॐ वीर वैताल असराल नारसिंह खादी तुषादी पीलिया कूँ भिदाती कारै—जारै पीलिया रहे न नेक निशान जो कही रह जाय तो हनुमान की आन मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फूरो। मंत्र ईश्वरो वाचा।।

साधना विधिः—यह मंत्र सूर्य ग्रहण या चन्द्रग्रहण के समय सिद्ध करें। जिस समय ग्रहण प्रारम्भ हो, उस समय हनुमान जी तस्वीर के समक्ष धूप—दीप जगाकर मंत्र जप आरम्भ करें और तब तक जप करते रहें जब तक ग्रहण की समाप्ति न हो जाय। इसके पश्चात् हवन सामग्री से। माला मंत्र जप करते हुए आम की लकड़ी पर आग जलाकर हवन करें। मंत्र सिद्ध हो जायगा।

प्रयोग विधिः—पीलीया रोग से पीड़ित व्यक्ति के सिर पे कांसे की कटोरी में तिल का तेल भरकर उस तेल को कुंशा से चलाते रहें और

मंत्र पढ़ते जावें। मंत्र 7 बार पढ़े। तेल पीला हो जायगा। यह विधि तीन दिन लगातार अपनावें तो रोगी रोग मुक्त हो जायगा।

अपार धन प्राप्त करने हेतु श्री हनुमान साबर मंत्र

जीवन में धन निःसंदेह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, किन्तु धन के साथ सहजता व सरलता की स्थिति तभी निर्मित होती है, जब एक ओर जहां खुले हाथों से व्यय करने की स्थिति हो, तो वहीं निरन्तर किसी न किसी स्त्रोत से जितना खर्च किया है, उसका दो गुणा धनागम भी होता रहे। यह महामंत्र से धन की प्राप्ति भी अपार ढंग से होती है और खर्च करने पर धन का दोगुणा वृद्धि भी होती है।

मंत्र

छिन्ना मस्तक ने महल बनाया काली कारन करम गंवाया तारा आया बैट के बोली यहां रही दुर्गा की टोली तिकटी नाथ कहत सुन गोरी हम गोरख की भाखा बोली।।

साधना विधिः—किसी भी शुक्रवार की रात्रि में यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं। ग्यारह बजे रात्रि में स्नान से पवित्र होकर पीले वस्त्र धारण करें, महालक्ष्मी जी की तस्वीर के समक्ष पीले आसन पर बैठ जायें। माता लक्ष्मी के सिंहासन पर एक कांसे की थाली या प्लेट में– गुरू से प्राप्त किया ''सिद्ध अष्ट गोमती चक्र''रखें। अब धूप और दीप जलावें। तत्पश्चात् 11 माला उपरोक्त मंत्र का जप करें, एक माला मंत्रोच्चारण करते हुए हवन में आहुतियाँ डालें। मंत्र सिद्ध हो जायगा और आपके घर में अपार सम्पत्ति की प्राप्ति होने लगेगी। इस मंत्र का सिद्ध किया यंत्र पंडित वाई०एन०झा के कार्यालय से प्राप्त कर भी लाभान्वित हो सकते हैं।

बवासीर रोग निवारक श्री हनुमान साबर मंत्र

इस मंत्र के प्रयोग से खूनी या बादी दोनों प्रकार के बवासीर रोग जड़ से मिट जाते हैं। इस मंत्र को स्वयं सिद्ध करके, अथवा बवासीर रोग से शीघ्र मुक्त हो सकते हैं।

मंत्र

ॐ काकाकर्त्ता क्रोरी करता ॐ कर्त्ता से होय व रसना प्रकटे स प्रकटे खूनी बादी–बवासीर न होये मंत्र जानक न बतावे द्वादस ब्रह्म हत्या का पाप होय शब्द सांचा पिंडकाया तो हनुमान का मंत्र सांचा फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।।

साधना विधिः—उपरोक्त मंत्र का जप किसी भी शुक्रवार को आरम्भ करें। 11 बजे रात्रि में हनुमान जी तस्वीर के समक्ष धूप दीप जगाकर, लाल कम्बल के आसन पर बैठकर 11 माला जप रोज करें। यह जप एक लाख संख्या में करें। अन्तिम दिन एक माला मंत्र जप करते हुए हवन सामग्री में आम की लकड़ी पर आग जलाकर आहुतियाँ दें। मंत्र सिद्ध हो जायगा।

प्रयोग विधिः—बासी पानी को उपर्युक्त सिद्ध मंत्र को 21 बार अभिमंत्रित कर लें। (21 बार मंत्र को पढ़ते हुए हर बार जल में फूंक डालें) फिर उसी जल को लेकर शोच करने जायें। शौच के बाद अभिमंत्रित जल से गुदा का प्रक्षालन करें अर्थात गुदा को धोएँ। 11 रोज यह कार्य नित्य करने से "बवासीर रोग निवारक सिद्ध यंत्र" को बासी पानी से धोकर, उस जल से गुदा को धोने से भी रोग मिट जाता है।

शत्रुता नाश करने हेतु श्री हनुमान साबर मंत्र

किसी भी व्यक्ति के ज़ीवन में शत्रु की उपस्थिति एक ऐसा अभिशाप होती है, जिसके कारण जीवन की सभी सहजताएँ अपना अर्थ खो देती हैं। इस युग की प्रवृत्तियां इस प्रकार से दूषित हो चलीं है कि भले ही व्यक्ति अपने आप में शान्त हो, सौम्य हो किन्तु उससे अनायास बैर ठानने वालों की कोई कमी नहीं होती।

जीवन में शत्रु की उपस्थिति न रहे, शत्रु स्वयं ही शांत हो जाय, इसके लिए यह साबर मंत्र विलक्षण उपयोगी है, जिसको सिद्ध करते ही शत्रु शत्रुता को भूल स्वयं ही क्षमा याचना के भाव से साधक के सम्मुख अवश्य उपस्थित हो जाता है।

साधना विधिः—यह सिद्धि किसी भी शुक्रवार की रात्रि में कर सकते हैं। 11 बजे रात्रि के बाद स्नान से पवित्र होकर लाल कम्बल के आसन पर बैठ जायें। सामने आम लकड़ी की सिंहासन पर लाल वस्त्र बिछावें। उस पर गुरू से प्राप्त किया—"सिद्ध सिरकारा" ताबें की तश्तरी में रख दें। काली धोती पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठें। सामने मिट्टी या आटे से बनी चौमुखी दीपक और धूप जगावें। फिर एक घंटे तक निम्न मंत्र का जप करें, मंत्र सिद्ध हो जायगा।

मंत्र

असगंध का जोता जोग का तेला गुरू गोरख ने दांव है खेला अछतर बछतर तीर कमंवर तीन मछन्दर तीन कमंवर पांच गुरू का पांचे चेला एक गोरख का यह सब खेला सबद सांचा फूरो मंत्र ईश्वरीय तेरो वाचा।।

दाँत का कीड़ा झाड़ने हेतु श्री हनुमान साबर मंत्र

दाँतों में कीड़े हो जाने से मनुष्य दर्द से बेचैन रहता है। दाँत दर्द से पीड़ित व्यक्ति निम्न मंत्र के प्रयोग से पीड़ा मुक्त हो जाते हैं।

मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरू को वन में व्याई अंजनी जिन जाया हनुमन्त कीड़ा– मकड़ा माकड़ा ए तीनों भस्मन्त गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फूरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

साधना विधिः–दिपावली की अर्द्धरात्रि में यह साधना आरम्भ करें। हनुमान जी तस्वीर या प्रतिमा के समक्ष सरसों तेल का दीपक व धूप जगाकर जप आरम्भ करें। इस मंत्र का 1 लाख मंत्र जप का विधान है। नित्य रात्रि 11 माला जप करें। 1 लाख मंत्र जप समाप्ति वाली रात्रि को माला मंत्रोच्चारण करते हुए हवन सामग्री से आहुतियाँ डालें। हवन आम या पीपल की लकड़ी पर आग जलाकर करें। मंत्र सिद्ध हो जायगा।

प्रयोग विधिः–मंत्र सिद्ध हो जाने पर दांत रोग से पीड़ित व्यक्ति को मुख को नीम के पत्ते से झाड़ देंगे तो दर्द ठीक हो जायगा।

बाँस या कागज की नल की द्वारा मंत्रोच्चारण करके रोगी के मुख में फूंक मारने पर दांत के कीड़े मुख से झड़ जाते हैं।

सिर पीड़ा दूर करने हेतु श्री हनुमान साबर मंत्र

लंका में बैट के माथ हिलावें हनुमान सोदेखि के राक्षसगण पराय तुरन्त, बैठी सीता देवी अशोक वन में देखि हनुमान को आनन्द भई मन में, गई ऊर विषाद देवी स्थिर दरसाय, अमुक के सिर व्यथा पराय, अमुक के नहीं कुछ पीर नहीं कुछ भार, आदेश कामाख्या हरिदासी चण्डी की दोहाई।।

साधना विधिः–किसी भी मंगलवार की रात्रि में (अर्द्धरात्रि) स्नानादि से पवित्र होकर, हनुमान जी प्रतिमा या तस्वीर के समक्ष सरसों तेल का दीपक और अगर बत्तियाँ जलावें। रूद्राक्ष की माला से उपरोक्त मंत्र का 11 माला जप करें। यह क्रिया 11 मंगलवार को करें। मंत्र सिद्ध हो जायगा।

प्रयोग विधिः–जिसके सिर में पीड़ा हो, उसे दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दें। सिर हाथ से पकड़कर मंत्र पढ़कर झाड़े अर्थात मंत्र

पढ़ने के बाद सिर में फूंक मारें। किसी भी मंत्र में "अमुक" के स्थान पर रोगी का नाम लिया करें। सिर की पीड़ा दूर हो जायगी।

नेत्र पीड़ा निवारक श्री हनुमान साबर मंत्र

ॐ नमो बने बिआई बानरी जहाँ जहाँ हनुमन्त आँखि पीड़ा कषावरि गिहिया थनै लाई चरिऊ जाई भस्मन्त, गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फूरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

साधना विधिः—किसी भी मंगलवार की रात्रि से दूसरे मंगलवार की रात्रि तक, नित्य रात्रि 5 माला जप, हनुमान जी प्रतिमा या तस्वीर के समक्ष धूप व देसी घी का दीप जगाकर यह साधना सम्पन्न करें। अन्तिम रात्रि में मंत्रोच्चारण करते हुए। माला मंत्र से हवन करें। मंत्र सिद्ध हो जायगा।

प्रयोग विधिः—नेत्र रोग से पीड़ित व्यक्ति के दक्षिण मुख बैठा कर पीड़ित आँख पर हाथ फेरते हुए, मंत्र पढ़—पढ़ कर सात बार फूंक दें। यह क्रिया लगातार 7 दिन करें तो नेत्र पीड़ा दूर हो जायगी।

नोटः—उपरोक्त सिद्धि विधि के अनुसार ही— कान पीड़ा निवारक निम्न मंत्र का भी सिद्धि कर सकते हैं। मंत्र सिद्ध होने के बाद कान रोग से पीड़ित व्यक्ति को निम्न मंत्र पढ़ते हुए सात बार कान में फूंक दें। यह क्रिया सात दिन लगातार करने से कान का रोग मिट जाता है।

कान की पीड़ा दूर करने हेतु श्री हनुमान साबर मंत्र

बनरा गाँठि वानरी डाटें हनुमान कंठ,
बिलारी बाधी थनैली कर्णमूल सम जाई,
श्री रामचन्द्र जी की बानी—पानी पथ हो जाई।।

स्त्रियों की स्तन पीड़ा निवारक श्री हनुमान साबर मंत्र

ॐ नमो में जाई अंजनी में जिन जाया हनुमन्त सज्जा खधा दाँकिया सब हो गया भस्मन्त।।

साधना विधिः—सूर्य—ग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण के समय उपरोक्त मंत्र की सिद्धि करें। ग्रहण आरम्भ होते ही हनुमान जी प्रतिमा या

तस्वीर के समक्ष धूप और सरसों तेल का दीपक जगाकर लाल आसन पर, लाल वस्त्र धारण कर बैठ जायें और मंत्रोच्चारण तब तक करते रहें जब तक ग्रहण समाप्त न हो जाय। मंत्र सिद्ध हो जायगा।

प्रयोग विधिः– मंत्र सिद्ध होने के बाद, स्तन पीड़ा से पीड़ित नारी को मंत्र पढ़कर, पीड़ीत स्तन पर कण्डे की राख फैंकें। यह क्रिया सात बार करें और लगातार सात दिन करेंगे तो रोगिणी नारी स्वस्थ हो जायगी।

समाज में लोकप्रियता व सम्मान प्राप्ति हेतु श्री हनुमान साबर मंत्र

लोकप्रियता व सम्मान प्राप्ति की स्थिति एक ऐसी दशा होती है, जो न केवल व्यक्ति के स्वाभिमान को संतुष्ट कर उसकी क्रियाशीलता में वृद्धि करती है, वरन् इसी माध्यम से व्यक्ति व्यर्थ के अनेक द्वंदों से मुक्ति प्राप्त करता है तभी अपने जीवनं को सहज, निष्कंटक और तनाव रहित बनाते हुए अनेक महत्वपूर्ण लक्ष्यों की ओर अग्रसर हो सकता है। इसके लिए जो आवश्यक होता है वह यही होता है कि व्यक्ति में किसी दैवीय आभा व चैतन्य का भी समावेश हो और साधनाएँ सभी अर्थों में दैवीय चेतना का ही रूप होती हैं।

मंत्र

मोह कम मोह कम कहां से आया, पान फूल संदेशा लाया, किसको रोली किसको चन्दन, किसको फूल बतासा अंजन, काल को भैरू जोगनि छोड़ू, काल को मोड़ू मुख को जोड़ू, सत्य वचन यह गुरू कह बोलूँ।।

प्रयोग व साधना विधिः– इस प्रयोग को साधक तंत्र माह के किसी भी दिवस को यह किसी भी शुक्रवार की रात्रि में सम्पन्न कर सकता है।

11 बजे रात्रि के बाद साधक स्नान से पवित्र होकर पीले रंग की धोती पहन कर, पीले रंग के आसन पर बैठ जायं। सामने हनुमान जी तस्वीर या प्रतीमा के समक्ष धूप और तिल तेल का दीपक जलावें। तांबे की तश्तरी में गुरू से प्राप्त किया– "सिद्ध पारस मुद्रिका"– हनुमान जी सिंहासन पर रखें। इसके पश्चात् उपरोक्त मंत्र का 1 घंटा तक जप करें। इस प्रयोग में गुड़ का प्रसाद भी हनुमान जी सिंहासन पर रखें। मंत्र जप करते समय अपनी दृष्टि "पारस मुद्रिका" पर केन्द्रित रखें। मंत्र सिद्ध हो जायगा। मुद्रिका दाहिने हाथ की बड़ी ऊँगली में धारण कर लें। मुद्रिका धारण करने के पश्चात् आप अनेकानेक व्यक्तियों से यश, मान, सम्मान व प्रतीष्ठा की प्राप्ति करेंगे। धनागम के अनेकों साधन सामने आयेंगे और आप हर कार्यों में सफलता हासिल करेंगे।

धरन ठिकाने लाने हेतु श्री हनुमान साबर मंत्र

पेट में यदि धरन पड़ जाय तो व्यक्ति कितने भी दवाईयाँ खाले परन्तु रोग ठीक नहीं होता है। ऐसी अवस्था में निम्न मंत्र का उपयोग कर धरन ठिकाने लाकर, रोगी को तुरन्त ठीक कर सकते हैं।

मंत्र

ॐ नमो नाड़ी नाड़ी नौ सौ नाड़ी बहत्तर कोटा चले अगाड़ी डिगे न कोटा चले न नाड़ी, रक्षा करे जती हनुमन्त की आन मेरी भक्ति गुरू की शक्ति, फूरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

साधना विधिः–किसी भी शुक्रवार की रात्रि में (तंत्र माह में) शंकर जी या हनुमान जी प्रतिमा अथवा तस्वीर के समक्ष धूप सरसों तेल का दीप जगाकर, हनुमान जी को गुड़ और केले का प्रसाद चढ़ाकर, लाल आसन पर लाल वस्त्र धारण करके बैठ जावें। फिर रूद्राक्ष की माला से 5 माला उपरोक्त मंत्र का जप करें। यह जप नित्य रात्रि अगले शुक्रवार तक करें। मंत्र सिद्ध हो जायगा।

प्रयोग विधिः–एक धागे में नौ गांठ लगावें। हर गांठ लगाते समय उपरोक्त सिद्ध मंत्र पढ़कर फूंक मारें। प्रति गाँठ पर नौ-नौ बार मंत्र पढ़कर फूंक मारे। फिर उसे छल्ले की भाँति बनाकर रोगी के पेट पर रख दें, फिर पेट पर नौ बार मंत्र पढ़कर फूंक मारें। धरन अपने आप उसी वक्त ठिकाने पर आ जायगा और व्यक्ति पीड़ा मुक्त हो जायेगा।

प्रेम व मित्रता कायम करने हेतु श्री हनुमान साबर मंत्र

प्रेम स्वयं में हृदय पक्ष का एक प्रस्फुटन होता है। जिसने जीवन में कभी प्रेम ही न किया हो, उसका न तो अन्तर्मन खुल सकता है और न कभी उसमें उल्लास या उमंग की ताजी स्वच्छ शीतल वायु का प्रवेश हो सकता है, किन्तु यह स्थिति तब दुःखद हो जाती है, जब प्रेमी व प्रेमिका के मध्य किसी कारण से कोई विलगाव की स्थिति आ जाय अथवा संदेह के कारण किसी गलतफहमी का कोई बीज पड़ जाए या किसी अन्य कारण से प्रेम में सफलता न मिलकर सम्बन्ध टूटने की स्थिति आ गई है।

जीवन में दुर्भाग्य वश ऐसी कोई स्थिति आ जाए तो निम्न मंत्र का प्रयोग कर प्रेम में सफलता हासिल करें, क्योंकि जो प्रेम में हार जाता है वह सारा जीवन ही हार जाता है।

मंत्र

सखी सनमन सखी सलवन, सखी हुश्न मेहमान, दीवान की चिलमन, पांच पख में यार की सूरत यार समंदर शाह की सीरत।।

साधना विधि व प्रयोग :– उपरोक्त मंत्र को – मंत्र माह के किसी भी दिवस की रात्रि में, स्नानादि से पवित्र होकर, गुलाबी वस्त्र पहन कर, हनुमान जी तस्वीर के समक्ष हरे रंग के आसन पर बैठे, दोनों हथेलियों में हीना का इत्र लेकर रूद्राक्ष की माला को रगड़े और उसे गले में पहन लें। धूप– व सरसों तेल का दीप जगावें। इसके पश्चात् उपरोक्त मंत्र का दीप जगावें। इसके पश्चात् उपरोक्त मंत्र का ग्यारह माला जप करें। मंत्र सिद्ध हो जायगा।

अगले दिन माला को हरे रंग के रेशमी वस्त्र में लपेट कर कुछ मिठाई व पुष्प के साथ चुपचाप किसी मजार पर पूरे सम्मान के साथ भेंट चढ़ा दें तो शीघ्र ही प्रेम पक्ष में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेंगे।

काँख के फोड़े निवारक श्री हनुमान साबर मंत्र

काँख में यदि किसी को फोड़ा हो जाता है, तो उसे, रात–दिन दर्द से कराहते रहना पड़ता है। ऐसी अवस्था में निम्न मंत्रों का प्रयोग चमत्कारिक लाभ देता है।

मंत्र

ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहाँ बैठा हनुमन्ता शाई, पके न फूँट चले न पीड़ा रक्षा करे हनुमन्त वीर, दूहाई गोरख नाथ की शब्द सांचा पिण्ड काचा फूरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गूरू को।।

साधना विधिः–किसी भी शुक्रवार की रात्रि में, स्नानादि से पवित्र होकर, हनुमान जी तस्वीर के समक्ष, लाल वस्त्र पहन कर लाल आसन पर बैठे। धूप और दीप जगावें। हनुमान जी को गुड़ का प्रसाद चढ़ावें और फिर रूद्राक्षं की माला से 11 माला मंत्र जप करें। मंत्र सिद्ध हो जायगा।

प्रयोग विधिः–काँख फोड़े से पीड़ित व्यक्ति को मंत्रोच्चारण करते हुए नीम की डाली से 21 बार झाड़ दें। तत्पश्चात् उस जगह की मिट्टी काँख में लगा दें। फोड़े ठीक हो जायेंगें।

आधा शीशी (अधकपाड़ी) दर्द निवारक श्री हनुमान साबर मंत्र

आधे सिर का दर्द हो तो दवाई भी कुछ काम नहीं करता और

रोगी सिर पीड़ा से बेचैन रहा करता है। ऐसी स्थिति में निम्न मंत्र का प्रयोग करें:-

मंत्र

बन में ब्याई बानरी उछल वृक्ष पै जाये,
कूद-कूद शाखानरी कच्चे वन फल खाय,
आधा तोड़े आधा फोड़े आधा देह गिराय,
हंकारत हनुमान जी आधा शीशी जाये।।

साधना विधि:—राम नवमी की रात्रि में हनुमान जी तस्वीर के समक्ष धूप व सरसों तेल का दीप जगावें। गुड़ व केले का प्रसाद चढ़ावें, सिंहासन पर हनुमान जी को पुष्प चढ़ावें, लाल आसन पर लाल वस्त्र धारण कर बैठकर, उपरोक्त मंत्र का 11 माला जप करें। मंत्र सिद्ध हो जायगा।

प्रयोग विधि:—मंत्र सिद्ध होने के बाद आधा शीशी रोग से पीड़ित व्यक्ति के सिर को सात बार मंत्र उच्चारण कर हाथ से सिर को झाड़िये और हर बार मंत्र समाप्ति के अंत में उसके सिर पें फूंक मारिये। यह प्रयोग सात दिन लगातार करने से अधकपाड़ी दर्द मिट जाता है।

(श्री हनुमान यंत्र-मंत्र खण्ड समाप्त)

श्री हनुमान भक्ति गीत खण्ड

मंगलवार को महावीर से जो भी नेह लगाय

मंगलवार को महावीर से,
जो भी नेह लगाय।
कटे अमंगल जीवन भक्तो,
मंगलमय हो जाय।।
बोलो महावीर की जय,
बोलो महावीर की जय।।1।।

जो पढ़ते हैं पवित्र होकर,
नित हनुमान चालीसा।
शनि की दृष्टि कभी न पड़ती,
हर्षित रहे हमेशा।।
बजरंग वाण पढ़ने से होते,
सीता राम सहाय।
कटे अमंगल जीवन भक्तो,
मंगलमय हो जाय।।
बोलो महावीर की जय,
बोलो महावीर की जय।।2।।

चैत्र शुक्ल तिथि नवमी को,
जो भी ध्वजा–चढ़ाते।
राम भक्त हनुमान से भक्तो,
सारे सुख वो पाते।।
हनुमत को सिन्दूर अर्पण से,
बांझ गोद भर जाय।
कटे अमंगल जीवन भक्तो,
मंगलमय हो जाय।।
बोलो महावीर की जय,
बोलो महावीर की जय।।3।।

मंगलवार को महावीर को,
जो प्रसाद चढ़ावे।

विविध खजाना लक्ष्मी माता,
उनके घर बरसावें।।
सरस्वती माँ उनके गृह में,
बीणा रोज बजाय।
कटे अमंगल जीवन भक्तो,
मंगलमय हो जाय,
बोलो महावीर की जय।
बोलो महावीर की जय।।4।।

पवन पुत्र हनुमान की महिमा सुनते जो हैं ध्यान धरी

पवन पुत्र हनुमान की महिमा,
सुनते जो हैं ध्यान धरी।
उन पर भक्तो महावीर की,
कृपा होती बहुत बड़ी।।
जय–जय महावीर, जय जय हनुमान।
जय–जय महावीर, जय जय हनुमान।।1।।

पुंञ्जिकस्थला इन्द्र अप्सरा,
सुन्दरता की शान थी।
छेड़छाड़ व चंचलता में,
हँसमुख बड़ी महान थी।।
बानरी जैसी चंचलता से,
ऋषि दुर्वासा को छेड़ दिया।
बानरी हो जा क्रोधित होकर,
ऋषिवर ने अभिशाप दिया।।
जय–जय महावीर, जय जय हनुमान।
जय–जय महावीर, जय जय हनुमान।।2।।

बानरराज कुंजर जी की,
पुत्री बनकर जन्म लिए।
महामनस्वी कुञ्जर जी,
अंञ्जना कुमारी नाम दिए।।
शुभ विवाह का रस्म अदा,
कपिराज केशरी संग किए।

सन्तां पाने की इच्छा से,
वर्षों जिए आस लिए।।
जय-जय महावीर, जय-जय हनुमान।
जय-जय महावीर, जय-जय हनुमान।।3।।

पुत्र मिले शिव-शंकर जैसे,
लगी अंञ्जना तप क़रने।
कठिन तपस्या पे हर्षित हो,
आए शिव जी वर देने।।
बोले शिव जी रूद्र एकादस,
तेरे कोख में आएगा।
अजर-अमर वो पुत्र तुम्हारा,
शंकर सुवन कहाएगा।।
जय-जय महावीर, जय-जय हनुमान।
जय-जय-महावीर, जय-जय हनुमान।।4।।

विष्णु के मोहिनी रूप पे,
शम्भू तब स्खलित हुए।
पवन देव के हाथों शिव जी,
वीर्य तेजस्वी चलित किए।।
बोले शम्भु पवन देव से,
काम करो मेरे वास्ते।
डाल दो अमृतमय ये वीर्य,
अंजना कर्ण के रास्ते।।
जय-जय महावीर, जय-जय हनुमान।
जय-जय महावीर, जय-जय हनुमान।।5।।

शिव वीर्य अंञ्जना कानों में,
श्री पवन देव उतार दिए।
जिनसे तेजस्वी बलशाली,
हनुमान अवतार लिए।।
शंकर सुवन केशरी नंदन,
पवन पुत्र कपि कहलाएं।
सुनता जो तूफान ये महिमा,
जन्म-जन्म वो तर जाए।।
जय-जय महावीर, जय-जय हनुमान।
जय जय महावीर, जय-जय हनुमान।।6।।

शक्ति तेरी महान पवन सुत शक्ति तेरी महान

शक्ति तेरी महान पवन सुत,
शक्ति तेरी महान।
सर्वदेव मुनि मानव करते,
तेरो ही गुणगान।।
पवन सुत शक्ति तेरी महान।
शक्ति तेरी महान पवनसुत,
शक्ति तेरी महान।।1।।
सूर्य देव व नारद जी को,
अपना गुरू बनाए।
राहु को मुट्ठी में दबाकर,
तूने है तड़पाए।।
शनि को तड़पाए बजंरगी,
अपनी पूंछ से बांध।
पवन सुत शक्ति तेरी महान,
शक्ति तेरी महान पवन सुत,
शक्ति तेरी महान।।2।।

बालि क्रोध से सुग्रीव जी को,
तूं ही सदा बचाए।
तेरे बल से हे बजरंगी,
मृत्यु भी डर जाए।।
महादेव ने तुझको स्वामी,
दिए अमरता दान।
पवन सुत शक्ति तेरी महान।।
शक्ति तेरी महान पवनसुत,
शक्ति तेरी महान।।3।।

सृष्टि में सारे भक्तों का,
तूं सम्राट कहाए।
भक्तों में भगवान हैं बसते,
सीना फाड़ दिखाएं।।
तेरे गुण की गाथा गाए,.
नित ही सीता राम।
पवन सुत शक्ति तेरी महान।।
शक्ति तेरी महान पवन सुत,
शक्ति तेरी महान।।4।।

जो भी प्राणी केशरी नंदन,
तुझसे नेह लगाए।
उनके गृह में नवग्रहों का,
हाथ जोड़ –''तूफान''।
पवन सुत शक्ति तेरी महान।।
शक्ति तेरी महान पवन सुत,
शक्ति तेरी महान ।।5।।

शक्ति के सम्राट महावीर-सागर लांघे एक छलांग

शक्ति के सम्राट महावीर,
सागर लांघे एक छलांग।
जय हनुमान जै जै हनुमान,
जय हनुमान जै जै हनुमान।।1।।

लंका जाते राहों में,
दानवं को पटक पटक मारे।
बलशाली सिंहिका दानवी,
पल में ही तूं संहारे।।
देवी लंकिनी मर्दन करके,
पहुंच गए तूं लंका धाम।
जय हनुमान जै जै हनुमान,
जय हनुमान जै जै हनुमान।।2।।

भक्त विभीषण से मिलके,
सीता की पता लगाए।
पहुंचे शीघ्र अशोक वाटिका,
सीता की सुधि पाए।।
क्षण में उजाड़े अशोक वाटिका,
कितने दानव किए हनन।
जय हनुमान जै जै हनुमान,
जय हनुमान जै जै हनुमान।।3।।
भेजे फिर कपिदेव से लड़ने,
रावण विशाल सेना।
अक्षय कुमार-जम्बू माली,
का तूं फाड़े सीना।।

इन्द्रजीत बलशाली को भी,
पकड़ मरोड़े तू गर्दन।
जय हनुमान जै जै हनुमान,
जय हनुमान जै जै हनुमान।।4।।

इन्द्रजीत ने जब कपि तेरी,
पूंछ में आग लगाएं।
सोने की लंका को तूने,
क्षण में खाक बनाए।।
महल अटारी तोड़ तोड़ के,
धरा गिराए धड़म–धड़ाम।
जय हनुमान जै जै हनुमान,
जय हनुमान जै जै हनुमान।।5।।

बिनय करूँ बजरंगी बाबा जीवन मेरा संवार

विनय करूँ बजरंगी बाबा,
जीवन मेरा संवार।
बाबा तार–तार–तार,
बाबा तार–तार–तार।।1।।

बाधा से कह दो बजरंगी,
सीने न लिपटाए।
कहो निराशा से जो हमसे,
प्रीति नहीं लगाएं।।
दिल से कहदो दरिद्रता से,
करे न हमसे प्यार।
बाबा तार–तार–तार,
हो बाबा तार–तार–तार।।2।।

दारूण दुख ने केशरी नंदन,
जियरा मेरा जलाए।
डूबा गम के सागर दिल की,
ज्योती बुझती जाए।।
चिन्ता ने नित ही लटकाई,
गर्दन पे तलवार।
बाबा तार–तार–तार,
हो बाबा तार–तार–तार ।।3।।

लक्ष्मी और सरस्वती माता,
मेरे घर बस जायें।
चरणों में ये दास पड़ा है,

इतनी दया दिखाएँ।।
उल्झन से कहदो बजंरगी,
करे नहीं लाचार।
बाबा तार–तार–तार,
हो बाबा तार–तार–तार।।2।।

तुम बिनु जग में वायुनंदन,
और न कोई मेरा।
अंधकार में जीवन मेरा,
मांगू नया सवेरा।।
अपने प्रिय तूफान का दाता,
कर दो जी उद्धार।
बाबा तार–तार–तार,
हो बाबा तार–तार–तार।।5।।

श्री हनुमान जी की आरती

आरती उतारूँ तेरी, अंजनी के लाल।
हे केशरी के नंदन, महिमा तेरी विशाल।।
आरती उतारूँ तेरी, अंजनी के लाल।।1।।

रोम रोम में बसाए, तूने श्री राम।
तुमसे बड़ा भक्त, चारो युग में न महान।।
तुझे पाके रघुवर जी, हो गए निहाल।
आरती उतारूँ तेरी, अंजनी के लाल।।2।।

एकादश अंश, शिव के अवतार हैं।
भक्तों को दिल से लगा, करते प्यार हैं।।
तुमसे डरे भूत–प्रेत, डरे तुमसे काल।
आरती उतारू तेरी, अंजनी के लाल।।3।।

रक्षा करे सेवकों का, हाथ ले गदा।
दुख दरिद्र घर से कपि, कर दें अलविदा।।
शक्ति तेरी कपीश्वर, जग में बेमिशाल।
आरती उतारूँ तेरी, अंजनी के लाल।।4।।

दीन दुखी हूँ में, [illegible] आसरा तेरा।
खाली झोली भरें, नैन अश्रु से भरा।।
सबपे दृष्टि डाली, आज हम पे दृष्टि डाल।
आरती उतारूँ तेरी, अंजनी के लाल।।5।।

आरती श्री हनुमान जी की

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर कांपे। रोग–दोष जाके निकट न झांके।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे पीरा रघुनाथ पठाए। लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवन सुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सीता रामजी के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरणी में। लाये संजीवन प्राण उबारे।।
पैटि पाताल तोरी यमकातुर। अहिरावण के भुजा उखारे।।
बाई भुजा असुर संहारे। दांई भुजा सब संत उबारें।।
सुन नर मुनि जन आरती उतारें। जय जय जय हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर की बाती। आरती करत अंजनी माई।।
जो हनुमानजी की आरती गावे। बसि बैकुन्ठ परमपद पावे।।
लंक विध्वंस किये रघुराई। तुलसीदास प्रभु कीर्ति गाई।।
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।

प्रकाशक : 0181-3251696

महामाया पब्लिकेशन्स

नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर-8

2011